(राजस्थान के इतिहास, संस्कृति और आधुनिक प्रगति का विस्तृत दिग्दर्शन कराने वाली पुस्तक)

राजस्थान

कल आज और कल

[राजस्थान प्रशासनिक एवं अधीनस्थ सेवा परीक्षा के लिए नए सिलेबस के अनुसार]

लेखक :
विश्वास कुमार
वरिष्ठ पत्रकार
(राजस्थान पत्रिका)

प्रकाशक :
अरविन्द बुक हाउस
प्रेम प्रकाश के सामने, चौड़ा रास्ता, जयपुर-302003

दो शब्द

राजस्थान का अपना अनूठा इतिहास रहा है। देश की पश्चिमी सीमा के प्रहरी राजस्थान ने विदेशी आततायियों का भी डटकर सामना किया है वहीं यहा की भूमि कला और संस्कृति से भी पगी रही है। वीर प्रसूता भूमि राजस्थान ने अनेक ऐसे वीर पैदा किये हैं यथा महाराणा प्रताप, दुर्गादास राठौड, पृथ्वीराज चौहान, राणा सांगा, हम्मीर, कुम्भा आदि जिन्होंने अपने जीते जी विदेशियो की अधीनता स्वीकार नही की वे टूट गये पर झुके नही। इनकी शौर्य गाथाएं आज भी देश के इतिहास के सुनहरी पृष्ठो पर अंकित हैं और रहेगी तथा आने वाली पीढियो का मार्गदर्शन करती रहेगी।

राजस्थान वीरो की भूमि रहा है तो यहाँ महाकवि माघ, बिहारी भी हुए हैं, मीरा की जन्म भूमि भी यही रही है। साहित्य और संस्कृति मे भी यह राज्य पीछे नहीं रहा। राजस्थानी भाषा का यहा प्रचुर भण्डार है तो भक्ति साहित्य भी खूब रचा गया।

अंग्रेजो ने देश छोड़ा तो देश के साथ ही राजस्थान भी विकास के पथ पर अग्रसर हो चला। आज राज्य मे औद्योगीकरण पूरे जोर शोर से हो रहा है। देश की महत्वाकाक्षी सिंचाई योजना राजस्थान नहर तेजी से पूरी होती हुई जैसलमेर के थार रेगिस्तान की भूमि को सींचने के लिये आकुल हो रही है। चालीस प्रतिशत से अधिक गांव बिजली से आलोकित हो चुके हैं। अन्न उत्पादन मे राजस्थान आत्मनिर्भर हो गया है वही खनिज सम्पदा का अथाह भण्डार यहां की भूमि के गर्भ मे छिपा है जिसका दोहन किया जा रहा है। विकास की ओर तेजी से बढ़ते राजस्थान का भविष्य अति उज्जवल है। इस सारी जानकारी को इस छोटी सी पुस्तक मे देने का प्रयास किया गया है।

—लेखक

अनुक्रमणिका

5. राजस्थान की सभ्यता व संस्कृति

राजस्थान साहित्य और कला पृ ७२

6. आज का राजस्थान

राजस्थान का भौगोलिक परिवेश

राजस्थान 23 रियासतो को मिलाकर बनाया गया राज्य । भारत के पश्चिमोत्तर भाग मे स्थित यह राज्य क्षेत्रफल की दृष्टि से देश मे दूसरा बडा राज्य है। मध्यप्रदेश के बाद इसी का नम्बर आता है तथा ब्रिटेन के क्षेत्रफल से बडा है। राजस्थान राज्य का पूर्ण गठन आजादी के 9 वर्षों के बाद उस समय पूरा हुआ जब एक नवम्बर 1956 को अजमेर का राजस्थान राज्य मे विलय हुआ।

राजस्थान अपने आप मे एक ऐसा सम्पूर्ण प्रदेश है, जहा रेगिस्तान, पठारी, मैदानी, सभी तरह का भू-भाग मौजुद है। इसका अधिकाश भाग रेतीले टीबो से घिरा हुआ है वही अरावली पर्वत मालाएं भी इस तरह फैली हुई है कि इस बढते रेगिस्तान को रोक सके। बासवाडा, डूगरपुर से लेकर झालावाड जिले तक बहुत बडी भूमि सघन वनो से भी आच्छादित इसी प्रदेश मे नजर आजायेगी।

भौगोलिक स्थिति—

राजस्थान देश की पश्चिमी उत्तरी सीमा का सजग प्रहरी है। इसकी पश्चिमी सीमा पाकिस्तान से लगी हुई है और उत्तर मे पजाब व हरियाणा, पूर्व म उत्तरप्रदेश, दक्षिण मे गुजरात और मध्यप्रदेश राज्य है। पाकिस्तान से इसकी सीमा 450 मील लम्बी फैली हुई है। पूरे राज्य का क्षेत्रफल 3,42,239 वग किलोमीटर है। क्षेत्रफल की दृष्टि से यह भारत के कुल क्षेत्रफल का 10 / है। यह राज्य 23 3 उत्तरी अक्षाश से लेकर 30 12 उत्तरी अक्षाश के मध्य तक फैला हुआ है। कर्क रेखा इसके दक्षिणी हिस्से को छूती हुई गुजरती है। पूरा भूभाग पूव मे 78 17 पूर्वी देशान्तर से पश्चिम मे 69 30 पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है।

जनसख्या—

एक मार्च, 1981 के सूर्योदय के समय राजस्थान की जनसख्या 3,41 ,02, 912, हो गई थी। इसम से 1,77,49,282 पुरुष व 1,63,53,6 0 स्त्रिया हैं। इस प्रकार सन् 1971-81 के दशक मे राज्य की जनसख्या म 83 लाख से अधिक की वृद्धि हुई। सन् 1971 मे राजस्थान की जनसख्या 2,57,65,806 थी। गत दस वर्षों मे राज्य की आबादी म 32 36 प्रतिशत की वृद्धि हुई जबकि गत दशक (1961-71) मे जनसख्या वृद्धि की दर 27 83 प्रतिशत थी।

अन्य राज्यो से तुलना—

राजस्थान मे देश की कुल जनसख्या का लगभग 5 प्रतिशत भाग निवास करता है। आबादी की दृष्टि से राजस्थान का देश मे नौवा स्थान है जबकि

1961 व 1971 की जनगणना के समय इसका दसवां स्थान था। देश की कुल जनसंख्या के अनुपात म जिन राज्यो की जनसंख्या का प्रतिशत राजस्थान स अधिक है उनका प्रतिशत वार ब्यौरा निम्न प्रकार है

उत्तरप्रदेश 16 21, बिहार 10 21, महाराष्ट्र 9 17, पश्चिम 7 97, आन्ध्रप्रदेश 7 81, मध्यप्रदेश 7 62, तामिलनाडु 7 06, और कर्नाटक 5 42।

सन् 1971–81 के दशक म राज्य की कुल जनसंख्या वृद्धि 32 36 प्रतिशत रही। सिक्किम 50 44 नागालैण्ड 49 73, आसाम 36 09, मणिपुर 33 65 और त्रिपुरा 32 37, ऐसे पाच राज्य है, जिनकी जनसख्या वृद्धि की दर राजस्थान राज्य स अधिक है। उल्लेखनीय है कि 1971 में भी इन सभी राज्यो की जनसख्या वृद्धि की दर राजस्थान से अधिक थी।

जनसख्या के घनत्व की दृष्टि से केरल अब भी देश म सबसे अग्रणी है। नवीनतम आकडो के अनुसार केरल म जनसख्या का घनत्व 654 व्यक्ति प्रतिवर्ग किलोमीटर है।

केरल म जनसख्या का घनत्व 654 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है। आसाम, बिहार, हरियाणा, केरल, पजाब, तामिलनाडु, उत्तरप्रदेश व पश्चिमीबगाल ऐसे राज्य हैं जिनम जनसख्या का घनत्व सम्पूर्ण देश के औसत [208 व्यक्ति प्रतिवर्ग किलोमीटर] से अधिक पाया गया है। राजस्थान म प्रतिवर्ग किलोमीटर मे 100 व्यक्ति रहते है तथा प्रत्येक 1000 पुरुषो के पीछे 921 स्त्रिया है।

जिलों की स्थिति—

जनगणना 1981 के अनुसार राज्य मे सबसे अधिक आबादी जयपुर जिले की थी। इस जिले की जनसख्या 34 06 लाख थी जो कि राज्य की कुल जनसख्या के 10 प्रतिशत से कुछ ही कम है। आबादी की दृष्टि से जैसलमेर जिले का राज्य मे आखरी स्थान है। इस जिले की आबादी लगभग 2 39 लाख से कुछ हीअधिक है जो राज्य की जनसख्या का केवल 0 7 प्रतिशत है। जयपुर जिले के बाद उदयपुर [23 51 लाख] गगानगर [20 14 लाख] और भरतपुर [18 79लाख] जिलो का स्थान आता है जबकि चार जिला ने आबादी की दृष्टि से 1971 की अपेक्षाकृत उच्चत्तर श्रेणी मे प्रवेश किया है पन्द्रह जिलो की स्थिति 1971 के यथावत, ही रही है। भरतपुर सवाई माधोपुर अजमेर टोक नागौर भीलवाडा और कोटा जिले नवीनतम सूची मे अपने पूर्व स्थान से नीचे आ गय है।

जनसख्या वृद्धि दर—

गत दशक की तुलना म 1971–81 के दशक म राजस्थान की जनसख्या वृद्धि की दर मे महत्वपूर्ण बढत हुई है जो 32 36 प्रतिशत है जबकि पिछले दशक (1961–71) म यह वृद्धि दर 27 83 प्रतिशत ही थी। यह एक रोचक तथ्य है कि 1901 की जनगणना के बाद यह वृद्धि सर्वाधिक है।

जनसंख्या का घनत्व—

राज्य मे जनसंख्या का घनत्व 1971 के 75 व्यक्ति प्रतिवर्ग किलोमीटर से बढकर 1981 मे 100 हो गया। वर्तमान दशक मे 25 व्यक्ति प्रतिवर्ग किलोमीटर की वृद्धि गत दशक (1961–71) की अपेक्षाकृत दुगुनी है। गत दशक मे भरतपुर व इस दशक मे जयपुर जिले का जनसंख्या घनत्व सर्वाधिक रहा है जैसलमेर जिले का स्थान घनत्व की दृष्टि से राज्य मे पूर्व की भाति निम्नतर रहा हालाकि उसके घनत्व मे पिछले दशक के 4 के स्थान पर अब 6 व्यक्ति हो गया।

स्त्री पुरुष अनुपात—

स्त्री–पुरुष अनुपात का तात्पर्य जनसंख्या मे प्रति एक हजार पुरुषो के पीछे स्त्रियो की संख्या से है। राज्य मे एक हजार पुरुषो के अनुपात मे 921 स्त्रिया है, जो संख्या 1971 मे 911 थी। यह ध्यान देने योग्य है कि अकेले डूंगरपुर के आदिवासी जिले मे यह अनुपात स्त्रियो के पक्ष मे यथावत रहा है। यहा 1971 मे प्रति हजार पुरुषो की तुलना मे स्त्रियो का अनुपात 1015 था जो अब बढकर 1045 हो गया। यह भी उल्लेखनीय तथ्य है कि 27 जिलो मे से 23 जिलो मे स्त्रियो के अनुपात मे सुधार हुआ है।

एक लाख से अधिक आबादी वाले नगर—

1981 की जनगणना के अनुसार राज्य मे अब एक लाख से अधिक आबादी वाले ग्यारह नगरीय क्षेत्र है, जिन्हे शहर कहा जाता है। इनम से दो जयपुर और बीकानेर नगरीय समूह है। सन् 1971 की जनगणना के समय इस श्रेणी मे जयपुर, जोधपुर, अजमेर, कोटा, बीकानेर, उदयपुर व अलवर आते थे। 1981 म भीलवाडा, गगानगर, भरतपुर व सीकर की आबादी 1 लाख से ऊपर पहुँच गयी।

इन शहरो की जनसंख्या नीचे तालिका मे दर्शाई गई है

शहर	जनसंख्या	पुरुष	स्त्री
1 जयपुर-नगरीय समूह	1,004,669	538,118	466,551
[अ] जयपुर शहर	966,677	517,841	448,836
[ब] सागानेर टाऊन	21,938	11,882	10,056
[स] आमेर टाउन	16,054	8,395	7,659
2 जोधपुर	4,93,609	279,763	213,846
3 अजमेर	374,350	197,063	177,287
4 कोटा	341,548	183,556	157,992
5 बीकानेर-नगरीय समूह	280,366	148,670	131,696
[अ] बीकानेर शहर	248,716	132,463	116,253

शहर	जनसख्या	पुरुष	स्त्री
[ब] गगाशहर	21,193	10,759	10,434
[स] भीनासर	10,457	5,448	5,009
6 उदयपुर	229,762	123,143	106,619
7 अलवर	139,973	75,524	64,449
8 भीलवाडा	122,338	64,749	57,589
9 गगानगर	121,516	67,438	54,078
10 भरतपुर	105,239	57,385	47,854
11 सीकर	102,946	53,773	49,173

1. श्रीगंगानगर जिला—

कभी बीकानेर राज्य का अंग रहा श्री गगानगर जिला आज कृषि उत्पादन मे प्रदेश का एक महत्त्वपूर्ण जिला बन गया है। यह क्षेत्र जहा कभी रेतीले टीबे ही नजर आते थे आज गगनहर, राजस्थान नहर और भाखडा नहर के आने से सरसब्ज इलाका हो गया है। कृषि ही यहा के लोगो का मुख्य व्यवसाय रहा है।

श्री गगानगर जिला क्षेत्रफल की दृष्टि से राज्य मे पाचवे स्थान पर है। यह अक्षाश 28⁰4′ से 30⁰6′ उत्तर तथा देशान्तर 32⁰30 से 75⁰30′ पूर्व के मध्य स्थित है। इसके दक्षिण मे चूरु व बीकानेर जिले, उत्तर पूर्व मे पजाब व हरियाणा तथा उत्तर-पश्चिम मे पाकिस्तान का बहावलपुर जिला है। इस जिले की जलवायु गर्म व शुष्क है और वर्षा का औसत 255 मिलीमीटर आँका गया है। इस जिले का क्षेत्रफल 20 हजार 696 वर्ग किलोमीटर है।

श्री गगानगर का विकास बीकानेर के महाराजा श्रीगगासिह ने गगनहर का निर्माण करवाकर शुरु किया था जो कालान्तर मे उत्तरोत्तर बढता ही गया। महाराजा श्रीगगासिह की जन्म शताब्दी हाल ही मे 19 अक्टूबर 1980 को मनाई गई है राजस्थान के निर्माण के बाद स्वतन्त्र अस्तित्व मे आये इस जिले म अब पाच उपखण्ड व 12 तहसीले हैं।

श्री गगानगर मे तहसील मुख्यालय अनूपगढ, करणपुर, टीबी, पदमपुर, श्री गगानगर, हनुमानगढ नोहर, भादरा, रायसिहनगर, सागरिया, सादुलशहर, सूरतगढ पर हैं।

सन् 1981 की जनगणना के अनुसार जिले की जनसख्या 20 14 लाख हो गयी जबकि सन् 1971 की जनगणना के समय इस जिले मे 13 94 लाख लोग ही रहते थे। इस प्रकार गत एक दशक मे इस जिले की आबादी 44‘51 प्रतिशत बढी। इस जिले मे 4 14 लाख नगरीय तथा 16 लाख ग्रामीण जनसख्या थी। नवीनतम आकडा के अनुसार गगानगर जिले मे जनसख्या का घनत्व 98

व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर रहा। जबकि 1981 में यहां साक्षरता 25 56 प्रतिशत था।

2. चुरू जिला—

बीकानेर रियासत का भाग रहा वर्तमान का चुरू जिला भी रेगिस्तानी है जहां पीने के पानी की भी अत्यधिक कमी है। प्रशासनिक दृष्टि से यह जिला तीन उपखण्डों, सात तहसीलों और सात पंचायत समितियों में बटा हुआ है। 1876 गांवों वाले इस जिले में 202 ग्राम पंचायतें हैं। ताल छापर यहां का एक मात्र अभयारण्य है।

सन् 1981 की जनगणना के अनुसार चुरू जिले की जनसंख्या 11 76 लाख थी। इसमें 3 44 लाख नगरीय तथा 8 31 लाख ग्रामीण जनसंख्या थी। इस जिले की जनसंख्या का घनत्व 70 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर था तथा यहां साक्षरता का प्रतिशत 21 62 प्रतिशत रहा। चुरू जिले का क्षेत्रफल 16 830 वर्ग किलोमीटर है।

3. बीकानेर जिला—

पौराणिक मतानुसार जागल प्रदेश के नाम से प्रसिद्ध बीकानेर जिला अपने ऐतिहासिक महत्व के लिये प्रसिद्ध है। इस राज्य की स्थापना जोधपुर के संस्थापक राव जोधाजी के पुत्र राव बीकाजी ने संवत् 1545 में की थी। (सन् 1488)

भौगोलिक दृष्टि से बीकानेर जिला 27°11' उत्तरी अक्षांस से 29°03' उत्तरी अक्षांस तक तथा 71°54' से 74°12' पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। इसका अधिकांश भाग रेगिस्तानी है। जिले के दक्षिण में नागौर जिला, दक्षिण-पश्चिम में जोधपुर उत्तर-पश्चिम में जैसलमेर, पश्चिम में पाकिस्तान, उत्तर में श्री गंगानगर और पूर्व में चुरू जिला है। क्षेत्रफल की दृष्टि से यह राजस्थान का तीसरा सबसे बड़ा जिला है। इसका कुल क्षेत्रफल 27 हजार 366 वर्ग किलोमीटर है।

अन्य रेगिस्तानी जिलों की तरह इसकी जलवायु भी गर्म व शुष्क है। वर्षा का औसत यहां 225 से 300 मिलीमीटर तक है। जिले में चार तहसीलें नोखा लूणकरणसर, कोलायत व बीकानेर हैं और 680 गांव हैं।

देशनोक में करणीमाता का मंदिर, कोलायत में महर्षि कपिल की तपोभूमि, जूनागढ़, गजनेर के अलावा बीकानेर नगर में बने राजप्रसाद व हवेलियां पर्यटकों को काफी आकर्षित करती है।

श्री गंगानगर जिले को खुशहाल बनाने वाली राजस्थान नहर ने इस जिले का कायाकल्प भी शुरु कर दिया है। डेयरी विकास की भी यहां महत्वपूर्ण योजना शुरु की गई है।

बीकानेर जिले का क्षेत्रफल 27,244 वर्ग किलोमीटर है। सन् 1981 की जनगणना के अनन्तिम आंकड़ों के अनुसार यहां की कुल जनसंख्या करीब 8 40

भील राजा कोटिया के नाम पर कोटा नाम रखा गया है। भीलो से
क्षेत्र को हाडा राजपूतो ने छीनकर इसे हाडौती का हिस्सा बनाया। कोटा म
महत्व के अनेक दर्शनीय स्थल हैं जिनमे पुरातत्विक महत्व के मन्दिर ऐतिहा
महलो के अलावा दरा अभयारण्य म प्रकृति का नैसर्गिक सौन्दर्य देखने को
हैं। आधुनिक प्रगति के प्रतीक बडे-बडे कारखाने भी यहीं हैं।

हाडा नरेशो ने यहा अपनी चित्र शैली का विकास किया जिस पर मेवाड
मुगलो व दक्षिण भारत की चित्र शैली का भी थोडा बहुत प्रभाव नजर आता है

कोटा का दशहरा मेला प्रसिद्ध है जो यहा विजय पर्व के रूप मे
जाता है।

कोटा जिले का क्षेत्रफल 12,436 वर्ग किलोमीटर है। इस जिले की स
1981 मे कुल जनसख्या 15 लाख 46 हजार 937 थी जिसमे से 10 लाख 6
हजार 087 ग्रामीण तथा 4 लाख 86 हजार 850 शहरी जनसख्या थी इस जि
म जनसख्या का घनत्व 124 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर तथा साक्षरता का प्रतिश
31 93 था।

8 झालावाड जिला

हाडोती क्षेत्र का तीसरा जिला झालावाड है जो प्राकृतिक सौन्दर्य औ
वन सम्पदा से भरापूरा हैं। हल्दी घाटी की लडाई के वीर मानसिंह झाला
वशजो की भूमि झालावाड है। 6 हजार 219 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र मे फै
इस पहाडी व मैदानी जिले म अफीम की खेती भी होती है। झालरापाटन
जैन व सूय मन्दिर स्थापत्य कला और मन्दिर निर्माण की कला मे बेजोड हैं।

मध्य प्रदेश की सीमा से लगे झालावाड मे वर्षा का वार्षिक औसत 104
मिलिमीटर है। वर्तमान मे उजाड नदी पर भीमसागर सिंचाई परियोजना प
काम चल रहा है जिससे 52 गावो को पीने का पानी मिल सकेगा। यहा करी
दो दजन छोटी नदिया बहती है। काली सिंध नदी पर हरिश्चन्द्र सागर बाध भ
बनाया जा रहा है।

विंध्याचल पर्वतमालाओ से घिरे इस जिले मे न्यूनतम तापमान 30 डिग्र
सेन्टीग्रेड व अधिकतम 47 डिग्री सेन्टीग्रेड रहता है। इस जिले में पाच विधा
सभा क्षेत्र हैं उनके नाम इस प्रकार है—झालरापाटन, डग पिडावा मनोहरथान
और खानपुर। 1971 की जनगणना के आधार पर जिले की जनसख्या 6 लाख
22 हजार थी।

इस जिले की जनसख्या 1981 की जनगणना के समय 7 लाख 84 हजार
982 थी। इसमें 6 लाख 93 हजार 507 ग्रामीण तथा 91 हजार 47
शहरी आबादी थी। जिले म जनसख्या का घनत्व 126 व्यक्ति प्रति व
किलोमीटर था तथा साक्षरता का प्रतिशत 22 19 प्रतिशत रहा।

9. जयपुर जिला—

जयपुर जिला राजस्थान का सबसे बडा जिला है और राज्य की राजधानी भी जयपुर ही है। गुलाबी नगर के नाम से प्रसिद्ध जयपुर शहर विदेशी सैलानियो के आकर्षण का केन्द्र है। हर साल यहा लाखो विदेशी पर्यटक हवामहल, आमेर का किला, जन्तर-मन्तर और चन्द्रमहल देखने आते हैं।

जयपुर जिला राजस्थान के पूर्वी भाग में है। करीब 14 हजार वर्ग किलोमीटर क्षेत्र मे फैले इस जिले को विभक्त कर दो टुकडो मे करने की माग बहुत समय से की जा रही है। प्रशासनिक दृष्टिकोण से यह जिला पाच उपखण्डो, 15 तहसीलो मे बटा हुआ है। जिले मे 2929 गाव और 549 पंचायतें हैं जिनकी देखरेख 17 पचायत समितिया करती है।

जयपुर जिला स्वतन्त्रता से पूर्व जयपुर रियासत का अंग था। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद जिले का विकास तेजी से हुआ है, यही राजस्थान की राजधानी होने के कारण जयपुर शहर तेजी से फैलता जा रहा है। जयपुर का औद्योगीकरण भी द्रुतगति से हुआ है और वर्तमान मे चार औद्योगिक क्षेत्र विश्वकर्मा, झोटवाडा, सुदर्शनपुरा व मालवीय नगर स्थापित हो चुके हैं।

सन् 1981 की जनगणना के आधार पर जिले की आबादी 34 लाख 6 हजार 104 तक पहुँच गई। चौदह हजार 8 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र मे फैले इस जिले मे जनसख्या का घनत्व 242 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर था। इसमे 21 लाख 66 हजार 248 ग्रामीण तथा 12 लाख 39 हजार 856 शहरी जनसख्या थी। जिले की कुल जनसंख्या की तुलना मे शहरी आबादी का प्रतिशत 36 40 है। इस जिले मे 43.68 प्रतिशत पुरुष तथा 16.98 प्रतिशत स्त्रिया साक्षर थी।

10. अलवर जिला—

हरियाणा की सीमा से लगा अलवर जिला भी तेजी से औद्योगीकरण की ओर बढ रहा है। राजधानी क्षेत्र मे आने से भी इसका विकास तेजी से हो रहा है। हरा-भरा इलाका और अरावली की पर्वतमालाओ से घिरे इस जिले का क्षेत्रफल 8,380 वर्ग किलोमीटर हैं जिसमे 438 ग्राम पंचायतें हैं। प्रशासनिक दृष्टि से 10 तहसीलो और चार उपखण्डो मे विभाजित इस जिले की जमीन उपजाऊ है। सरिस्का का वन्य जीव अभयारण्य विदेशी पर्यटको के आकर्षण का केन्द्र है।

स्वतन्त्रता से पूर्व अलवर जिला मेवाड़ रियासत का एक अग था और मत्स्य सग मे विलीन होने के बाद 22 मार्च, 1949 को वृहद् राजस्थान का अग बन गया। सिलीसेढ, तालवृक्ष, पाडुपोल, भृतहरि, नीलकठ और नारायणी माता का मन्दिर यहा के दर्शनीय स्थल है।

अलवर जिले की आवादी 1981 की जनगणना के समय 17 लाख

59 हजार 57 थी जिसमें 15 लाख 68 हजार 723 ग्रामीण तथा 1 लाख 90 हजार 334 शहरी जनसंख्या थी। जिले में जनसंख्या का घनत्व 210 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर तथा साक्षरता का प्रतिशत 26.09 था।

11. भरतपुर जिला—

तीन राज्यो उत्तर मे हरियाणा, दक्षिण मे मध्यप्रदेश और पूर्व मे उत्तर-प्रदेश की सीमा से लगा भरतपुर जिला भी क्षेत्रफल मे बहुत बडा है। भरतपुर अपनी घना पक्षी अभयारण्य के लिए विश्व प्रसिद्ध है, जिसमें सर्दियों के दिनो मे साइबेरिया तक के पक्षी आकर डेरा जमाते हैं। 36 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल वाली झील मे पक्षियो के कलरव का आनन्द लेने के लिऐ हर साल हजारो विदेशी पर्यटक यहा आते है।

भरतपुर ज़िला धनधान्य से भरपूर है। इसका मुख्य कारण यहा सिंचाई साधनो की प्रचुरता है। बरसात के मौसम मे बाणगंगा नदी की बाढ के पानी से रबी की बहुत अच्छी फसल यहा होती है। जिले मे डीग के महल भी अपने वास्तु-शिल्प के लिए प्रसिद्ध है।

भरतपुर जिले मे से चार तहसीलें अलग कर धौलपुर नाम का नया जिला बनाने के बाद भरतपुर जिले की जनसख्या सन् 1981 की जनगणना के अनुसार 12 लाख 95 हजार 890 रह गई। इसमे 7 लाख 556 पुरुष तथा 5 लाख 95 हजार 334 स्त्रिया थी।

12. सवाई माधोपुर जिला—

सवाई माधोपुर जिला प्रदेश के दक्षिणी पूर्वी भाग मे अरावली की पहाडियो मे बसा हुआ है। जिले का कुल क्षेत्रफल 10,527 वर्ग किलोमीटर है। जिले का निर्माण सवाई माधोपुर, गगापुर, हिंडौन रियासत और करोली राज्य को मिलाकर किया गया है। जिले की भूमि उपजाउ है और सिंचाई के लिए कई छोटे बधे बने हुए हैं। मोरेल व बनास नदिया भी इसी के अन्दर से गुजरती हैं।

जिले में रणथम्भोर का किला अपने गौरवपूर्ण इतिहास के लिए प्रसिद्ध है। यहा हर वर्ष गणेश चतुर्थी पर बहुत बडा मेला लगता है जिसमे लाखो लोग भाग लेतें हैं। रणथम्भोर का वन्य जीव अभयारण्य भी विश्व प्रसिद्ध है यहां अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग से बाघ परियोजना संचालित की जा रही है। जिले में सबसे बडा उद्योग सवाई माधोपुर की सीमेन्ट फैक्ट्री है। करौली के पास कैलादेवी का मेला लगता है जो लक्खी मेला भी कहलाता है।

प्रशासनिक दृष्टि से सवाई माधोपुर जिला चार उपखण्डो, 11 तहसीलों और इतनी ही पचायत समितियो मे बटा हुआ है। यहा वर्षा का वार्षिक औसत 689 मिलीमीटर है। बनास नदी पर पुल नही होनें के कारण वर्षा के दिनो में सडक मार्ग से जिला मुख्यालय का सम्पर्क अन्य हिस्सो से टूट जाता है। जिले मे कुल 1653 गांव हैं।

सन् 1981 की जनगणना के अनुसार इस जिले की जनसंख्या 15 लाख 32 हजार 652 थी। इनमें 2 लाख 6 हजार 54 शहरी तथा 13 लाख 26 हजार 598 ग्रामीण जनसंख्या थी। इस जिले की जनसंख्या का घनत्व 124 प्रति व्यक्ति वर्ग किलोमीटर तथा साक्षरता का प्रतिशत 22 93 था।

13. अजमेर जिला—

ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह और तीर्थराज पुष्कर के दर्शन करने वाले अजमेर जिले से भलीभांति परिचित हैं। यह क्षेत्र स्वतन्त्रता से पूर्व मेरवाड़ा के नाम से जाना जाता था। रियासत काल में इस क्षेत्र का काफी विकास हुआ और साक्षरता यहा प्रदेश के दूसरे भागो के मुकाबले अधिक थी।

अजमेर जिले का अपना ऐतिहासिक महत्व है। ख्वाजा के उर्स पर देश विदेश से लाखों जायरीन आते हैं, वही अब पुष्कर महोत्सव विदेशी सैलानियो के आकर्षण का बड़ा केन्द्र बन गया है। दरगाह और पुष्कर में ब्रह्माजी के मन्दिर के अलावा अढाई दिन का झोंपड़ा भी दर्शनीय स्थल है। स्वतन्त्रता से पूर्व अजमेर अलग राज्य था। नवम्बर, 1956 में इसका विलय राजस्थान में किया गया है।

इस जिले का क्षेत्रफल 8,481 वर्ग किलोमीटर है। इस जिले की कुल जनसंख्या सन् 1981 की जनगणना के समय 14 लाख 31 हजार 609 थी जिसमें 8 लाख 23 हजार 658 ग्रामीण तथा 6 लाख 7 हजार 951 शहरी जनसंख्या थी। इस जिले की जनसंख्या का घनत्व 169 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर था तथा साक्षरता का प्रतिशत 35 01 था।

जिले मे 976 गाव, 256 ग्राम पचायतें, 4 उपखण्ड, 5 तहसीलें और आठ पचायत समितिया हैं। यहा वर्षा का वार्षिक औसत 589 मिलीमीटर है।

अजमेर जिला मुख्यालय पर कई राज्य स्तर के सरकारी कार्यालय भी हैं, जिनमे राजस्व मण्डल, बोर्ड ऑफ सैकण्डरी एजुकेशन, आयुर्वेद विभाग मुख्य हैं। हिन्दुस्तान मशीन टूल्स कारखाना, रेल्वे वर्कशॉप, रोडवेज वर्कशॉप भी यही पर हैं। कई प्रमुख शिक्षण सस्थाएँ यहाँ हैं जिनमें मेयो कॉलेज का नाम सबसे ऊपर है।

14. टोंक जिला—

टोक जिला राजस्थान के उत्तरी पूर्वी भाग में है, जिसका कुल क्षेत्रफल 7194 वर्ग किलोमीटर है। यह जिला 2 उपखण्डो और 6 तहसीलो में बटा है। कुल 1086 गावो में 192 ग्राम पचायतें हैं।

टोंक बनास नदी की मिट्टी में पैदा होने वाले स्वादिष्ट खरबूज़ो के लिए प्रसिद्ध है। यहा पर ही राज्य का एकमात्र चमडा रगाई का कारखाना भी है। यहा निरक्षरता व गरीबी काफी है। बीडी बनाने का काम भी यहा बडे

पैमाने पर होता है जिससे तपेदिक के मरीजो की भी सख्या बहुत अधिक है। टोक की सुनहरी कोठी एक दर्शनीय स्थल है, जिसका निर्माण 1824 मे नवाब मुहम्मद अमीर खाँ ने कराया था। सोने व मीनाकारी के कलात्मक कार्य के लिए यह प्रसिद्ध है।

टोक जिले का अन्य महत्वपूर्ण दर्शनीय स्थल डिग्गी मे कल्याणजी का प्राचीन मन्दिर है। इस तीर्थस्थल पर दर्शन के लिए रोजाना भारी सख्या मे लोग देश भर से आते हैं।

सन् 1981 की जनगणना के अनुसार यहा की आबादी 7 लाख 83 हजार 796 थी। इसमे 1 लाख 43 हजार 859 शहरी तथा 6 लाख 39 हजार 937 ग्रामीण जनसख्या थी। इस जिले का घनत्व 109 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर तथा साक्षरता का प्रतिशत 20 26 था।

15. चित्तौड़ जिला--

राजस्थान के दक्षिणी पूर्वी भाग मे बसा यह जिला मेवाड के शौर्य, स्वाभिमान की गौरवपूर्ण परम्पराओ के लिए प्रसिद्ध रहा है। जहा के शासको ने मुगलो की अधीनता स्वीकार करने की बजाय मर जाना बेहतर समझा।

चित्तौड जिला 10 हजार 856 वर्ग किलोमीटर मे फैला हुआ है, जिस की पूर्वी व दक्षिणी सीमा मध्यप्रदेश से लगती है। यहा पर वर्षा का वार्षिक औसत 752 मिलिमीटर रहा है। प्रशासनिक दृष्टि से चित्तौड जिला पाच उपखण्डो व 11 तहसीलो मे बटा हुआ है। जिले म 2123 गाव, 306 ग्राम पचायतें और 13 पचायत समितिया है।

चित्तौड प्राचीनकाल मे चित्रकूट के नाम से पुकारा जाता था। यहा का प्राचीन दुर्ग अभी भी ऐतिहासिक महत्व का पर्यटन स्थल है जिसने अपनी छाती पर अनगिनत लडाइयो के वार झेले है। चित्तौड के दुर्ग के अलावा विजय स्तम्भ भी यही पर है, जो आज हवामहल के बाद राजस्थान का प्रतीक बन गया है।

मातृकुण्डिया का मन्दिर इस क्षेत्र के लागो की आराधना का स्थल है। वही सतबीस देवरी का जैद मन्दिर भी पर्यटका के आकर्षण का केन्द्र है। इस जिले मे वर्तमान मे दो सीमेन्ट फैक्ट्रिया चित्तौड व निम्बाहेडा म लगी हैं।

यहा की जनसख्या सन् 1981 म 12 लाख 30 हजार 628 थी जिसमे 10 लाख 68 हजार 197 ग्रामीण तथा 1 लाख 62 हजार 431 शहरी जनसख्या थी। इस जिले की जनसख्या का घनत्व 113 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर तथा साक्षरता का प्रतिशत 21 85 था।

16. डूगरपुर जिला—

डूगरपुर जिला भी मेवाड का ही अग रहा है। ऐतिहासिक, सास्कृतिक व पर्यटन का महत्व का यह जिला वन सम्पदा से भरा पूरा है यहा की अधिकाश

आबादी भीलो की है, जिनके रहन-सहन मे स्वतन्त्रता के बाद कुछ सुधार हुआ है पर अभी भी अधिकाश लोग व उत्पादनो से होने वाली आय पर ही निर्भर हैं।

बागड प्रदेश के नाम से प्रसिद्ध इस जिले की पृष्टभूमि ऐतिहासिक रही है।

स्वतन्त्रता के बाद डूगरपुर जिले के काफी गावो मे बिजली पहुँची है, वहीं सिथेटिक धागे की फैक्ट्री भी लग रही है। जिले के प्रमुख दर्शनीय व पर्यटन महत्व के स्थल देव सोमनाथ का मन्दिर, गलियाकोट की दरगाह, बेणश्वर महादेव आदि है।

इस जिले का क्षेत्रफल 3,770 वर्ग किलोमीटर है। सन् 1981 मे इस जिले की जनसख्या 6 लाख 80 हजार 865 थी। जिसमे 6 लाख 36 हजार 744 ग्रामीण तथा 44 हजार 121 शहरी आबादी थी। जिले की जनसख्या का घनत्व 181 व्यक्ति प्रतिवर्ग किलोमीटर तथा साक्षरता का प्रतिशत 18 42 था।

17 बासवाड़ा जिला—

डूगरपुर जिले की तरह ही बासवाडा जिले मे भी आदिवासी ज्यादा रहते हैं। इस जिले में मेवाड, मालवा व गुजरात की संस्कृतियो की झलक मिल जाती है। बासो के जगलो की बहुतायत के कारण इसका नाम बासवाडा पडा, लेकिन अब बास के जगल ढूंढने से भी नही मिलते। फिर भी यहा वन सम्पदा का प्रचुर भण्डार हैं और त्रिपुरा सुन्दरी का मन्दिर, बेणेश्वर धाम, आबूदरा आदि प्रमुख दर्शनीय स्थान हैं।

इस जिले का क्षेत्रफल 5,037 वर्ग किलोमीटर है सन् 1981 की जनगणना के अनुसार इस जिल की जनसख्या 8 लाख 85 हजार 701 थी जिसमे 8 लाख 30 हजार 516 ग्रामीण तथा 55 हजार 185 शहरी जनसख्या थी। इस जिले की जनसख्या का घनत्व 176 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर तथा साक्षरता का प्रतिशत 16 78 था।

अरावली पर्वतमालाओ से आच्छादित यह जिला भी मध्यप्रदेश व गुजरात से जुडा हुआ है। यहा वर्षा का वार्षिक औसत एक हजार मिलीमीटर है। इस क्षेत्र की पहाडिया पूर्वी हिमालय युगीक अग्नेय चट्टानो की बनी हुइ है। यहा भी सिंथेटिक धागा बनाने की फैक्ट्री लगी है और माही नदी पर बहुत बडा बाध बन रहा है।

18 उदयपुर जिला—

उदयपुर मेवाड के राजाओ की राजधानी रहा है, वही इसका अपना गौरवपूर्ण इतिहास भी रहा है अरावली की पहाडियो मे बसा यह जिला भी आदिवासी बाहुल्य है। इसका क्षेत्रफल 17,279 वर्ग किलोमीटर है। जयपुर के बाद यह दूसरा बडा जिला है। इसको भी दो भागो मे विभक्त करने की माग काफी समय से चल रही है। प्राशासनिक दृष्टि से यह जिला 6 उपखण्डो, 17 तहसीलो

और 18 पचायत समितियो मे बटा हुआ है। जिले मे कुल 3 हजार 175 और 9 नगर पालिकाए हैं।

जयपुर के बाद उदयपुर ऐतिहासिक व पर्यटन महत्व के स्थलो से है। उदयपुर मे राजमहल, जगदीश मन्दिर, सहेलियो की बाडी, पिछोला झील मोती मगरी, सज्जनगढ महल आदि कुछ ऐसे स्थान हैं जहां हर साल बहुत बडी सख्या मे विदेशी पर्यटक व फिल्मो की शूटिंग के इच्छुक निर्माता आते हैं।

जिले मे वैष्णव सम्प्रदाय के लोगो के प्रसिद्ध तीर्थ नाथद्वारा मे श्रीनाथजी का मदिर है। अकबर और महाराणा प्रताप की ऐतिहासिक लडाई का प्रतीक हल्दी घाटी भी इसी इलाके मे है। कुभलगढ का किला, राजसमन्द व जयसमन्द झीलें, श्री केसरियाजी आदि यहा के अन्य दर्शनीय स्थल हैं।

ऐतिहासिक महत्व के साथ-साथ ही उदयपुर जिला वर्तमान मे भी अच्छी प्रगति कर रहा है। जिक का कारखाना व सीमट फैक्ट्री यहा लग चुकी है और कई उद्योग लगाने की तैयारी मे है।

सन् 1981 की जनगणना के अनुसार इस जिले की जनसख्या 23 लाख 51 हजार 639 थी जिसमे 3 लाख 52 हजार 089 शहरी तथा 19 लाख 99 हजार 550 ग्रामीण जनसख्या थी। इस जिले की जनसख्या का घनत्व 136 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर तथा साक्षरता का प्रतिशत 21 85 था।

19. भीलवाड़ा जिला—

खनिज सम्पदा से भरपूर भीलवाडा जिला वर्तमान मे उदयपुर सभाग मे है। यह जिला राजस्थान के दक्षिणी-पश्चिमी भाग मे 10 हजार 455 वर्ग किलोमीटर मे फैला हुआ है। भीलवाडा जिला प्रशासनिक दृष्टि से 4 उपखण्डो भीलवाडा, शाहपुरा, माडलगढ व गुलाबपुरा तथा 11 तहसीलो मे बटा हुआ है। जिले से कुल 1521 गाव व 340 ग्राम पचायतें है।

भीलवाडा जिले के कई स्थानो पर की गई खुदाई से पता चलता है कि यहां प्राचीनकाल मे लोग नदियों के किनारे पेडो व गुफाओ मे रहते थे। उत्खनन मे पाषाण निर्मित हथियार मिले है।

भीलवाडा राज्य का एक प्रमुख औद्योगिक शहर बन गया है। यहां पर मुख्य रूप से कपडा उद्योग व सोप स्टोन तथा अभ्रक पर आधारित कारखाने लगे है। अब सिंथेटिक धागे के कपडे भी बनने लगे है।

सन् 1981 की जनगणना के अनुसार इस जिले की जनसख्या 13 लाख 8 हजार 500 थी जिसमे से 11 लाख 20 हजार 225 ग्रामीण तथा 1 लाख 88 हजार 275 शहरी आबादी थी। इस जिले का घनत्व 125 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर तथा साक्षरता का प्रतिशत 19 77 था।

20. पाली जिला—

पाली जिले का इतिहास प्रागैतिहासिक काल का रहा है। यहा पुरातत्व सम्बन्धी खुदाई मे प्राचीन नदी घाटी सभ्यता का अस्तित्व सामने आया है।

पाली जिला पश्चिमी राजस्थान का प्रवेश द्वार माना जा सकता है। यह मारवाड रियासत का भाग रहा है। जहा एक ओर यहा रेगिस्तान भूमि भी नजर आती है वही कुछ हिस्से मे अरावली की पहाडिया और उपजाऊ मैदानी इलाका भी है।

पाली का सोमनाथ मन्दिर, रणकपुर के जैन मन्दिर स्थापत्यकला व मूर्ति कला के अनुपम उदाहरण हैं, जिन्हे देखने के लिए पर्यटक दूर-दूर से आते हैं। राजस्थान का स्वाधीनता सग्राम मे सक्रिय भाग लेने वालो का विजय स्तम्भ भी यहा का एक दर्शनीय स्थल है जो मारवाड से कुछ किलोमीटर की दूरी पर है। यहां आठ विधानसभा क्षेत्र हैं।

इस जिले का क्षेत्रफल 12 हजार 387 वर्ग किलोमीटर है। सन् 1981 मे यहा की आबादी 12 लाख 71 हजार 835 थी जिसमे से 10 लाख 37 हजार 932 गावो मे तथा 2 लाख 33 हजार 903 शहरो मे रहते थे। यहा की आबादी का घनत्व 103 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर तथा साक्षरता का प्रतिशत 21 84 था।

21. जालौर जिला—

कच्छ के रन से लगा जालौर जिला रेगिस्तान मे होते हुए भी रेगिस्तानी नही है। जिले की सांचौर तहसील मे इतने डीजल पम्पसेट लगे हैं कि गेहूँ की बहुत बढिया फसल होती है। राज्य के दक्षिणी पश्चिमी भाग मे बसे जालौर जिले का क्षेत्रफल 10 हजार 640 वर्ग किलोमीटर है। प्रशासनिक दृष्टि से यह जिला दो उपखण्डो, चार तहसीलो मे बटा हुआ है। इसम 216 ग्राम पचायतें व सात पचायत समितियां है। 1971 की जनगणना के आधार पर इसकी आबादी 6 लाख 67 हजार थी।

जालौर जिले का इतिहास बहुत पुराना है। जिले के लोगो के रहन-सहन पर सौराष्ट्र के लोगो के जीवन की कुछ छाप नजर आती है। जिले का भीनमाल कस्बा सस्कृति के महाकवी माघ की जन्म भूमि रहा है। यहा के प्रमुख दर्शनीय स्थल जैन मन्दिर सुन्धामाता का मन्दिर, अपिश्वर महादेव, और ऐतिहासिक दुर्ग है।

सन् 1981 की जनगणना के आधार पर इस जिले की आबादी 9 लाख 2 हजार 649 थी जिसमे से 8 लाख 29 हजार 866 ग्रामीण तथा 72 हजार 783 शहरी जनसख्या थी। इस जिले मे आबादी का घनत्व 85 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर तथा साक्षरता का प्रतिशत 13 77 था।

22. सिरोही जिला—

सिरोही जिला मूलत आदिवासियो का निवास स्थल है। इसी जिले राजस्थान का एक मात्र हिल स्टेशन माउन्ट आबू मे है। आबू पहले राज्य मे मिलाया जाना था पर 1956 मे राज्य के पुनर्गठन के समय राजस्थान मे रखा गया। सिरोही जिला गुजरात से लगा हुआ है। यह राज्य के अन्य जिलो के मुकाबले बहुत छोटा है और यहा केवल तीन विधानसभा क्षेत्र सिरोही, रैव दर और पिडवाडा हैं।

अरावली पर्वतमालाओ से घिरे इस जिले मे जहा वन सम्पदा बहुत है वही खनिजो के भण्डार भी बहुत है। जल्दी ही यहाँ एक सीमेन्ट फैक्ट्री लग जा रही है।

पर्यटन की दृष्टि से सिरोही जिले मे आबू पर्वत सर्वाधिक महत्वपूर्ण है जहा हर साल हजारो पर्यटक आते है जिनमे गुजरातियो की सख्या बहुत ज्यादा होती है। नक्की झील, गुरु शिखर, देलवाडा के जैन मन्दिर, अचलेश्वर मन्दिर दूधबावडी, अर्बुदादेवी का मन्दिर दर्शनीय स्थल हैं।

सिरोही जिले का क्षेत्रफल 5,136 वर्ग किलोमीटर है। यहा की जनसख्या सन् 1981 मे 5 लाख 40 हजार 520 थी जिसमे से 4 लाख 44 हजार 952 ग्रामीण तथा 95 हजार 568 शहरी आबादी थी। इस जिले का घनत्व 105 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर तथा साक्षरता का प्रतिशत 19 90 था।

23. जोधपुर जिला—

जोधपुर जिला मारवाड का प्रमुख जिला है और मरूस्थल का प्रवेश द्वार भी कहा जाता है। राजस्थान के उत्तर-पश्चिमी भाग मे बसे इस जिले का क्षेत्रफल 22 हजार 850 वर्ग किलोमीटर है। जिले की वर्षा का वार्षिक औसत 650 मिलीमीटर है।

जोधपुर की स्थापना राव जोधा ने की थी। यहा की धरती ने कइ ऐसे वीर पैदा किये है जिन्होने मुगल शासको तक के पसीने छुडा दिये थे। जोधपुर की 1459 मे स्थापना होने से पूर्व मारवाड रियासत की राजधानी मडोर थी

स्वाधीनता के इतिहास मे भी जोधपुर जिले का योगदान महत्वपूर्ण रहा है। स्व० जयनारायण व्यास उनमे प्रमुख थे।

जिले के प्रमुख पर्यटन स्थल मडोर गार्डन, जसवन्त थडा, बालसमद भी उम्मेद भवन आदि हैं। राजस्थान उच्च न्यायालय का मुख्यालय भी जोधपुर ही है। जोधपुर के अलावा ओसिया के जैन मन्दिर, सूर्य मन्दिर भी दर्शनीय हैं फलोदी मे नमक बनता है।

सन् 1981 की जनगणना के अनुसार इस जिले की जनसख्या 16 ल 50 हजार 933 थी जिसमे से 10 लाख 83 हजार 542 ग्रामीण तथा 5 ल

67 हजार 391 शहरी आबादी थी। इस जिले मे आबादी का घनत्व 72 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर तथा साक्षरता का प्रतिशत 25 87 था।

24. बाडमेर जिला —

बाडमेर जिला पूरा रेगिस्तानी इलाका है वही इसकी करीब तीन सौ किलोमीटर लम्बी सीमा पाकिस्तान से लगी हुई है। यहा लोगो की आजीविका मुख्यत पशुधन पर आधारित है। वैसे जीरे और नमक का भी उत्पादन यहा बहुत होता है।

इस जिले का क्षेत्रफल 20,387 वर्ग किलोमीटर है। प्रशासनिक दृष्टि से इसमे पाच तहसीलें व आठ पचायत समितिया हैं। कुल 865 गाव हैं।

बाडमेर जिले मे ऊन उद्योग, चमडे का काम, रगाई-छपाई, लकडी पर नक्काशी और कपडे पर काच का काम बहुत प्रसिद्ध है। खेड नाकोडा, किराडू, रामेश्वर मन्दिर व अन्य कई मदिर यहा के दर्शनीय स्थल हैं।

बाडमेर जिले मे सन् 1981 की जनगणना के समय कुल जनसख्या 11 लाख 13 हजार 823 थी जिसम से 10 लाख 17 हजार 696 ग्रामीण तथा 96 हजार 127 शहरी जनसख्या थी। इस जिले मे जनसख्या का घनत्व 39 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर तथा साक्षरता का प्रतिशत 11 97 था।

25. जैसलमेर जिला—

धोरो की धरती का एक और जिला जैसलमेर है, जहा लोग कई बार वर्षों तक पानी की बूद बरसते देखने को तरस जाते हैं। पाकिस्तान की सीमा से लगे इस जिले का क्षेत्रफल 38,401 वर्ग किलोमीटर है। पूरे जिले से एक ही विधायक चुन कर आता है। यहा वर्षा का वार्षिक औसत 164 मिलीमीटर है।

पर्यटन की दृष्टि से जैसलमेर जिला बहुत समृद्ध है और यहा आने वाले विदेशी पर्यटको की सख्या निरन्तर बढती जा रही है। जैसलमेर का दुर्ग 'सोनार किला' के नाम से प्रसिद्ध है। यहा के जैन मदिर, पटवो की हवेलिया अपने वास्तु-शिल्प के लिए जग प्रसिद्ध हैं। जिले मे फोसिल्स वुड पार्क भी है जहा 18 करोड वर्ष पुराने पेड पौधे पुरावशेषो मे परिवर्तित हो गये हैं। लोदरवा जैनियो का प्रमुख तीर्थस्थल है वही रामदेवरा मे हर साल बहुत बडा मेला लगता है।

इस जिले का क्षेत्रफल तो बहुत बडा है पर यहा की आबादी सन् 1981 मे केवल 2 लाख 39 हजार 137 ही थी। पूरे राज्य मे जैसलमेर जिले की जनसख्या का घनत्व सबसे कम है यहा केवल 6 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर भू-भाग मे रहते हैं। यहा की ग्रामीण जनसख्या 2 लाख 8 हजार 137 तथा शहरी जनसख्या 31 हजार ही थी। जिले मे केवल 9 94 प्रतिशत लोग ही साक्षर थे।

26. नागौर जिला—

नागौर जिला राजस्थान के मध्य का केन्द्र बिन्दु कहा जा सकता है। मीरा

की स्थापना रखी था यह जिला ऐतिहासिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण रहा है। यह जिला प्रशासनिक दृष्टि से 4 उपखण्डों, 8 तहसीलों और 11 पंचायत समितियों में बटा हुआ है।

नागौर जिले में ही मकराना है जहां का संगमरमर विश्वप्रसिद्ध है। ताजमहल के निर्माण में काम आने वाला मकराना का संगमरमर आज यहाँ हजारों लोगों की आजीविका का जरिया बना हुआ है। इस जिले में 10 विधानसभा क्षेत्र हैं।

27. धौलपुर जिला—

गत 14 अप्रैल 1982 को राज्य में सत्ताइसवें जिले धौलपुर का विधिवत गठन कर दिया गया। भूतपूर्व धौलपुर रियासत और बाद के धौलपुर उपखण्ड को ही धौलपुर जिला बना दिया गया है। इस जिले में उत्तर प्रदेश के भी दो गांवों को शामिल कर दिया गया है, जो दोनों राज्यों के बीच टापू की सी स्थिति में थे। भरतपुर जिले के तीन विधान सभा क्षेत्र धौलपुर, बाड़ी और राजाखेड़ा को मिलाकर यह नया जिला बनाया गया है।

तीन हजार नौ सौ वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल वाला यह नवोदित जिला राज्य के पूर्वी भाग में 26 22 डिग्री से 27 50 डिग्री तक उत्तरी अक्षांश व 76 53 से 78 17 तक पूर्वी देशांतर में स्थित है।

इस जिले के उत्तर में राज्य के भरतपुर जिले एवं उत्तर प्रदेश राज्य तथा दक्षिण व पूर्व में मध्यप्रदेश तथा पश्चिम में राजस्थान के सवाई माधोपुर जिले की सीमा लगी हुई है।

इस जिले का मुख्यालय धौलपुर में ही है तथा यह जिला चार तहसीलों, दो उपखण्डों, सत्तरह भू-अभिलेख वृत्तों, चार पंचायत समितियों, तीन नगर पालिकाओं एवं 149 ग्राम पंचायतों में विभाजित है।

सन् 1981 की जनगणना के अनुसार जिले की जनसंख्या 5 लाख 83 हजार है। जिले में प्रति वर्ग किलोमीटर भू-भाग में 193 लोग रहते हैं। इस दृष्टि से यह जिला राज्य का पांचवा सबसे अधिक घनत्व वाला जिला है। जिले में प्रति हजार पुरुषों पर 797 महिलाएं हैं।

जिले में यातायात के लिए लगभग 500 किलोमीटर लम्बी पक्की सड़कें हैं। इनमें से 28 29 किलोमीटर राष्ट्रीय उच्च मार्ग जी० टी० रोड जिला मुख्यालय धौलपुर से होकर निकलता है। रेलवे यातायात के लिए लघुन्तर लाइन के दो स्टेशन हैं, जो 20 किलोमीटर लम्बाई के रेलमार्ग में हैं। मितान्तर रेलवे के सात स्टेशन हैं, जो जिले में 65 किलोमीटर लम्बे रेलमार्ग से जुड़े हैं।

जिले का जलवायु शुष्क है। औसत वर्षा 84 सेंटीमीटर है। प्रान्त का सर्वाधिक तापक्रम 49 डिग्री का भू-भाग धौलपुर कस्बा ही है। जिले का न्यूनतम तापक्रम एक डिग्री सेंटीग्रेड है।

इस जिले का प्रमुख व्यवसाय कृषि है। लगभग 31 प्रतिशत भाग सेंचित है। सिंचाई के मुख्य साधन कुए, नहर व तालाब है जिनके द्वारा क्रमश 67 प्रतिशत, 17 प्रतिशत व 16 प्रतिशत क्षेत्र सींचा जाता है। इस जिले मे सिंचाई की प्रमुख योजना पार्वती प्रोजेक्ट है, जिसका अनुमानित व्यय 484 लाख रुपया है। इसकी सात हजार हैक्टर क्षेत्रफल की सिंचाई क्षमता है। जिले मे 3 37 प्रतिशत क्षेत्र मे जगल हैं। कुल बोये गए क्षेत्रफल के 80 प्रतिशत क्षेत्र मे खाद्यान्न, 18 प्रतिशत मे तिलहन, एक प्रतिशत मे फल तरकारी व एक प्रतिशत मे अन्य फसलें बोई जाती हैं।

औद्योगिक दृष्टि से धौलपुर व बाडी कस्बे महत्वपूर्ण हैं, जहा छोटे-बडे 264 उद्योग पजीकृत है। धौलपुर स्थित राजस्थान एक्सप्लासिव लि०, धौलपुर ग्लास वर्क्स लि० व गगानगर शुगर मिल का हाईटेक जिले के प्रमुख उद्योग हैं। अन्य उद्योगो मे खाद्य तेल, लोहा, ईट भट्टा, लकडी, चमडे व मिट्टी के बर्तन आदि है।

जिले की प्रमुख समस्या दस्यु उन्मूलन व पेयजल व्यवस्था की है। जिले बनाने के निर्णय की प्रमुख वजह दस्यु उन्मूलन अभियान को प्रभावी बनाना बताया गया है।

जिले की पृथक प्रसाशनिक इकाई के गठन से यह क्षेत्र न केवल इन योजनाओ को और भी त्वरित गति से क्रियान्वित कर सकेगा वरन् इस क्षेत्र का बहुआयामी विकास भी तेजी से कर सकेगा।

जोधपुर, बीकानेर, चूरू, सीकर और अजमेर की सीमा से लगे नागौर जिले की आबादी 1981 की जनगणना के आधार पर 16 लाख 24 हजार 351 थी। जिसमे से 13 लाख 87 हजार 271 ग्रामीण तथा 2 लाख 37 हजार 80 शहरी जनसख्या थी। इस जिले की जनसख्या का घनत्व 92 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर तथा साक्षरता का प्रतिशत 19 25 था। इस जिले का क्षेत्रफल 17,718 वर्ग किलोमीटर है।

	जिले	उपखड	तहसील	नगर व कस्बे	गाव 1981 की जनगणना आबाद	गैर आबाद
1.	अजमेर	4	5	8	954	19
2	अलवर	4	9	4	1869	73
3	बासवाडा	2	5	2	1439	23
4	बाडमेर	2	5	2	837	20
5	भरतपुर	4	12	9	1868	128
6	भीलवाडा	4	11	4	1508	62
7.	बीकानेर	2	4	6	540	133

1		2	3	4	5	6
8	बूंदी	2	4	4	729	9
9	चित्तौडगढ	6	11	7	2123	232
10	चूरू	3	7	11	850	53
11	डूंगरपुर	1	3	2	825	9
12	गंगानगर	5	12	12	2386	719
13	जयपुर	5	15	11	2683	141
14	जैसलमेर	1	2	2	432	86
15	जालौर	2	4	2	595	16
16	झालावाड	2	6	5	1441	145
17	झुंझुनू	4	4	12	693	2
18	जोधपुर	2	5	4	702	5
19	कोटा	4	12	6	1905	266
20	नागौर	4	8	6	1216	35
21	पाली	4	7	8	824	1[illegible]
22	सवाई माधोपुर	4	11	6	1531	11[illegible]
23	सीकर	3	6	7	810	2[illegible]
24	सिरोही	2	5	5	423	2[illegible]
25	टोंक	2	6	6	1006	8[illegible]
26	उदयपुर	6	17	16	3116	4[illegible]
27	धौलपुर	2	4	3	1771	16

जनगणना 1981

राजस्थान की जिलेवार जनसंख्या, 1981

राज्य/जिला	1981	क्षेत्रफल [वर्ग कि० मी० म]	जनस[illegible] का घ[illegible] [प्रति कि० मी[illegible]
राजस्थान	34,102,912	342,239	[illegible]
जयपुर	3,406,104	14,068	[illegible]
उदयपुर	2,351,639	17,279	
गंगानगर	2,014,471	20,634	
भरतपुर	1,879,066	8,100	
अलवर	1,759,057	8,330	

1	2	3	4
जोधपुर	1,650,933	22,850	72
नागौर	1,624,351	17,718	92
कोटा	1,541,557	12 436	124
सवाई माधापुर	1,532 652	10,527	146
श्रजमेर	1 431,609	8,481	169
सीकर	1,373 066	7,732	178
भीलवाडा	1,308,500	10,455	125
पाली	1,271 835	12,387	103
चित्तौडगढ	1,230,628	10,856	113
झुझुनू	1,193,146	5,928	204
चूरू	1,176,170	16,830	70
बाडमेर	1,113,823	28,387	39
जालौर	902,649	10,640	85
बासवाडा	885,701	5,037	175
बीकानेर	840,059	27,244	31
झालावाड	784,982	6,219	126
टोंक	783 796	7,194	109
डूगरपुर	680,865	3,770	181
बूंदी	586,596	5,550	106
सिरोही	540,520	5 136	105
जैसलमेर	239,137	38,401	6

प्रत्येक जिले की जनसख्या का राज्य की आबादी मे अनुपात

जिला	कुल जनसख्या का प्रतिशत 1981	स्थान 1981
गगानगर	5 91	3
बीकानेर	2 46	20
चूरू	3 45	16
झुझुनू	3 50	15
श्रलवर	5.16	[illegible]
भरतपुर	5 11	4
सवाई माधोपुर	4 49	9
जयपुर	9 99	1

1	2	
सीकर	4 02	11
अजमेर	4 20	10
टोंक	2 30	22
जैसलमेर	0 70	26
जोधपुर	4 46	6
नागौर	4 76	
पाली	3 73	1
बाडमेर	3 27	1
जालौर	2.65	18
सिरोही	1 58	2
भीलवाडा	3 84	1
उदयपुर	6 89	
चित्तौडगढ	3 61	1
डूंगरपुर	2 00	2
बांसवाडा	2 60	1
बूंदी	1 72	2
कोटा	4 52	
झालावाड	2 30	2

राज्य मे गत 80 वर्षों मे जिलो मे हुई जनसख्या वृद्धि दर का प्रतिशत

जिला	प्रतिशत वृद्धि (1901–81)	जिला	प्रतिशत वृद्धि (1901–81
1. गगानगर	1304 38	14 नागौर	209 86
2 बीकानेर	341 07	15 पाली	222 93
3. चूरू	353 04	16 बाडमेर	255.73
4 झुंझुनू	249 31	17 जालौर	232 63
5. अलवर	106 20	18 सिरोही	231 67
6 भरतपुर	109 56	19 भीलवाडा	271 07
7. सवाई माधोपुर	149 17	20 उदयपुर	325 91
8. जयपुर	181 20	21 चित्तौडगढ	303 50
9. सीकर	194 05	22 डूंगरपुर	580 16
10 अजमेर	171.23	23 बांसवाडा	435 65
11. टोंक	200 54	24 बून्दी	242 58
12. जैसलमेर	217 97	25 कोटा	233 51
13 जोधपुर	288 63	26 झालावाड	210 24

जनसंख्या का घनत्व

जिला	घनत्व में वृद्धि [1971-81]	तुलनात्मक स्थान 1981	1971
जयपुर	65	1	2
भरतपुर	48	2	1
अलवर	44	3	3
झुंझुनू	44	4	4
डूंगरपुर	40	5	5
सीकर	43	6	6
बासवाडा	46	7	8
अजमेर	34	8	7
सवाई माधोपुर	33	9	9
उदयपुर	32	10	10
झालावाड	26	11	12
कोटा	32	13	13
चित्तौडगढ	26	14	14
टोंक	22	15	15
बूंदी	25	16	17
सिरोही	22	17	16
पाली	25	18	18
गंगानगर	30	19	20
नागौर	21	20	19
जालौर	22	21	21
जोधपुर	22	22	23
चूरू	18	23	22
बाडमेर	12	24	24
बीकानेर	10	25	25
जैसलमेर	2	26	26

स्त्री पुरुष अनुपात

1000 से अधिक	950 से 999	900 से 949	849 और कम
डूंगरपुर 1045	बासवाडा 984	पाली 948	जयपुर 896 भरतपुर 833
	उदयपुर 979	जालौर 944	कोटा 894 जैसलमेर 830
	झुंझुनू 970	भीलवाडा 943	बूंदी 889

सीकर 968 अजमेर 930 गंगानगर 881
सिरोही 967 टोंक 929 जोधपुर 878
नागौर 962 झालावाड़ 927 सवाईमाधोपुर 868
चूरू 957 बाडमेर 909
चित्तौडगढ 951 बीकानेर 902
अलवर 900

साक्षरता

जिला	1971–81 के दौरान प्रतिशत वृद्धि		
	व्यक्ति	पुरुष	स्त्रियां
1. गंगानगर	26.60	2.336	38.90
2. बीकानेर	5.00	3.89	7.81
3. चूरू	14.03	14.82	12.88
4. झुंझुनूं	19.61	18.04	36.47
5. अलवर	32.24	30.18	44 06
6. भरतपुर	35.98	33.47	46.98
7. सवाई माधोपुर	40.76	38.70	53.86
8. जयपुर	30.89	29.15	36.94
9. सीकर	27.23	25.91	35.62
10. अजमेर	15.54	14.07	20.74
11. टोंक	31.90	32.26	35.05
12. जैसलमेर	9.84	7.78	29.95
13. जोधपुर	21.00	17.51	28.95
14. नागौर	27.57	28 59	27.08
15. पाली	26.98	26 76	27.69
16. बाड़मेर	13-14	14.93	8.82
17. जालौर	35.93	36.08	38.23
18. सिरोही	18.59	18.30	20.81
19. भीलवाड़ा	30.93	29.26	44.14
20 उदयपुर	25.50	23 29	36.77
21. चित्तौड़गढ़	24.71	21.86	42.10
22. डूंगरपुर	28.72	27.57	38 64
23. बांसवाड़ा	35.10	32.28	46.97
24 बूंदी	24 55	22 59	33.54
25. कोटा	26 23	22.80	39.11
26 झालावाड़	26 23	25 44	31.39

निम्न तालिका मे विभिन्न जिलो की कुल जनसख्या को अलग-अलग साक्षरता दर के अनुसार साक्षरता दर की श्रेणियो मे वर्गीकृत किया गया है—

साक्षरता दर की श्रेणिया	जिलो का नामा साक्षरता दर		
25 01 एव अधिक	अजमेर 35 01	कोटा 31 91	जयपुर 31 06
	झुंझुनू 27 81	बीकानेर 27 11	अलवर 26 09
	जोधपुर 25.87	भरतपुर 25 85	गगानगर 25 56
20 01 से 25 00	सीकर 24 95	सवाई माधोपुर 22 93	झालावाड 22 79
	उदयपुर 21 85	चित्तौडगढ 21 85	पाली 21 84
	चूरू 21 62	टोंक 20 26	
15 01 से 20 00	बूंदी 19 94	सिरोही 19 90	भीलवाडा 19 77
	नागौर 19 25	डूंगरपुर 18 42	बासवाडा 16 78
10 01 से 15 00	जैसलमेर 14 73	जालौर 13 77	बाडमेर 11 97
10 00 से कम	शून्य		

प्राकृतिक स्थितिया

राजस्थान को भौगोलिक स्थिति के अनुसार चार प्राकृतिक भागो मे बाटा जा सकता है। राजस्थान के बहुत बडे भाग मे रेगिस्तान है तो अरावली की पहाडिया भी यहा दूर तक फैली हुई हैं।

(1) उत्तर-पश्चिमी रेगिस्तानी क्षेत्र
(2) अरावली पर्वत मालाओ से घिरा मध्य भाग
(3) दक्षिण-पूर्वी क्षेत्र का पठारी भाग
(4) पूर्वी क्षेत्र मे मैदानी भाग।

1. रेगिस्तानी क्षेत्र

राजस्थान का बहुत बडा हिस्सा थार के रेगिस्तान का भाग है। यहा पर रेत की आधिया चलती रहती हैं जो इतनी तेज होती हैं कि टीला को एक से दूसरे स्थान पर हटाती रहती हैं। रेगिस्तानी क्षेत्र मे जोधपुर डिवीजन के अधिकाश जिले यथा बाडमेर, जैसलमेर, जोधपुर, नागौर, जालौर, पाली तथा बीकानेर डिवीजन के तीनो जिले गगानगर, बीकानेर और चूरू आते हैं। जयपुर डिवीजन के झुंझुनू और सीकर जिले के कुछ हिस्से भी इसी मे शामिल है।

रेगिस्तान के कई जिलो बाडमेर, जैसलमेर आदि मे आबादी अपेक्षाकृत बहुत कम है। 38 हजार वर्ग किलोमीटर क्षेत्र के जैसलमेर जिले मे तो केवल एक विधानसभा क्षेत्र है और एक वर्ग किलोमीटर में आबादी का घनत्व केवल 6 है। इन रेगिस्तानी क्षेत्रो मे चारो ओर रेत के टीले ही नजर आते हैं दूर दूर तक आबादी नहीं मिलती, पेयजल का अभाव भी यहा बहुत है। कई स्थानो पर तो कुए तीन सौ फीट तक गहरे हैं। लोगो को पानी लाने के लिए दस मील तक चलना पडता है।

इस क्षेत्र की मुख्य नदी लूनी है जो कभी-कभी ही बहती नजर आती है। यह नदी अजमेर के पास पहाडियों में से निकलती है और कच्छ के रन मे जाकर गिरती है।

रेगिस्तानी क्षेत्र म कुछ खारे पानी की झीलें भी हैं जिनसे नमक बनाया जाता है।

2 अरावली पर्वत का मध्यवर्ती भाग

अरावली की पहाडिया राज्य के दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व की ओर फैला हुई हैं। ये पहाडिया इस तरह फैली हुई हैं कि राजस्थान दो भागो मे बटता नजर आता है। उदयपुर डिवीजन के बासवाडा, डूगरपुर, उदयपुर, और सिरोही जयपुर, सीकर, अलवर जिल म पहाडिया फैली हुई है। अरावली पर्वतमालाओं की औसत ऊंचाई तीन हजार फीट है और कुल लम्बाई सात सौ किलोमीटर से ज्यादा है

अरावली पर्वतमालाओं के पश्चिमी ढाल की ओर वर्षा कम होने से यह सूखा नजर आता है लेकिन पूर्वी ढाल की ओर अच्छी वर्षा होन स वह हरा भरा है इसी क्षेत्र मे वन भी हैं।

अरावली की कुछ पहाडियो की ऊचाई इस प्रकार है गुरु शिखर 1722 मीटर, जरगा 1310 मीटर, कुभलगढ 1244 मीटर, गोरम 936 मीटर, साड माता 930 मीटर और तारागढ 914 मीटर। गुरु शिखर राज्य के एक मात्र हिल स्टेशन माउन्ट आबू पर एक दर्शनीय स्थल है।

3. पूर्वी मैदानी भाग

राजस्थान के पूर्वी हिस्से मे भरतपुर, अलवर व सवाई माधोपुर के अलाव टोंक भीलवाडा व जयपुर जिले का कुछ भाग भी आता है। इस मैदानी इलाके मे फसल काफी अच्छी होती है और यहा सिंचाई के भी काफी साधन उपलब्ध है+ इस क्षेत्र म वर्षा भी अच्छी होती है। उपजाऊ क्षेत्र होने के कारण यहा पर आबादी का घनत्व भी बहुत है।

4. दक्षिण पूर्व पठारी क्षेत्र

हाडौती क्षेत्र मे आने वाले तीनो जिले कोटा, बूदी व झालावाड तथा इनके साथ ही जुडा चित्तौडगढ जिला पठारी क्षेत्र है। यहा चम्बल नदी बहती है जिससे खेती काफी होती है वहीं जगल भी बहुतायत म हैं। यह क्षेत्र मालवा के पठार का अग है और मध्यप्रदेश से जुडा हुआ है। चम्बल नदी के किनारे बसा कोटा शहर आज प्रदेश की प्रमुख औद्योगिक नगरी है वहीं चम्बल से बिजली भी पर्याप्त मात्रा म मिलती है।

नदिया और झीलें

राजस्थान का बहुत बडा हिस्सा थार रेगिस्तान का क्षेत्र है तो यहा प्राकृतिक स्रोतों की भी कमी नहीं है। अरावली स निकली कई नदिया राजस्थान के बहुत बडे भाग को सींचती हैं। इसके अलावा भी यहा कई प्रमुख झीलें हैं जो

पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र हैं वहीं मत्स्य पालन के काम भी आती हैं। उदयपुर को तो झीलों की नगरी ही कहा जाता है।

चम्बल—राजस्थान मे बहने वाली सबसे बडी नदी है। हाडोती क्षेत्र की बहुत बडी आबादी का पेट यही नदी पालती है इसके पानी ने पूरे क्षेत्र को हरा भरा बना दिया है। यह नदी विन्ध्याचल पर्वत से निकलती है और उज्जैन, इन्दौर होती हुई चौरासीगढ मे निकट राजस्थान मे प्रवेश करती है। चौरासीगढ के पास नदी का पाट काफी चौडा है लेकिन उसके बाद यह नदी पथरीली घाटियो मे से गुजरती है जो बहुत ही सकडा मार्ग है। इस नदी पर कोटा से पहले तीन बडे बाध गाधीसागर, राणा प्रतापसागर और जवाहर सागर बने हुए हैं। राजस्थान का पहला परमाणु बिजली घर भी इसी के किनारे रावतभाटा म बना हुआ है। बाधो से सिंचाई के अलावा बिजली भी उत्पादित की जाती है। कोटा बैराज भी इसी नदी पर बना है। कोटा से आगे यह मध्य प्रदेश के शिवपुरी, भिण्ड, मुरैना जिलो के पास से होती हुई उत्तर प्रदेश में यमुना नदी मे जाकर मिल जाती है। तब तक यह एक हजार किलोमीटर से अधिक लम्बे मार्ग पर बह चुकी होती है। चम्बल के खण्डहर डाकुओ की आश्रय स्थली के रूप मे प्रसिद्ध हैं।

बनास नदी—राजस्थान की दूसरी बडी नदी है जो प्रदेश मे ही 5 सौ किलोमीटर से अधिक लम्बे मार्ग पर बहती है। बनास चम्बल की सहायक नदी मानी जाती है। यह नदी उदयपुर जिले के खमनोर के पास अरावली की पहाडियो से निकलती है और भीलवाडा, टोक, सवाई माधोपुर जिलो में बहती हुई चम्बल मे गिरती है। बनास नदी म भी कई छोटी नदिया मोरेल, खारी, बेडच, कोठारी आदि आकर गिरती हैं। बनास नदी पर अभी कोई बडा बाध बना हुआ नही है पर टोक म राजमहल के पास एक बाध बनाने की योजना है, जिससे जयपुर शहर को पीने का पानी उपलब्ध कराने का प्रस्ताव है।

माही नदी—माही नदी भी राजस्थान की एक बडी नदी है, यह मुख्य रूप से बासवाडा, डूगरपुर जिला मे बहती है और गुजरात मे चली जाती है। यह नदी भी अरावली पहाडियो से निकलती है। इस पर बासवाडा के पास माही बजाज-सागर बाध बनाया जा रहा है जहा बिजली भी बनाई जायेगी। इस नदी पर गुजरात म कडाना बाध भी बनाया गया है।

बाणगगा नदी—इस नदी को भी प्रदेश के मैदानी भाग की उपयोगी नदी कहा जा सकता है। यह नदी जयपुर जिले मे शाहपुरा के पास से निकलती है। जमुवारामगढ मे इस पर बाध बनाया गया है जिससे जयपुर के लोगो को पीने का पानी मिलता है। वर्षा म इसके पानी से अक्सर भरतपुर जिले की बहुत बडी भूमि डूब मे आती है जिससे वहा की रबी की फसल बहुत ही अच्छी होती है। यह नदी भी आगरा के पास यमुना नदी म जाकर गिरती है।

घग्घर नदी—कालका के पास हिमालय की पर्वत श्रेणियों से निकलती है। यह राजस्थान के गगानगर जिले मे बहती है और रेगिस्तान मे विलीन हो जाती है। घग्घर की नाली में हनुमानगढ के आस पास के किसान चावल की खेती करते है।

लूनी नदी.—रेगिस्तानी क्षेत्र की प्रमुख नदी है। इसकी सहायक नदिया मे बाडी, मीठडी, सूकडी आदि हैं। यह नदी अजमेर के पास नाग पहाड से निकलती है और रेगिस्तानी क्षेत्र म 320 किलोमीटर बह कर कच्छ के रन मे जाकर गिर जाती है। 1979 मे इस नदी मे आई बाढ ने तबाही मचा दी थी।

काली सिंध, पार्वती, साबी आदि कुछ अन्य छोटी नदिया भी हैं, जो राजस्थान मे बहती है पर ये सभी वर्षा के मौसम मे बहने वाली नदिया हैं।

प्रमुख झीलें

राजस्थान मे झीलें भी काफी सख्या म हैं। यहा खारे व मीठे दोनो पानी की ही झीलें हैं। खारे पानी की झीलें होने से राजस्थान नमक उत्पादन करने वाला एक प्रमुख राज्य है।

खारे पानी की मुख्य झीलें साभर, पचपदरा, डीडवाना, लूणकरणसर म हैं। साभर झील जयपुर जिले मे है और नमक उत्पादन का सबसे बडा केन्द्र है। पचपदरा झील बाडमेर जिले मे, डीडवाना नागौर जिले मे और लूणकरणसर बीकानेर जिले मे है। जोधपुर जिले के फलौदी क्षेत्र मे भी नमक बनाया जाता है।

मीठे पानी की झीलें पूरे राज्य म फैली हुई है। उदयपुर जिला झीलों की दृष्टि से समृद्ध कहा जा सकता है। उदयपुर शहर मे ही पिछोला, फतहसागर व उदयसागर झीलें हैं वही जयसमन्द और राजसमन्द झीलें भी इसी जिले म है।

अजमेर मे आनासागर, फाईसागर, जयपुर जिले मे मानसरोवर, रामगढ बधा, मावठा, सिलीसेढ व जयसमन्द (अलवर), बूंदी मे नवलखा सागर, बीकानेर म गजनेर अनूपसागर, भरतपुर मे घना अभयारण्य झील, धौलपुर मे तालाबशाही, जैसलमेर मे धारसी सागर, जोधपुर मे बालसमन्द, प्रताप सागर, उम्मेद सागर कैलाना प्रसिद्ध झीलें है। कोलायतजी व पुष्कर सरोवर भी प्रसिद्ध हैं।

जलवायु

राजस्थान की जलवायु आम तौर पर गर्म व शुष्क मानी जाती है। वर्षा कम होने के कारण आम तौर पर मौसम गर्म ही रहता है। यहा पेयजल की भी बहुत कमी है। राज्य के 33 हजार मे से 24 हजार गावो मे पीने के पानी की कमी है। प्रदेश के रेगिस्तानी क्षेत्रो मे सर्दी की ऋतु मे कडाके की ठण्ड और गर्मी मे झुलसा देने वाली गर्मी पडती है लेकिन रातें सुहावनी होती हैं।

रेगिस्तान म गर्मी के दिन परेशानी के होते हैं। आम तौर पर वर्षा की कमी स यहा अकाल पडता है और लोगो को पशुओ के साथ रोजगार की तलाश दूसरी जगह जाना पडता है।

इसके ठीक विपरीत पूर्वी प्रदेश की जलवायु अपेक्षाकृत कम गर्म है। रियाली होने के कारण भी लू कम ही चलती है। अधिक वर्षा के कारण मौसम ठण्डा ही रहती है। दक्षिणी राजस्थान बासवाड़ा, डूगरपुर, उदयपुर, कोटा, झालावाड जिलों में तो घने वन हैं जो जलवायु को और ठण्डा रखते हैं और स्वास्थ्यवर्धक भी है।

राजस्थान के प्रमुख स्थानो की औसत वर्षा और तापमान इस प्रकार है—

औसत वर्षा	1 अजमेर	52 73	2. जयपुर	54 82
(सेन्टीमीटर में)	3 अलवर	61 16	4 जैसलमेर	16 40
	5 बासवाडा	92 24	6 जालौर	42 16
	7 बाडमेर	27 75	8 झालावाड	100 47
	9 भरतपुर	67 15	10 झुंझुनू	44 45
	11 भीलवाडा	69 90	12 जोधपुर	31 87
	13 बीकानेर	26 37	14 कोटा	88 56
	15 बून्दी	76 41	16 नागौर	38 86
	17 चित्तौड	85 21	18 पाली	49 04
	19 चूरू	32 55	20 सवाईमाधोपुर	68 92
	21 डूगरपुर	76 17	22 सीकर	46 61
	23 गगानगर	25 37	24 सिरोही	63 84
	25 टोंक	61 36	26 उदयपुर	62 45
			27 धौलपुर	84 00

वर्षा माउन्ट आबू में सर्वाधिक 160 से० मी० तक हो जाती है वहीं पूरे जैसलमेर जिले म वर्षा का वार्षिक औसत केवल 16 से० मी० ही है।

तापमान—राजस्थान के पूर्वी हिस्से मे गर्मी मे अधिकतम तापमान धौलपुर मे 47 से 49 डिग्री सन्टीग्रेड तक पहुचता है वहीं पश्चिमी राजस्थान म कहीं भी 45 डिग्री सेन्टीग्रेड से कम नही रहता। सर्दियो म बीकानेर, चूरू, पिलानी, धौलपुर आदि ऐसे स्थान हैं जहा तापमान शून्य से भी नीचे चला जाता है।

वनस्पति व मृदा

राजस्थान मे जलवायु की भिन्नता है इसी वजह से यहा वनस्पति भी अलग अलग प्रकार की पाई जाती है। थार के रेगिस्तान मे बेर, बबूल, कीकर की झाडिया ही हमे नजर आती हैं पर वहा की मिट्टी मे यह विशेषता है कि एक बौछार पड़ जाये तो सेवण घास बहुत अच्छी हो जाती है। कांटेदार झाडिया पश्चिमी भाग मे अधिक मिलती है। इन झाडियो के कारण ही वहा पर ऊट व बकरी जैसे पशु बहुतायत मे होते हैं जिनका यह भोजन है। रेगिस्तान मे अब

कुछ जगह चरागाहों का भी विकास किया गया है। वर्षा होने पर यह
मूंग, मोठ का अच्छी पैदावार हो जाती है।

उत्तर पूर्वी मैदानी भाग के उपजाऊ होने से यहां गेहूं, जौ, चना,
गन्ना आदि की पैदावार अच्छी होती है।

अरावली के पहाडी प्रदेश में हमें अर्द्ध शुष्क जमीन में पैदा होने वाली
स्पति नजर आती है। यहां भूमि पहाड़ी होती है फिर भी खेती ठीक हो जाती
क्योंकि यहां वर्षा का औसत करीब 40 सेन्टीमीटर है। प्रदेश के पूर्वी मैदान
वर्षा का औसत 60 सेन्टीमीटर से अधिक है। यहां गेहूं, चना, तिलहन,
आदि पैदा होता है।

अरावली के पहाडी प्रदेश के अलावा दक्षिण के पठारी प्रदेश
मूंग, मोठ, गेहूं के अलावा उदयपुर संभाग में मक्का और कोटा डिवीजन के
में ज्वार की खेती होती है।

राजस्थान की मिट्टी

राजस्थान में जलवायु के अनुसार मिट्टी भी अलग-अलग है। इस
बावजूद भी यहां बालू या रेतीली मिट्टी अधिकांश हिस्से में पायी जाती है। इ
मुख्य कारण यहा रेगिस्तान का होना है।

राज्य में मुख्य रूप से रेतीली मिट्टी, लेटेराइट, लाल मिट्टी, काली मि
तथा दोमट अथवा कछार मिट्टी पाई जाती है।

रेतीली मिट्टी—पश्चिमी राजस्थान में फैली हुई है। रेगिस्तानी जि
जैसलमेर, बाड़मेर, जोधपुर, जालौर, बीकानेर, नागौर, चूरू, गंगानगर, पाली
सीकर में पाई जाती है। पानी के अभाव से यह मिट्टी कृषि के लिये एक
अनुपयुक्त है।

लेटेराइट मिट्टी—कम उपजाऊ होती है और इसमें चूने व हाईड्रोजन
कमी रहती है। यह मिट्टी मुख्य रूप से बांसवाड़ा व चित्तौड़गढ़ जिलों में प
जाती है।

लाल मिट्टी—में पोटाश व चूना तो काफी होता है लेकिन नाइट्रोजन
फास्फोटिक एसिड कम होता है। यह मिट्टी बांसवाड़ा, डूंगरपुर, सिरोही व
अजमेर जिलों में मिलती है।

काली मिट्टी—काफी उपजाऊ होती है और कपास की खेती में अ
होती है। यह मिट्टी कोटा व उदयपुर डिवीजन के जिलों में पाई जाती है।

दोमट या कछारी मिट्टी—प्रदेश के मैदानी भाग में पाई जाती है।
पैदावार के लिए यह बहुत अच्छी मिट्टी होती है। यह मिट्टी जयपुर, भरत
अलवर, बूंदी, टोंक, तथा सवाईमाधोपुर जिले में मिलती है।

पशुधन

राजस्थान में पशुधन काफी संख्या में उपलब्ध है। थार के रे

8 लाख 78 हजार थी जिसमे 5 वर्षों मे 6 38 प्रतिशत की बढोतरी हुई और 1977 की पशुगणना के अनुसार इनकी आबादी 4 करोड़ 13 लाख 59 हजार गई।

ऊंट—देश मे ऊंटो की तादाद 12 लाख आकी गयी है जिसमे से 68 तिशत राजस्थान मे है और राजस्थान का ऊट सबसे बढिया है। राजस्थान की मरुस्थली मे आज भी ऊट सबसे ज्यादा काम की चीज है। खेत मे हल-चलाने, ानी भरने और माल ढोने के साथ-साथ सवारी करने मे ऊट ही एक सवारी है ो गाव-गाव म पहु च सकता है। बीकानेर का गगा रिसाला ऊट पर ही बना है ो गणतन्त्र दिवस की परेड मे आज भी अपना सानी नही रखता। ऊट राजस्थान रेगिस्तान का प्रतीक है। इसे रेगिस्तान का जहाज भी कहा जाता है।

राजस्थान मे चार नस्लों के ऊट पाये जाते है जिनमे बीकानेरी और ारवाडी नस्ल के ऊट ज्यादा काम के समझे जाते हैं। इनके पैरो के नीचे की ड्डी ज्यादा चौडी होती है जो मिट्टी मे धसती नही है। इनका शरीर भी कुछ यादा मजबूत होता है। जैसलमेरी ऊट दौडने म सबसे अच्छा होता है। चौथी क़िस्म का ऊट राजस्थान के गैर रेगिस्तानी इलाकों मे पाया जाता है। इसका कद कुछ छोटा होता है।

बीकानेर मे एक ऊट फार्म है जहा ऊट की नस्ल सुधार के लिए इलाके े चुने हुए ऊट रखे जाते है। इस समय फार्म पर 134 ऊट और ऊटनिया है। नसे अच्छे किस्म के ऊट तैयार करके पचायत समितिया की मार्फत बाटे जाते है। अगर कोई किसान सीधा भी खरीदना चाहे तो वह फार्म पर खरीद केता है।

550 फीट गहरा एक नलकूप भी बनाया हुआ है, जिसमे बकानेर का सबसे अच्छा पानी, अच्छी मात्रा मे है।

गाय भैंस—इनकी सख्या भी राजस्थान मे बहुत है और पूरे राजस्थान इन्हें पाला जाता है। राजस्थान की गायो और बैलो की कई नस्लें प्रसिद्ध है। ाठी नस्ल की गाय व नागोर के बैल पूरे देश मे प्रसिद्ध हैं।

भेड़-बकरी—रेगिस्तानी क्षेत्रो मे भेड-बकरिया विशेष रूप से पाली जाती । इसका मुख्य कारण इनका वहा पैदा होने वाली झाडियो व काटेदार पौधा ी पत्तिया खाकर गुजारा करना है। देश की 40 प्रतिशत भेडें राजस्थान मे ही और वह ऊन उत्पादन म अग्रणी है। बकरियो से भी जूट पट्टी उद्योग विकसित हुआ है।

भेड़ो से करीब 16 लाख टन ऊन हर साल मिलती है। इनसे ...
संख्या में ऊन, मांस व दूध प्राप्त करने के लिए राज्य में ... फार्म ... होल्सटीन ...
हैं। इनका उत्पादन बढ़ाने में ... ...
भी लगाई गई हैं। इसके परिणाम भी काफी सफल रहे हैं। भेड़ फार्म इस
सीकर जिले में ... टोंक जिले में ... और
... है।
बैलों की नस्ल सुधारने में ... ... फार्म बनाये गये हैं
सूअर के मांस को पैक करके बेचने के लिये 19 म ... और
प्रजनन केन्द्र भी है।

राज्य में बड़ी संख्या में पशुधन को देखते हुए सरकार ने इनकी दे...
के लिये प्रदेश में 317 पशु चिकित्सालय व 93 डिस्पेन्सरियां खोल रखी हैं।

सिंचाई के साधन

राजस्थान के गठन के बाद से ही सरकार ने इस रेगिस्तानी प्रदेश में सिंचाई
साधनों के विस्तार की ओर विशेष ध्यान दिया है। सिंचाई सुविधाओं की बढ़ोतरी
के लिए कई परियोजनाएं शुरू की गयी।

राज्य में इस समय करीब 30 लाख हैक्टर भूमि को सिंचित करने के
साधन जुटाये जा चुके हैं। नहरी परियोजनाओं में भाखड़ा नहर से 7 लाख एकड़,
चम्बल से 4 लाख 12 हजार एकड़, गंगनहर से 6 लाख 84 हजार, राजस्थान
नहर से 7 लाख 12 हजार तथा गुडगांव नहर से 3 हजार एकड़ भूमि में सिंचाई
हो रही है।

छठी योजना में राज्य का लक्ष्य 6 93 लाख हैक्टेयर क्षेत्र में सिंचाई उप-
लब्ध कराने का है जो राष्ट्रीय लक्ष्य का 4 95% है। इसमें से 2 62 लाख हैक्टेयर
क्षेत्र में अन्य वृहद् व मध्यम परियोजनाओं से 40,000 हैक्टेयर क्षेत्र में लघु सिंचाई
परियोजनाओं से तथा 1 25 लाख हैक्टेयर क्षेत्र में कुओं से सिंचाई सुविधा उपलब्ध
हो सकेगी।

राज्य में सिंचाई सुविधाओं के विस्तार के लिए बड़ी, मध्यम व लघु सिंचाई
परियोजनाएं हाथ ली गयी हैं। बड़ी परियोजनाएं 6 हैं वहीं मध्यम 50 लघु
573 तथा सूखा संभाव्य क्षेत्र कार्यक्रम के तहत 339 सिंचाई परियोजनाओं पर
काम चल रहा है।

राजस्थान नहर परियोजना के अतिरिक्त अन्य वृहद् व मध्यम सिंचाई
परियोजनाओं से वर्ष 1980 81 एवं वर्ष 1981-82 में 25,000 हैक्टेयर क्षेत्र
में तथा लघु सिंचाई परियोजनाओं में 21,000 हैक्टेयर क्षेत्र में सिंचाई सुविधाएं
उपलब्ध कराई गई हैं। अतः शेष योजना काल में 2,41,000 हैक्टेयर क्षेत्र में
वृहद् व मध्यम परियोजनाओं से तथा 19,000 हैक्टेयर क्षेत्र में लघु
परियोजनाओं से सिंचाई क्षमता निर्मित करनी होगी। वर्ष 1982-83 में ...

योजना प्रावधान को ध्यान मे रखते हुए वृहद व मध्यम परियोजनाओ से 22 600 हैक्टेयर क्षेत्र मे तथा लघु सिचाई परियोजनाओ से 6,000 हैक्टेयर क्षेत्र मे सिचाई क्षमता निर्मित की जाएगी।

कुए:—

राज्य मे कुए सिचाई का प्रमुख साधन है। निजी पूजी निवेश तथा कृषि पुनर्वित एव विकास निगम द्वारा स्वीकृत परियोजनाओ के अन्तर्गत नये कुओ के निर्माण एव पुराने कुओ को गहरा करवा कर सिचाई के साधन निर्मित किए जाते है। राज्य मे कुल कितने कुए बनते है इसकी कोई निश्चित गणना तो नही होती तथापि परियोजनाओ के अन्तर्गत बनने वाले कुओ और प्रति वर्ष ऊर्जाकृत होने वाले कुओ की सख्या के आधार पर यह अनुमान है कि प्रति वर्ष 25,000 हैक्टेयर क्षेत्र मे इन स्रोतो से सिचाई क्षमता बढती है। वर्ष 1982-83 मे 25,000 हैक्टेयर क्षेत्र मे सिचाई क्षमता वृद्धि का लक्ष्य रखा गया।

सिचाई की क्षमता का समुचित उपयोग हो सके इसके लिए सिचाई विभाग ने जल उपयोग सबधी प्रशिक्षण की व्यवस्था चालू वर्ष मे की है। इस प्रशिक्षण के फलस्वरूप जल क्षमता के अधिकतम लाभप्रद उपयोग की व्यवस्था की जाएगी।

बडी सिचाई परियोजनाओ की सिचाई क्षमता इस प्रकार है—

सिचाई परियोजनाए	सिचाई क्षमता
(1) राजस्थान नहर	15-20 ~~13 00~~ लाख हैक्टर
(2) भाखडा नहर	2 90 " "
(3) चम्बल परियोजना	5 66 " "
(4) माही-बजाज सागर	88 67 हजार हैक्टर
(5) गुडगांव नहर	2 00 " "
(6) जाखम	21 00 " "

चम्बल घाटी परियोजना—चम्बल नदी पर तीन बडे बाध गांधीसागर, राणाप्रताप सागर और जवाहरसागर बनाये गये है जिससे 5 66 लाख हैक्टर भूमि मे सिचाई होने की सभावना है। इन तीनो बाधो पर बिजली घर भी बनाये गये हैं। राजस्थान को बिजली मिलने का यह एक बडा स्रोत है। चम्बल नदी पर ही परमाणु बिजली घर की दो इकाईया लगी है जिनकी बिजली उत्पादन क्षमता 440 मेगावाट है। कोटा डिवीजन मे इस परियोजना से सिचाई होती है।

राजस्थान नहर परियोजना—यह परियोजना राज्य की सबसे लम्बी परियोजना है। इस नहर के पूरी तरह बन जाने पर 13 लाख हेक्टर भूमि मे सिचाई हो सकेगी और यह नहर पश्चिमी राजस्थान की अर्थव्यवस्था की रीढ साबित होगी। इस नहर की कुल लम्बाई 874 किलोमीटर होगी। इसका उद्गम पंजाब के हरिके पाटन बाध से शुरू होती है और पजाब हरियाणा मे 204 किलोमीटर की दूरी पार करते हुए राजस्थान के गगानगर जिले मे प्रवेश करती है। प्रशासनिक सुविधा के लिए नहर परियोजना का कार्य दो चरणो मे बांट दिया

गया था। पहले चरण में (i) 134 मील लम्बी सहायक नहर (ii) मुख्य नहर का 124 मील और आगे तक निर्माण (iii) 1900 मील लम्बी वितरण प्रणाली और इसी के साथ-साथ (iv) लूणकरणसर-बीकानेर जलोत्थान नहर के 80 मील लम्बे पक्के जल मार्ग का निर्माण कार्य शामिल था।

राजस्थान नहर का यह पहला चरण लगभग सात साल पहले पूरा हो चुका है। दूसरे चरण का कार्य अभी चल रहा है। इस चरण में निम्न कार्य आते हैं—

(i) जहाँ पहले चरण का कार्य खत्म होता है वहाँ से आगे मुख्य नहर निर्माण कार्य जारी रखना—मुख्य नहर के पहले चरण के 124 मील के स्थान से शुरू होकर जैसलमेर से करीब 35 मील पर्वोत्तर स्थित ... 168 मील की लम्बाई तक का निर्माण तथा (ii) नहर के दायीं तरफ गुरुत्वीय बहाव द्वारा 6 09 लाख हेक्टेयर कृषि योग्य नियन्त्रण क्षेत्र को सींचने के लिए 2250 मील लम्बी वितरण प्रणाली का निर्माण।

इस नहर का निर्माण पूरा होने पर करीब 30 लाख टन अनाज का उत्पादन प्रति वर्ष होगा वहीं रेगिस्तान का फैलाव भी इससे रुकेगा। गंगानगर, बीकानेर और जैसलमेर जिलों में पीने के पानी की सुविधा भी उपलब्ध कराई जा सकेगी तथा यह भी प्रयास चल रहा है कि इस नहर से एक छोटी नहर निकालकर जोधपुर में भी पीने के पानी की समस्या हल की जा सके।

माही परियोजना

यह दक्षिण राजस्थान की परियोजना है। इस पर बासवाड़ा के पास माही बजाज सागर बांध बनाया जा रहा है जिससे करीब 88 हजार हेक्टेयर भूमि में सिंचाई हो सकेगी। इस बांध से निकली नहर करीब 104 किलोमीटर लम्बी होगी। यहां पानी से बिजली बनाने का संयत्र भी लगाया जा रहा है। गुजरात में माही नदी पर कडाणा बांध बनाया गया है।

व्यास परियोजना

व्यास नदी पर बनी यह परियोजना राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, और हिमाचल की संयुक्त योजना है। इस नदी पर पोंग बांध बनाया गया है, जो 116 मीटर ऊंचा है। इस बांध पर बिजलीघर भी बनाया गया है, जिससे 42 लाख यूनिट बिजली रोजाना राजस्थान को मिलती है।

जवाई परियोजना

लूनी नदी की सहायक जवाई नदी पर बनाई गई परियोजना है जो पाली जिले में अरावली की पहाड़ियों से निकलती है। इस नदी पर एक बांध बनाया गया है जो 923 मीटर लम्बा व 35 मीटर ऊंचा है। इससे पाली व सिरोही जिलों की 46 हजार एकड़ भूमि में सिंचाई होगी। सेई नदी पर भी एक बांध बनाया गया है जिससे एक सुरंग के जरिये पानी जवाई बांध में भेजा जाता है

जवाई बाध से वर्तमान मे जोधपुर शहर को पीने का पानी सप्लाई किया जाता है।

इन बडी सिंचाई परियोजनाओ के अतिरिक्त कई मध्यम सिंचाई योजनाओ पर भी काम चल रहा है। धौलपुर के पास पार्वती नदी पर एक बध बनाया जा रहा है, जिससे 35 हजार एकड भूमि म सिंचाई होगी।

चित्तौड म ओरई नदी पर भी एक बन्ध बनाया जा रहा है, जिससे भीलवाडा व चित्तौडगढ जिलो मे सिंचाई हो सकेगी। लालसोट (जयपुर) मे मोरेल, सरेरी (टोक) म मासी, नाथद्वारा (उदयपुर) मे बनास, बूदी म मेजानदी, चित्तौड मे गभीर, हिण्डौन (सवाई माधोपुर) म जग्गर, जालौर मे सूकडी और करोली (सवाई माधोपुर) मे कालीसिल नदी पर बाध बनाने की योजना है।

बासवाडा मे सोमजी कमला अम्बा एक मध्यम सिंचाई परियोजना है जिस पर कार्य शुरु कर दिया गया है।

प्रशासनिक दृष्टि से बनाये गये सम्भाग, जिला व तहसीलो की जानकारी नीचे तालिका मे दी गई है·

1 जयपुर सम्भाग

जिले	उपखण्ड	तहसील
1 अजमेर	अजमेर	अजमेर
	ब्यावर	ब्यावर
	केकडी	केकडी
	किशनगढ	सरवाड, किशनगढ
2 अलवर	अलवर	अलवर
	बहरोड	मानसूर, बहरोड
	राजगढ	लक्ष्मणगढ, राजगढ, थानागाजी
	तिजारा [मुख्यालय किशनगढ]	किशनगढ, मुण्डावर
3 भरतपुर	बयाना	बयाना, रूपवास, बैर
	भरतपुर	भरतपुर, नदबई
	डीग	डीग, कामा, नगर
4 धौलपुर		बाडी, बसेडी, धौलपुर, राजाखेडा
5 जयपुर	आमेर	आमेर, जमवा रामगढ
	दौसा	बसवा, दौसा, लालसोट, सिकराय,
	जयपुर	बस्सी, चाक्सू, जयपुर, सांगानेर
	कोटपूतली	बैराट, कोटपूतली
	सांभर	दूदू, फागी, फुलेरा

जिले	उपखण्ड	तहसील
6 झुंझुनू	झुंझुनू	चिड़ावा, झुंझुनू
	खेतड़ी	खेतड़ी, नवलगढ़
	नवलगढ़	उदयपुरवाटी
7 सवाई माधोपुर	गंगापुर	बामनवास, नादौती, गंगापुर
	हिण्डौन	हिण्डौन, महुवा
	करौली	टोडाभीम, करौली, सपोटरा
	सवाई माधोपुर	बौंली, खण्डार, स० माधोपुर
8 सीकर	फतहपुर	लछमणगढ़, फतहपुर
	नीम का थाना	श्रीमाधोपुर, नीम का थाना
	सीकर	सीकर, दातारामगढ़
9. टोंक	मालपुरा	देवली, मालपुरा, टोडारायसिंह
	टोंक	टोंक, निवाई, उणियारा

2 बीकानेर सम्भाग

जिले	उपखण्ड	तहसील
1 बीकानेर	बीकानेर [उत्तरी]	बीकानेर, लूणकरणसर
	बीकानेर [दक्षिणी]	नोखा, मगरा, (कोलायत)
2 चूरू	चूरू,	चूरू, सरदार शहर
	राजगढ़	राजगढ़, तारा नगर
	रतनगढ़	डूंगरगढ, सुजानगढ, रतनगढ
3 श्रीगंगानगर	गंगानगर	गंगानगर
	हनुमानगढ	हनुमानगढ सूरतगढ
		सादुल शहर, टीबी, सांगरिया
	करणपुर	करणपुर, पदमपुर
	नोहर	भादरा, नोहर
	रायसिंह नगर	अनूपगढ, रायसिंह नगर

3 कोटा सम्भाग

जिले	उपखण्ड	तहसील
1 झालावाड़	अकलेरा	अकलेरा, खानपुर
	झालावाड़	गंगधार, झालरापाटन
		पचपहाड, पिडावा
2. बून्दी	बून्दी	बून्दी, केशोरायपाटन, नैनवा
		हिण्डोली
3. कोटा	बारा	बारा, किशनगंज, मांगरोल,
		शाहबाद
	छबड़ा	अटरू, छबड़ा, छीपाबड़ौद

जिले	उपखण्ड	तहसील
	रामगज मण्डी	सांगोद, रामगज मण्डी
	कोटा	दिगोद, लाडपुरा, पीपलदा
4 उदयपुर सम्भाग		
बांसवाड़ा	बांसवाड़ा	बांसवाड़ा, गढ़ी, घाटोल
	कुशलगढ़	बागीडोरा, कुशलगढ़
भीलवाड़ा	भीलवाड़ा	मांडल, सहाड़ा, बनेड़ा भीलवाड़ा, रायपुर
	गुलाबपुरा	आसीन्द, हुरडा
	मांडलगढ़	कोटड़ी, मांडलगढ़
	शाहपुरा	जहाजपुर, शाहपुरा
चित्तौड़गढ़	बेगू	बेगूं, भदेसर
	चित्तौड़गढ़	गंगरार, चित्तौड़गढ़
	कपासन	राशमी, कपासन
	निम्बाहेड़ा	बड़ी सादड़ी, भदेसर, छोटी सादड़ी, डूंगला निम्बाहेड़ा
	प्रतापगढ़	प्रतापगढ़
डूंगरपुर	डूंगरपुर	आसपुर, सागवाड़ा, डूंगरपुर, सीमलवाड़ा
5 उदयपुर	भीम,	भीम, देवगढ़
	भाडोल	कोटड़ा, फ्लासिया
	राजसमन्द	आमेट, कुम्भलगढ़, रेलमगरा, राजसमन्द
	सलुम्बर	खेरवाड़ा, सलुम्बर, सराड़ा
	उदयपुर	गिरवा, गोगुन्दा, नाथद्वारा
	वल्लभ नगर	लसाड़िया, वल्लभ नगर मावली
5. जोधपुर सम्भाग		
1 बाड़मेर	बालोतरा	पचपदरा, सिवाना
	बाड़मेर	बाड़मेर, चौहटन, शिव
2 जैसलमेर	जैसलमेर	पोकरण, जैसलमेर
3 जालोर	भीनमाल	जसवन्तपुरा, सांचोर
	जालोर	आहोर, जालोर

जिले	उपखण्ड	तहसील
4 जोधपुर	जोधपुर	बिलाड़ा, जोधपुर, शेरगढ़
	फलोदी	ओसियां, फलोदी
5 नागौर	डीडवाना	लाडनूं, डीडवाना
	मेड़ता	डेगाना, मेड़ता
	नागौर	जायल, नागौर
	परबतसर	नावा, परबतसर
6 पाली	बाली	बाली, देसूरी
	जैतारण	जैतारण, रायपुर
	पाली	पाली
	सोजत	खारची, सोजत
7. सिरोही	माऊन्ट आबू	आबू रोड, पिंडवाड़ा
	सिरोही	रेवदर, शिवगंज, सिरोही

राजस्थान का अतीत

वर्तमान मे राजस्थान का जो स्वरूप है वह स्वतन्त्रता से पहले तक रियासतो, दो ठिकानो और अजमेर मेरवाडा के केन्द्र शासित प्रदेश मे बटा हुआ था। 1 नवम्बर, 1956 को ये सभी क्षेत्र पूरी तरह राजस्थान में मिल गये थे

राजस्थान रियासतो मे बटा हुआ था। वीर राजपूतो की इस भूमि अनेक शूरवीर राजा पैदा किये हैं इसीलिए इसे वीरो की भूमि के अलकरण से सुशोभित किया जाता रहा है। राजपूतो की कर्मभूमि होने के कारण अंग्रेजो इसे राजपूताना रजवाडा भी कहा। राजस्थान का विस्तृत दौरा करने वाले प्रसि अंग्रेज इतिहासकार कर्नल टाड ने भी कहा है—

> "Rajasthan is the collective and classical denomination that portion of India, which is the abode of princes in familiar dialect of these Countries, it is termed 'Raja but by the more refined Raethana corrected to Rajputa the Common designation amongst the british to denote principalities."

प्राचीनकाल मे राजस्थान छोटे छोटे राज्यो मे विभाजित था और उ नाम अलग-अलग थे। जाट, ठाकुर, गुर्जर, चौहान, कछवाहा आदि जाति राजस्थान मे देश के अन्य हिस्सो से आकर यहां बस गई और अपने राज्य स्था कर लिए। इनका राज्य यहां तब हुआ था जब उत्तरी भारत मे मुसलमानो आधिपत्य हो गया था।

मुगलकाल मे इन राज्यो पर राजपूतो का आधिपत्य हो गया था। अंग्रे के राज्य मे भी राजपूत राजा ही यहां रहे। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद 'लौह

सरदार वल्लभ भाई पटेल के प्रयत्नों से सभी रियासतो को मिलाकर एक कर दिया गया और राजस्थान अपने वर्तमान स्वरूप में आ गया।

प्राचीन इतिहास

राजस्थान में सभ्यता व संस्कृति के बहुत पहले से होने की जानकारी मिली है। आर्यन जातियो के यहाँ बसने के प्रमाण पुरातत्व विभाग की खुदाई में मिले हैं। करीब साढ़े तीन हजार वर्ष पुरानी है और तब ये लोग पत्थरो के बनाये हुए मकानों में रहते थे जिनके कमरे काफी बड़े-बड़े और बांसो की छत होती थी। फर्श चिकनी मिट्टी से समतल बनाया जाता था।

यहाँ की खुदाई में बड़ी बड़ी भट्टियाँ मिली हैं जिससे यह अनुमान होता है कि बड़े-बड़े भोज भी ये लोग करते थे। अनाज उगाना, उसे पीसकर भोजन पकाना बनाना और मिट्टी के बर्तन बनाना भी इन्हे आता था। इससे यह सिद्ध होता है कि यहाँ की सभ्यता सिन्धु घाटी की सभ्यता के समकालीन तो थी ही। सबसे पहले आर्य यहाँ आये थे जिन्होने यहाँ अपने राज्य स्थापित किये। उसके बाद शक, मौर्य, हूणों ने भी यहाँ कब्जा कर काफी समय तक राज्य किया। राजपूत राजाओं के यहाँ शासन करने से पहले इन्ही लोगो का राज यहाँ पर था।

राजस्थान का इतिहास भारत में अपना विशिष्ट स्थान रखता है। यह अति प्राचीन है। इसकी दूसरी विशेषता यहाँ के राजाओ और शासकों की वीरता, साहस तथा पराक्रम व बलिदान की कहानी है।

राजस्थान का इतिहास स्त्रियों के क्षेत्र में भी पीछे नहीं है। रानी पद्मिनी पन्नाधाय, मीराबाई आदि स्त्रियों में महानता और चरित्रबल कूट-कूट कर भरा था जो राजस्थान को गरिमा-प्रदान करता है। यहां अनेक महापुरुष भी पैदा हुए। साहित्य तथा कला के क्षेत्र में राजस्थान किसी भी राज्य से पीछे नहीं है। यहा भक्ति साहित्य भी खूब प्रचारित हुआ।

स्थापत्य कला तथा चित्रकला के क्षेत्र में भी राजस्थान का विशेष स्थान है। आबू के देलवाडा के जैन मंदिरो की स्थापत्य कला उच्च कोटि की मानी जाती है, वहीं चित्तौड़, रणथम्भौर तथा भरतपुर के किले अपनी मजबूती तथा बनावट के लिए जग प्रसिद्ध हैं। जैसलमेर, बीकानेर, डीग, आमेर के राजप्रसाद की स्थापत्य कला यह दर्शाती है कि प्राचीन काल में राजस्थान शिल्प की दृष्टि से कितना सम्पन्न था। बाड़ौली और रणकपुर के मंदिर अपनी मूर्तिकला के लिए प्रसिद्ध हैं। चित्रकला में किशनगढ़ तथा बूंदी शैली अपनी मौलिकता के लिए जानी जाती है।

राजस्थान का इतिहास उपरोक्त दर्शायी विशेषताओं के लिए प्रसिद्ध है तथा अन्य राज्यो के इतिहास से अन्तर भी परिलक्षित होता है।

यहां संक्षेप में राजस्थान के इतिहास का विशिष्ट काल की दृष्टि से वर्णन किया गया है :—

कालीबंगा व आहड़ की सभ्यता—कालीबंगा और आहड़ में पुरावशेष प्राप्त हुए हैं, उनसे यह सिद्ध होता है कि यहां की सभ्यता सिन्धु की सभ्यता के समकालीन तो थी ही। सबसे पहले यहां आर्य आये थे, [illegible] अपने राज्य स्थापित किये। उसके बाद शक, मौर्य, हूणों ने भी यहां कब्जा काफी समय तक राज्य किया। राजपूत राजाओं के यहां शासन करने [illegible] इन्हीं लोगों का राज्य यहां पर था।

कालीबंगा की सभ्यता—इस सभ्यता के बारे में यह कहा जाता है कि [illegible] के आसपास फैली थी। यह नदी गंगानगर जिले में बहती थी जो लुप्त हो गई है। इतिहासकार इस सभ्यता [illegible] व हड़प्पा के मानते हैं। इस सभ्यता में लोग पशु पालते [illegible] उन्हें मकान बनाना [illegible] खुदाई में मिट्टी के बर्तन, तांबे के औजार, मूर्तियां, [illegible] चूड़ियां प्राप्त हुई। मकानों की दीवारें [illegible] ईंटों की बनती थी। सड़कों के साथ-स[illegible] बनाई जाती थी।

आहड़ की सभ्यता—यह सभ्यता उदयपुर जिले में आहड़ नदी के आस[illegible] फैली हुई थी। यहां खुदाई में जो सामान मिला है उसे देखते हुए कहा जा सक[ता] है कि यह सभ्यता करीब साढ़े तीन हजार साल पुरानी है और तब के लोग पत्थ[र] के बनाये मकानों में रहते थे जिनमे कमरे काफी बड़े-बड़े और छत बांसों की हो[ती] थी। फर्श को चिकनी मिट्टी से समतल बनाया जाता था।

यहां की खुदाई में बड़ी-बड़ी भट्टियां मिली हैं, जिससे यह अनुमान हो[ता] है कि बड़े-बड़े भोज भी ये लोग करते थे। अनाज उगाना, उसे पीस कर भो[जन] पक्का बनाना और मिट्टी के बर्तन बनाना भी उन्हें आता था। यहां सी[प] मूंगा व मूल्यवान पत्थरों के आभूषण मिले हैं। बर्तनों पर चित्रकारी कर[के] तथा गाय, बकरी, कुत्ता, हाथी आदि जानवरों के विद्यमान होने के प्रमाण [भी] मिलते हैं।

आर्य सभ्यता—इस सभ्यता के यहां होने के प्रमाण अनूपगढ़ औ[र] तरखानवाला डेरा की खुदाई में मिले मिट्टी के बर्तनों से मिलता। आर्य यज्ञ [को] महत्व देते थे। बाद में आर्य गंगा-यमुना के मैदानों की ओर चले गये। तीर्थरा[ज] पुष्कर और अर्बुदाचल का महाभारत काल में भी उल्लेख मिलता है। शाल्य जा[ति] का भी महाभारत में उल्लेख है जो जालौर के भीनमाल, सांचौर और सिरो[ही] जिले में बसी हुई थी। विराट नगर के पास खुदाई में कौरव-पाण्डवों के काल [की] जानकारी मिलती है।

जनपद—ईसा के बाद तीसरी शताब्दी में यहां छोटे-छोटे जनपद होने [की] जानकारी मिलती है। उस समय यहां पर बौद्धों व ब्राह्मणों की संस्कृति होने

मत्स्य जनपद (जयपुर-भरतपुर)

प्रमाण मिलता है। इस अवधि में यहा की सभ्यता काफी विकसित हो गई थी। विभिन्न स्थानो पर खुदाई मे प्राप्त मुद्राए, आभूषण, अभिलेख तथा मदिरो की दीवारो पर खुदे लेख इसके प्रमाण हैं।

सिकन्दर ने जब भारत पर आक्रमण किया तब शिवि व मालव जातिया यहा आकर बस गई थी। मालवो ने जयपुर के पास बागरछल को अपनी राजधानी बनाया था और शिवि चित्तौड के पास 'गिरी' मे जाकर बसे थे। अलवर मे शाल्व व भरतपुर मे मत्स्य जनपद होने के प्रमाण मिलते है। वहा कुछ वर्षो तक मौर्यो का शासन रहा और फिर कुषाणो ने राज्य किया।

चौथी शताब्दी मे यहा जनपद कमजोर हो गए और वे गुप्त वश के अधीन बने रहे। छठी शताब्दी मे हूणो ने यहा आक्रमण किया तो सभी जनपदो को उन्होने तहस-नहस कर दिया। हूण नरेश तोरमाण ने राजस्थान मे अपना राज्य कायम किया था। तोरमाण के पुत्र मिहिर कुल ने यहा पर बाडोली मे अपने इष्टदेव शिव के मन्दिर का निर्माण कराया था जो आज भी कोटा के पास मौजूद है।

मिहिर कुल के साथ ही यहा हूणो का शासन समाप्त हो गया और सातवी शताब्दी मे पहले गुर्जरो का और फिर हर्षवर्धन का राज्य यहा स्थापित हुआ। हर्ष के समय यहा के सभी जनपद उसके अधीन थे पर उसकी मृत्यु के बाद वे फिर स्वतन्त्र हो गये। भीनमाल जनपद का राजा नागभट्ट तो इतना शक्तिशाली हो गया था कि उसने भीनमाल से कन्नौज तक का प्रदेश जीता और उस पर राज किया। वह परिहार वश का राजा था पर उसकी मृत्यु के साथ ही परिहारो का राज्य भी कमजोर पड गया और ग्यारहवी शताब्दी मे महमूद गजनवी ने इन प्रतिहार राजाओ को हराया और गुजरात मे सोमनाथ के मन्दिर को लूटा।

रियासतें और उनका इतिहास

स्वतन्त्रता प्राप्ति से पहले राजस्थान 18 रियासतो, दो ठिकानो और अजमेर के केन्द्र शासित राज्य मे बटा हुआ था। जो रियासतें उस समय बनी हुई थी उनके नाम इस प्रकार हैं—

अलवर, बीकानेर, बासवाडा, बूदी, कोटा, डूगरपुर, जैसलमेर, जयपुर, जोधपुर, झालावाड, उदयपुर, प्रतापगढ, सिरोही, किशनगढ, करौली, टोक, भरतपुर व धौलपुर तथा दो ठिकाने शाहपुरा व कुशलगढ थे। रियासतो मे से टोक मे मुस्लिम नवाब था और भरतपुर व धौलपुर जाट राजाओ से शासित थे। बाकी रियासतो मे राजपूत राजा-महाराजा थे। इन राजपूत रियासतो मे सिसौदिया, राठौड, कछवाहा, चौहान व भाटी वश के राजा थे। इन रियासतो का सक्षिप्त इतिहास इस प्रकार है—

जयपुर—कछवाहा वश के धोलाराय ने सन् 967 मे मीणा जाति के सरदारो को हराकर आमेर राज्य की नीव डाली थी। फिर भी मीणो और राजपूतो मे सघर्ष होता ही रहा और धोलाराय के पौत्र ने अतिम रूप से मीणो को

आमेर को राजधानी बनाया। राजा जयसिंह ने 1727 में जयपुर शहर को बनाया और राजधानी को आमेर से जयपुर ले आये। राजस्थान में विलय के समय सवाई मानसिंह द्वितीय जयपुर के महाराजा थे।

जयपुर में प्रजामण्डल की स्थापना 1931 में हुई थी। 30 मार्च, 1949 को जयपुर रियासत का विलय वृहत राजस्थान में हो गया था और जयपुर इसकी राजधानी बनी थी।

जोधपुर—जोधपुर की स्थापना 1459 में राव जोधा ने की थी और जोधपुर राज्य बनाया था। जसवतसिंह और राजा मालदेव यहाँ के शक्तिशाली शासक हुए हैं।

स्वतन्त्रता संग्राम की चेतना यहाँ सबसे पहले जागृत हुई थी। 1920 मारवाड़ सेवा संघ बना था और श्री जयनारायण व्यास ने बाद में मारवाड़ी हितकारिणी सभा बनाई थी। यहाँ स्वतन्त्रता के लिये कई आंदोलन हुए। जोधपुर रियासत का विलय भी 1949 म संयुक्त राजस्थान म हो गया था।

उदयपुर (मेवाड़)—उदयपुर में सिसोदिया वंश का शासन रहा। मेवाड़ राज्य की स्थापना बप्पा रावल ने सन् 728 में की थी। यहाँ का इतिहास हमेशा स्वतन्त्रता चाहने वाले वीरों का रहा है। महाराणा कुंभा राणा सांगा, उदयसिंह व महाराणा प्रताप यहाँ के वीर शासक रहे हैं।

मेवाड़ रियासत में 1918 म बिजौलिया का प्रसिद्ध किसान आंदोलन हुआ जिसमें बेगू के किसान भी बाद में शामिल हो गये थ। प्रजामण्डल की स्थापना यहाँ 1938 में की गई थी जिसे गैर कानूनी घोषित किया गया था। मेवाड़ रियासत का विलय 1948 म संयुक्त राजस्थान राज्य की स्थापना करके किया गया जिसकी राजधानी उदयपुर बनाई गई थी।

बीकानेर—बीकानेर राज्य की स्थापना पन्द्रहवीं शताब्दी में जोधपुर के राजा राव जोधाजी के पुत्र राव बीकाजी ने की थी। श्री गंगासिंह यहाँ के प्रमुख शासक रहे हैं जिन्होंने गंगनहर का निर्माण करवा करके गंगानगर के इलाके को सरसब्ज बनाया। श्री गंगासिंह ने ही चेम्बर आफ प्रिंसेज का गठन कराया था। बीकानेर में राजनीतिक चेतना जागृत करने का काम महन्त गोपालदास व खूबाराम सर्राफ को है। प्रजा परिषद की नींव यहाँ 1942 म डाली गई। इस रियासत का विलय भी 1949 म संयुक्त राजस्थान म हो गया था।

अलवर—अलवर राज्य की स्थापना सन् 1771 में कछवाहा वंश के राव प्रतापसिंह ने की। अंग्रेज सरकार यहाँ के महाराजा जयसिंह से उस समय नाराज हो गई थी जबकि उन्होंने 1931 म लन्दन म हुई गोलमेज कान्फ्रेन्स म अपने क्रांतिकारी विचार रखे। 1925 म जनता म राजनीतिक चेतना जागृत हुई जबकि नीमूचाना गाँव के बिस्वेदारों के बगावत करने पर महाराजा ने एक सौ बिस्वेदारों को मरवा दिया। अलवर प्रजामण्डल के कार्यकर्ताओं ने 1946 में देश में पूर्ण

जनता सरकार की मांग करते हुए गिरफ्तारियां दी। 1948 में अलवर मत्स्य संघ
मे विलीन हो गया।

भरतपुर—भरतपुर की रियासत स्वाधीनता प्राप्ति तक जाट राजाओ के
हाथ मे थी। इस राज्य की स्थापना 1733 ई० मे सिनसिनवार जाट राजा सूरज-
मल ने की थी। लार्ड लेक ने 1805 ईस्वी मे इस किले का घेराबन्दी कर उसे
जीतने की कोशिश की लेकिन अंग्रेजो की तोपों के गोले किले की मिट्टी की मोटी
दीवार को भेद नहीं पाये। सन् 1900 मे यह रियासत पूर्ण रूप से अंग्रेजो के
अधीन हो पाई। प्रजा मण्डल की स्थापना यहां 1939 मे हुई। 1948 मे इसका
मत्स्य संघ में विलय हो गया।

बांसवाड़ा—बांसवाड़ा राज्य की स्थापना महारावल जगमलसिंह ने 1518
ंगरपुर के दक्षिणी-पश्चिमी भाग को अलग करके की थी। 1948 मे इसका
य राजस्थान मे हो गया।

बूंदी—बूंदी हाडा राजाओ की कर्मभूमि रहा है सन् 1242 मे राजा
ाराजसिंह ने मीणा राजाओ को हराकर बूंदी राज्य की नींव डाली थी। मेवाड़
राजाओं से हाड़ाओं को 15वीं शताब्दी में मुकाबला करना पड़ा। मुगलकाल में
मुगल साम्राज्य के समर्थक रहे। 1948 में इसका विलय राजस्थान में
हो गया।

धौलपुर—धौलपुर रियासत अब अलग जिला में बदल गई है। इस राज्य
की स्थापना का अनुमान 11वीं शताब्दी का है।

डूंगरपुर—डूंगरपुर राज्य पर मेवाड़ के सिसोदिया राजपूतों का प्रारम्भ
से ही शासन रहा है। यहा पर राजनीतिक चेतना भील सेवा मण्डल की स्थापना के
साथ जागृत हुई। 1948 मे इसका विलय राजस्थान में हुआ।

झालावाड़—झालावाड़ राज्य की स्थापना झाला वंशजो ने 1838 ई० में
की थी। इसका विलय भी 1948 मे राजस्थान मे किया गया था।

किशनगढ़—किशनगढ राज्य की स्थापना जोधपुर नरेश के छोटे भाई
किशनसिंह ने 16वीं शताब्दी के अंत में की थी। यह रियासत भी 1948 मे राज-
स्थान मे मिल गई थी।

टोंक—टोंक राज्य का गठन अंग्रेजो ने करवाया था। पिंडारी नेता अमीर
खां को शांति कायम रखने की शर्त पर यह राज्य दिया गया था। 1948 में इसका
विलय भी राजस्थान में हो गया था।

जैसलमेर—जैसलमेर राज्य का प्रादुर्भाव सन् 1156 मे हुआ। इसकी
नींव भाटी वंश के महारावल जैसल ने डाली थी। सन् 1818 मे इस राज्य ने
ब्रिटिश सरकार से संधि करली थी। संयुक्त विशाल राजस्थान मे इसका विलय 15
मई, 1949 को हुआ था।

सिरोही—सिरोही राज्य की स्थापना देवड़ा चौहान राजपूतों ने की थी।

राजस्थान राज्य मे शामिल होने वाला यह अन्तिम राज्य था। 26 जनवरी 1950 को इसका विलय हुआ था।

राजस्थान राज्य का गठन करीब आठ वर्ष मे पूरा हुआ था। 18 मार्च 1948 को मत्स्य सघ की स्थापना हुई जिसमे अलवर, भरतपुर, धौलपुर व करौली रियासतें शामिल की गई। मत्स्य सघ की राजधानी अलवर थी।

मत्स्य सघ की स्थापना के सात दिन बाद ही पूर्व राजस्थान सघ की स्थापना हुई जिसकी राजधानी कोटा शहर को बनाया गया। इस सघ मे बासवाडा, बूदी कोटा, टोंक, डूगरपुर, झालावाड, शाहपुरा, किशनगढ, प्रतापगढ रियासतें शामिल हुई।

तीसरे चरण मे 18 अप्रैल, 1948 को सयुक्त राजस्थान की स्थापना हुई जिसकी राजधानी उदयपुर थी। इस राजस्थान मे उदयपुर व पूर्वी राजस्थान शामिल हुए।

विशाल राजस्थान की स्थापना 30 मार्च, 1949 को हुई जिसमे सयुक्त राजस्थान, जयपुर, जोधपुर, बीकानेर और जैसलमेर को शामिल किया गया। इसकी राजधानी जयपुर बनी। 15 मई, 1949 को मत्स्य सघ भी इसमे शामिल हो गया और इसका नाम सयुक्त विशाल राजस्थान हो गया। 26 जनवरी, 1950 को सिरोही के शामिल होने के बाद राजस्थान सघ कहलाने लगा तथा राजधानी जयपुर ही थी।

राजस्थान के पूर्ण गठन की प्रक्रिया 1 नवम्बर, 1956 को पूरी हुई जबकि केन्द्र शासित अजमेर राज्य, माऊट आबू और सुनेल टप्पा का क्षेत्र भी इसम शामिल हो गया। इसी के साथ प्रदेश का नाम राजस्थान हो गया और राजधानी जयपुर रही।

राजपूत शासकों का इतिहास

राजपूतो का उदय सातवी शताब्दी से माना जाता है। प्राप्त तथ्यो के अनुसार सिकन्दर के आक्रमण के बाद राजस्थान मे कई बहादुर जातिया आकर बस गई थी जिन्होने विभिन्न क्षेत्रो मे अपने राज्य स्थापित कर लिये थे। इसी दौरान शक, कुषाण व हूण भी यहा आकर बसे और दूसरी जातियो से घुलमिल गये। धीरे-धीरे इन लोगो के रहन-सहन, जीविका व व्यवहार मे समानता आ गई। धार्मिक पुरोहितो ने इन्हें क्षत्रिय माना और ये राजपूत कहलाने लगे। राज-पुत्र से ही राजपूत शब्द की उत्पत्ति हुई है।

सातवी शताब्दी के बाद राजस्थान मे न्यूनाधिक रूप मे इनका ही शासन रहा। बारहवी शताब्दी तक जिन राजपूतो वशो ने अपना शासन स्थापित कर लिया था वे इस प्रकार थे—

(1) आमेर के कछवाहा
(2) मेवाड के गुहिल और सिसोदिया

(3) मारवाड के राठौड
(4) साभर के चौहान
(5) चित्तौड के मौर्य
(6) जैसलमेर के भाटी
(7) भीनमाल, प्राबू के चावडा ।

आमेर के कछवाहा राजपूतो के बारे मे कहा जाता है कि सिकन्दर के
क्रमण के समय ही ये ग्वालियर और नरवर से हटकर आमेर में आकर बस गये
। इनके एक वशज दुल्हाराय ने 1137 ई मे बडगुजरो को परास्त करके ढूढाड
ज्य की नीव रखी थी । इसी वश के काकिलदेव ने सन् 1207 ई मे मीणा
जाओ को हरा करके आमेर को जीता और उसे अपनी राजधानी बनाया । बाद
उन्होने मेढ और वैराठ भी यादवो को हराकर जीता । कछवाहा वश के ही
क वशज शेखाजी ने अपना अलग राज्य शेखावाटी के नाम से स्थापित किया ।
न्द्रहवीं शताब्दी तक कछवाहा राजपूतो पर चौहान व गहलोत राजपूतो का प्रभाव
हा पर बाद मे उन्होने मुगल बादशाहो से अपने सम्बन्ध जोड लिये जिससे उनका
भाव काफी बढ गया ।

कछवाहा वश का एक शक्तिशाली राजा पचवनदेव भी था । इसी वश
पृथ्वी राज मेवाड के राणा सागा का सामन्त था जिसने खानवा के मैदान मे
मुगल शासक बाबर से युद्ध किया था । पृथ्वीराज के बाद उसका पुत्र भीमदेव
ही पर बैठा था । भीमदेव के चाचा ने ही आमेर के पास भूमि जीतकर सागानेर
माया था । राणा सांगा की मृत्यु के बाद उसके छोटे भाई भारमल ने भीमदेव के
रतनसिह और आसकरण को मरवा दिया और सन् 1547 मे आमेर पर
पना अधिकार कर लिया । भारमल कूटनीतिज्ञ था । उसने अपनी बेटी का विवाह
ल सम्राट अकबर से कर दिया । इसके बाद उसे मुगलो से पूरी सहायता
नी ।

भारमल के बाद उसके पुत्र भगवानदास ने भी मुगलो से मित्रता कायम
ली और मुगलो की ओर से गुजरात, कश्मीर, मेवाड, अफगानिस्तान मे की
डाइयो मे भाग लिया । भगवानदास की पुत्री मानबाई की शादी अकबर के
त्र शहजादा सलीम से हुई थी । भगवानदास का दत्तक पुत्र राजा मानसिह अकबर
सेना मे सेनापति था । मानसिह ने भी गुजरात, मेवाड, बगाल और अफगा-
स्तान की लडाइया लडी । राणा प्रताप के खिलाफ हल्दीघाटी की लडाई मे मुगल
ना का सेनापति मानसिह ही था । मानसिह को अकबर ने उसके काय से खुश
कर बिहार व बगाल का सूबेदार भी नियुक्त किया था ।

मानसिह के बाद उसका पुत्र भाव सिह आमेर की गद्दी पर बैठा पर उसके
कोई पुत्र नहीं था इसलिए मानसिह के पुत्र मिर्जा राजा जयसिह को गद्दी मिली ।
जयसिह भी मुगलों का वफादार रहा । उसे दक्षिण कधार तथा बिहार मे युद्ध
करने के लिये भेजा गया था । पुरन्दर किले पर घेरा डालकर जयसिह ने शिवाजी

को भी मुगल बादशाह से सन्धि करने के लिये बाध्य कर दिया था। दौरानुर आक्रमण करके लौटते समय औरंगजेब ने उसे जहर देकर मरवा दिया।

मिर्जा राजा जयसिंह के बाद रामसिंह, बिशनसिंह और सवाई जयसिंह आमेर की गद्दी पर बैठे। सवाई जयसिंह ने ही 1727 में जयपुर नगर और उसे राजधानी बनाया। सवाई जयसिंह को ज्योतिष का भी ... देश भर में पांच ... शालाएं स्थापित की जो आज भी ज्योतिषियों के ... आकर्षण का केन्द्र है।

, सवाई जयसिंह को औरंगजेब के ... ने आमेर से ... था। इस पर जयसिंह ने जोध... के ... और मेवाड़ के अमर... मिलकर मुगल सल्तनत से लड़ने की योजना बनाई और जोधपुर व आमेर फिर प्राप्त कर लिये। बहादुरशाह के पुत्र जहांदारशाह ने जयसिंह को मालवा सूबेदार बनाया।

सवाई जयसिंह के बाद प्रतापसिंह गद्दी पर बैठा। उसके कार्यकाल मराठों के लगातार आक्रमणों से राज्य की शक्ति क... थी। के पुत्र जगत सिंह ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी से सधि करली 818)

✓ **मेवाड़ के गुहिल या गहलोत**— राजपूतों का यह वंश काफी प्रबल है। गुहिल या गहलोत वंश को सिसोदिया भी कहा जाता है। इस वंश के देश के विभिन्न भागों में फैले थे, जो मेवाड में एकत्रित होकर शक्तिशाली गये। इन्हें ... का उत्तराधिकारी माना जाता है, जिसके सिक्के साम... स... लय में है। पहले ये ... अन्य राजाओं के ... म... । इसी वंश के रावल ने ... ठवं शताब्दी में मेवाड़ राज्य ... डाल ...।

कहा जाता है कि बप्पा रावल के लिये एक ऋषि हारीत ने उपासना राज्य मांगा था। बप्पा उस समय ऋषि की गौ चराता था। ऋषि की आज्ञा ही बप्पा ने एक स्थान से सोने की मोहरें निकाल कर सेना तैयार की और से चित्तौड़ का राज्य छीन लिया। बप्पा रावल के उत्तराधिकारियों में सिलादित्य, अपराजित, कालभोज, खम्माण प्रथम व द्वितीय, मत्तर, भर्तृ सहायक, अल्लट, नरवाहन, शालिवाहन, शक्तिकुमार, अम्बाप्रसाद सिंह, विजय विक्रमसिंह, रणसिंह आदि हुए। उनके बाद यह राज्य कमजोर पड़ गया। गुजरात के अजयपाल और कीतू चौहान ने इस पर कब्जा कर लिया। तेर... शताब्दी में यहां खूब उथल-पुथल रही। इसी दौरान जैत्रसिंह ने यहां की सभानी और नाडौल के चौहान राजा उदयसिंह को हराया। उदयसिंह पौत्री का जैत्रसिंह के पुत्र के साथ विवाह होने पर उनका वैमनस्य समाप्त गया।

जैत्रसिंह ने इसके बाद मालवा के परमारों को हराया। अल्तमश के को भी उसने भागने पर बाध्य कर दिया। सुलतान नसीरुद्दीन की सेना भी आगे नहीं टिक सकी। जैत्रसिंह के उत्तराधिकारी तेजसिंह, समरसिंह और रतन

बाप्पा रावल → राणा... (handwritten)

बहादुर थे। रतनसिंह की पत्नी रानी पद्मिनी बहुत सुन्दर थी जिसे प्राप्त करने के लिये अलाऊद्दीन खिलजी ने चित्तौड़ पर 1303 ई० मे आक्रमण किया। खिलजी किले पर आठ वर्षों तक घेरा डाले रहा पर उसे सफलता नही मिली। हारकर उसने रतनसिंह से सन्धि की और पद्मिनी को दर्पण मे देखने की इच्छा व्यक्त की। खिलजी का मन उसे देखते ही डोल गया और धाखे से उसने रतनसिंह को गिरफ्तार कर लिया। रतनसिंह को छुड़ाने के लिये सात सौ डोलियो मे छिपकर सैनिक गये और उसे छुड़ा लिया। राजपूत सेना खिलजी से लडत-लडत समाप्त हो गई। पद्मिनी और अन्य राजपूत स्त्रियो ने जोहर करके अपने सम्मान की रक्षा की। इस तरह अलाऊदीन खिलजी का, चित्तौड पर अधिकार हो गया।

रतनसिंह के साथ ही बप्पा रावल का वश समाप्त हो गया। चित्तौड के चारो ओर तुर्को का शासन हो गया वहाँ चौहान व राठौर राजा भी प्रभावशाली हो गये। सीसोद का सरदार हम्मीर इस पर आगे आया और उसने मेवाड का उद्धार किया। खिलजी की मौत के बाद उसने चित्तौड़ के किले पर अपना अधिकार कर लिया। उसने सिसोदिया वश की स्थापना के साथ ही पडोसी-राजाओ को हराकर उन्हे अपना मित्र बनाया। हम्मीद के उत्तराधिकारी क्षेत्रसिह और लक्षसिह ने भी मेवाड के राज्य का विस्तार किया।

लक्षसिह या लाखा ने राठौड़ रणमल की बहिन हसाबाई से विवाह किया था। इससे पूर्व हसाबाई से शादी करने को सरदार चूड़ा ने मना कर दिया था। लाखा के बाद उसका बेटा मोकल गद्दी पर बैठा, पर राज सरदार चूडा ने ही चलाया। मोकल की मां हसाबाई ने चूडा को वहां से हटा दिया और अपने भाई रणमल को बुलाकर चित्तौड पर राठौरो का प्रभाव बढा दिया जिसे बाद मे मोकल ने कम किया।

मोकल का पुत्र कुम्भा मेवाड़ के प्रसिद्ध व गुणवान शासकों मे माना जाता है। उसने 1433 ई० मे राजकाज संभाला और अपनी वीरता से देशद्रोही सामन्तो का सामना किया। कुम्भा ने भीलो को अपनी ओर मिलाया और सरदार चूडा को भी वापस मेवाड बुलाया। रणमल की हत्या के साथ ही मेवाड़ मे राठौड़ो का प्रभाव समाप्त हो गया। कुम्भा ने अनेक किले फतह किये और आबू पर भी विजय प्राप्त की। कुम्भा ने अपने पुत्र का विवाह रणमल के पुत्र जोधा की पुत्री से करके आपसी वैमनस्य समाप्त किया।

कुम्भा रणनीति मे कुशल होने के साथ ही साहित्य और कला का पारखी भी था। महमूद खिलजी को हराकर उसने मालवा पर विजय प्राप्त की जिसकी स्मृति मे उसने कीर्ति स्तम्भ का निर्माण कराया। कुम्भा ने छह महिने बाद महमूद को छोड दिया और मालवा का राज्य उसे वापस कर दिया पर महमूद छह साल बाद फिर चढ आया और कुभलगढ के किले पर कब्जा कर लिया पर चित्तौड का लोहा लिया

सरदार हम्मीर → लाखा → मोकल → कुम्भा → सांगा
→ चूडा

जीतने की उसकी इच्छा पूरी नही हो सकी। कुम्भा ने शम्स खां को हराकर ... का किला जीता। नागौर की हार का बदला लेने के लिये गुजरात के सुल्तान कुतुबुद्दीन ने आक्रमण किया पर आबू से ही हारकर लौट गया। ... गुजरात के शासकों ने इस बार मिलकर फिर हमला किया पर इस बार भी ... गई और ये सेनाए लौट गई।

राजा कुम्भा की उसके बेटे ऊदा ने हत्या कर दी लेकिन उसके भाई रायमल ने उसे मेवाड़ से भगा दिया। रायमल ने माण्डु की सेना को भी ... इस समय मेवाड राज्य कमजोर होता जा रहा था। रायमल के बाद उसका ... संग्रामसिंह उर्फ राणा सांगा गद्दी पर बैठा जिसे राज चलाने मे अपने ही ... स कठिनाइयां झेलनी पडी। राणा सांगा ने अहमदनगर मे लूटपाट करके वहां ... सुलतान को संधि करने पर विवश कर दिया। सांगा ने मालवा के महमूद को ... हराया। दिल्ली के शासक इब्राहिम लोदी ने 1517 मे मेवाड पर चढाई की कि ... लोदी हार गया। राणा सांगा ने सन् 1527 मे खानवा के मैदानो मे पहले मुगल बादशाह बाबर का मुकाबला किया लेकिन हारना पडा।

राणा सांगा के उत्तराधिकारी रतनसिंह, विक्रमादित्य और बनवीर ... लेकिन बाद मे मेवाड का शासक सांगा का बेटा उदयसिंह बना जिसे पन्नाधाय ... अपने बेटे की आहुति देकर बनवीर से बचाया था। उदयसिंह के मारवाड के र... मालदेव से अच्छे सम्बन्ध नही रहे पर शेरशाह सूरी से उसने संधि कर ली थी।

उदयसिंह ने ही उदयपुर का निर्माण कराया था। मुगलो से मुकाबले ... राजपूत हार तो गये लेकिन अकबर की सेना को हानि बहुत उठानी पडी। उद... सिंह के बाद महाराणा प्रताप ने अनेक सकट झेलकर भी मुगलो से संधि नहीं की ... राजा मानसिंह जब उनके यहा आये तो उन्होने उसके ... भी ... नही समझा और अपने पुत्र अमरसिंह को भेज दिया। राजा मानसिंह ने इसे अपमान समझा जिसका परिणाम 1576 के हल्दी घाटी युद्ध के रूप मे साम... आया। इस ऐतिहासिक युद्ध मे महाराणा प्रताप वीरता से लडे पर उन्हे भाग... पडा। उनका प्रिय घोडा चेतक भी मर गया। उसी समय प्रताप को उनके मन्त्री भामाशाह ने अपनी सारी सम्पत्ति देकर सेना तैयार करने के लिये प्रेरित कि... प्रताप ने उससे कई लडाइयां जीती पर चित्तौड का किला हाथ नही आया ... उन्होने अपनी राजधानी चावंड मे बना रखी थी वहीं पर 1597 मे उनकी मृत्यु हुई।

प्रताप के बाद उनका लड़का अमरसिंह मेवाड का शासक हुआ और उन्होंने भी मुगल शासकों से लडाई जारी रखी। शहजादा सलीम के नेतृत्व मे मुगल ... ने 1599 ई० मे मेवाड पर हमला किया जिसका जवाब अमरसिंह ने दिया। सल... फिर उदयपुर से लौट गया। सलीम ने बादशाह बनने के बाद भी मेवाड पर ...

रवाये पर ज्यादा सफलता नही मिली । जहांगीर ने अपने बेटे खुर्रम के नेतृत्व में सेना भेजी जिसने कुछ ठिकाने जीत भी लिये । आखिर में राणा और जहांगीर में संधि हो गई ।

अमरसिंह के बाद उसके पुत्र कर्णसिंह ने भी सन्धि जारी रखी । उसके उत्तराधिकारी जगतसिंह और राजसिंह थे । राजसिंह ने चित्तौड दुर्ग की मरम्मत कराई और औरंगजेब की सहायता उसके बादशाह बनने में की । औरंगजेब ने जब मारवाड पर हमला करके जसवंतसिंह के पुत्र अजीतसिंह को बंदी बना लिया तो दुर्गादास राठौड ने उन्हें छुडाकर मेवाड में रखा इससे राजपूतो व मुगलो में फिर लडाई छिडी पर युद्ध नहीं हुआ क्योंकि औरंगजेब मराठो से लडने के लिए दक्षिण चला गया था । औरंगजेब की मृत्यु के बाद मेवाड में शांति बनी रही और सन् 1818 में ईस्ट इंडिया कम्पनी से संधि के बाद पूरी शांति हो गई ।

मारवाड के राठौड—राजस्थान के वर्तमान रेगिस्तान क्षेत्र जिसमें जोधपुर, व बीकानेर के आसपास के क्षेत्र आते हैं मारवाड कहलाता है । यहा 14वी शताब्दी में प्रतिहार व राठौड राजपूतों ने अपना शासन स्थापित किया । राठौड शब्द राष्ट्रकूट से बना है जो दक्षिण की एक जाति थी । जोधपुर का राठौड वंश बदायू के राव सीहा के उत्तराधिकारियों से बना है जो लूनी और पाली के पास बस गये थे । सोलंकियो के साथ मिलकर इन्होंने सिन्ध के मारू लाखा को पराजित किया भीनमाल के ब्राह्मणो के साथ मिलकर वहा के मुसलमानो को शिकस्त दी । इसी पर वे चुप नही बैठे और भाटियो, चौहानों, भोमियो आदि को भी हराया । इन विजयो से इनका प्रभाव बढा और दो सौ वर्षों की लम्बी अवधि में धीरे-धीरे पूरे मारवाड पर इनका शासन स्थापित हो गया ।

राव सीहा के पुत्र आसथान ने राठौडो की शक्ति को मजबूत बनाया पर जलालुद्दीन खिलजी के साथ लडाई में मारा गया । उसके उत्तराधिकारियों धूहड, रायपाल, कणपाल आदि ने प्रतिहारो, भाटियो व तुर्कों से लोहा लिया । इनके बाद के शासको जालणसी, छाडा व तीडा ने महोबा, अमरकोट व भीनमाल को मारवाड का हिस्सा बनाया ।

वीरमदेव का पुत्र राव चूडा राठौड वंश का बडा शासक था । राव चूडा ने मंडोर के किले को जीता और नागौर के सूबेदार को हराकर तुर्की थाना को जीता । अपने भाई जयसिंह से फलौदी छीन कर उसने उसके चूडा को कुचलने के इरादो पर पानी फेर दिया । भाटियो ने चूडा को उसकी शक्ति कमजोर होने पर हराया और नागौर छीन लिया । इसी युद्ध में चूडा मारा गया ।

राव रणमल चूडा का उत्तराधिकारी बना जिसने अपनी बहिन हंसाबाई की शादी मेवाड के राणा लाखा से की । मेवाड के साथ मिलकर उसने अजमेर और माण्डू को दबाया । रणमल ने ही जालौर भी अपने कब्जे में किया पर सन् 1438 में चित्तौड में उसकी हत्या कर दी गई ।

राव सीहा → आसथान — राव चूडा → राव रणमल → → जोधा

रणमल के पुत्र राव जोधा ने राजा बनते ही मण्डोर के किले को जीतना चाहा पर 15 ५। के अथक प्रयास के बाद ही उसे सफलता मिल पाई को भी उसी ने जीता और . े ,८ का निर्माण 1459 ई० म कराया। जोधा क उत्तराधिकारी राव सातल व राव सूजा थे। राव सातल ने अपने भा वरसिंह को छुडाने के लिये अजमेर पर चढाई की इस पर अजमेर के हाकिम मल्लूखा ने जोधपुर व मेडता पर आक्रमण किया। इसम मल्लू खा की हार हुई पर राव सातल मारा गया।

इसी बीच राव जोधा के लडके बीका न बीकानेर शहर बसाया और आस पास का इलाका जीता। बीका के उत्तराधिकारी नरा व लूणकरण बने जिन्होंने जैसलमेर भी अपने अधिकार मे कर लिया।

राव सूजा का पोता गागा मारवाड का शासक बना तो उसने राणा सांगा के साथ मिलकर नागौर के दौलत खा को हराया। गागा के पुत्र मालदेव न ऽ के सुलतान बहादुरशाह से मेवाड को बचाया और कुम्भलगढ मे छिपे सांगा के पुत्र उदयसिंह को चित्तौड का शासक बनाया। मालदेव मारवाड का १६१। था। उसने नागौर, मेडता जालोर और अजमेर पर भी अधिकार किया था मालदेव ने शेरशाह से हारकर भागते हुए हमायु को सहायता देने से इन्कार दिया। शेरशाह ने भी जोधपुर पर आक्रमण किया पर राजपतो की बहादुरी देखकर उसने ... ठीक समझा कि एक मुट्ठी बाजरे के लिये बादशाहत ठीक नही है।

मालदेव के पुत्र राव चन्द्रसेन ने भी मुगल सम्राट अकबर से कई बार ... किया पर आपसी फूट के कारण जोधपुर अकबर के हाथ म चला गया। ... ने जोधपुर का राज रायसिंह को सौंपा जिसने मुगल साम्राज्य की सेवा की।

चन्द्रसेन के पुत्र उदयसिंह ने मारवाड का शासक बनते ही अपनी पुत्री का विवाह अकबर से किया, जिससे वहा शांति कायम हो गई। उदयसिंह के पुत्र सूरसिंह ने मुगलो के लिये गुजरात सिरोही व दक्षिण म लडाइया लडी। सूरसिंह के पुत्र गजसिंह को दक्षिण का सूबेदार नियुक्त किया गया था। गजसिंह के पुत्र जसवन्तसिंह को मारवाड का शासक स्वीकार किया गया था जिसने शाहजहां की सेवा की पर औरंगजेब के खिलाफ रहा।

जसवंतसिंह की मृत्यु लड़ाई के दौरान ही हो गई थी। उसका पुत्र अजीत सिंह था, जिसे औरंगजेब ने मारवाड़ का शासक नहीं माना और बन्दी बना लिया। वीर दुर्गादास राठौड ने अजीतसिंह व उसकी माता को छुडवाया और उन्हें मेवाड में रखा। दुर्गादास मराठा से भी मिला और आखिर म अजीतसिंह को मारवाड की गद्दी पर बठाने मे सफल रहा। अजीतसिंह का बादशाह स भी समझौता हो गया था लेकिन उसकी जोधपुर में हत्या कर दी गई।

धीरे धीरे मारवाड़ की शक्ति कमजोर होती गई और आन्तरिक कलह व मराठा के लगातार आक्रमण से यह बरबाद हो गया ... सिंह के म सन् 1818 ई० म अग्रेजों से मित्रता क बाद यहा शांत हो गई।

चौहानों का इतिहास—चौहान राजपूतों ने पहले अपना घर बून्दी और

सिरोही मे बनाया। इन्होने पहले सांभर पर अधिकार किया फिर अजमेर और जालोर को भी हथिया लिया। नागौर भी कुछ समय तक इनकी राजधानी रही और बाद मे इन्होंने अजमेर को ही अपनी राजधानी बनाया। धीरे-धीरे इन्होंने अपनी शक्ति बढाई और बारहवी शताब्दी पर इनकी राजधानी दिल्ली हो गई थी। वासुदेव इनका पहला शासक था। पृथ्वीराज प्रथम का पुत्र अजयराज चौहान वश का प्रतापी राजा हुआ है, जिसने मालवा के परमार वश के शासक नरवर्मन को हराकर अपने राज्य का विस्तार किया। अजयराज ने ही 1113 ई० मे अजमेर बसाया। उसके बाद उसका पुत्र अर्णोराज गद्दी पर बैठा जिसने तुर्कों को अजमेर से खदेड दिया। चौहान राजा विग्रहराज चतुर्थ ने भी दिल्ली, पंजाब, जालौर, पाली, नागौर जीतकर अपने शासन का विस्तार किया। उसने कई मन्दिर भी बनवाये।

चौहानो का अन्तिम राजा पृथ्वीराज चौहान था जिसने 11 वर्ष की उम्र में ही अपनी मा कर्पूरी देवी की देख-रेख में सत्ता सम्भाल ली थी। पृथ्वीराज ने अपने चाचा नागार्जुन और अपरगाग्य को हरा कर अपने विरुद्ध विद्रोह को समाप्त किया। पजाब के भडाणका को भी उसने हराया। पृथ्वीराज ने दक्षिण मे चालुक्य राजाओ को हराया और महोबा भी जीता। उत्तर-पूर्व मे फैले गढवाल के राजाओ को भी उसने हराया। कन्नौज के राजा जयचन्द को भी उसने हराया और उसकी पुत्री संयोगिता को स्वयवर से उठा कर विवाह किया।

पृथ्वीराज चौहान वश का पराक्रमी राजा था। उसने तराई के पहले युद्ध मे 1191 ई० में मोहम्मद गौरी को हराया और गौरी को घायल होकर भागना पड़ा। अगले ही वर्ष गौरी ने जयचन्द के सहयोग से पृथ्वीराज को हरा दिया। पृथ्वीराज ने गजनी म शब्दभेधी तीर चलाकर गौरी की हत्या की और अपने दोस्त चन्दबरदाई के साथ कटार भाक कर आत्म-हत्या कर ली।

पृथ्वीराज की पराजय के बाद उसके पुत्र गोविन्दराज ने रणथम्भौर मे राज्य स्थापित किया। तुर्क बादशाहो से लडते हुए उसके उत्तराधिकारी वहा राज्य करते रहे।-एक उत्तराधिकारी हमीर देव का नाम रणथम्भौर से जुडा हुआ है। हमीर एक बहादुर योद्धा था और उसने 14 स्थानो पर विजय प्राप्त की। 1290 ई० म उसने जलालुद्दीन के आक्रमण को विफल किया। अलाउद्दीन खिलजी के हमले को भी उसने नाकाम किया पर खिलजी ने उसके साथियो को अपनी ओर मिला लिया। हमीर अपनी सेना सहित लडते-लडते मारा गया और स्त्रियो ने जौहर कर लिया।

जालोर, सिरोही व नाडोल मे भी चौहान राजाओ का राज था। चौहान राजा कीर्तिपाल न जालोर को अपने अधिकार मे लिया था उस का शासन था। कीर्तिपाल के उत्तराधिकारियो समरसिंह, उदयसिंह,

वासुदेव → पृथ्वीराज-I → अजयराज → अर्णोराज → ...

सामन्तसिंह आदि मे से उदयसिंह के काल में चौहानो का शासन फैला। वंश का अन्तिम राजा कान्हड देव था जिसने गुजरात से लौट रही खिलजी की सेना पर हमला करके उसे भगा दिया। खिलजी ने फिर हमला किया तो कान्हड देव व उसका पुत्र वीरमदेव मारा गया और औरतो ने जौहर किया।

नाडोल मे दसवी शताब्दी मे राजा लक्ष्मण ने चौहान वश का राज्य स्थापित किया था। इन्होंने महमूद गजनवी व मोहम्मद गौरी से युद्ध किया। बाद में यह वश जालौर के चौहानो मे मिल गया।

सिरोही मे 1311 ई० मे चौहान वश का राज्य राजा लुम्बा ने स्थापित किया। लाखा 1451 ई० मे यहा का राजा बना और आबू को जीत लिया। लाखा के पुत्र जगमाल के बाद यह वश समाप्त हो गया। हाडौती में भी 1241 ई० मे चौहान शासक देवसिंह था। इसके उत्तराधिकारियो ने बूंदी को राजधानी बनाया। राजा वीरसिंह यहा का अन्तिम शासक था जो मुगल बादशाहो के हमले मे मारा गया।

अन्य राजपूत वंश—उपरोक्त प्रमुख राजपूत वशो के अलावा राजस्थान मे कुछ और राजपूत वशो ने यहा राज्य किया है पर उनकी कोई खास नही रही।

गुर्जर या प्रतिहार राजपूतो ने सात से बारहवी शताब्दी तक मण्डोर, भडौंच आदि राज्यो म, आठवी से तेरहवी शताब्दी तक जालौर, आबू, बागड पर राज्य किया।

जैसलमेर मे भाटी राजपूतो का राज्य भी बारहवी शताब्दी तक रहा। इसके अतिरिक्त आबू और भीनमाल मे चावड राजपूतो ने शासन किया था।

राजस्थान के वीर पुरुष

वीरो की भूमि राजस्थान ने अनेक ऐसे शूरवीर पैदा किये हैं, जिनके नाम आज भी इतिहास के सुनहरी पृष्ठो पर अंकित है। पृथ्वीराज चौहान, महाराणा प्रताप, राणा सांगा, राणा कुंभा जैसे वीर शासको के नाम आज भी लोगो को प्रेरणा देते रहते है। कुछ वीरो के बारे म जानकारी सक्षिप्त म नीचे दी जा रही है।

पृथ्वीराज चौहान—पृथ्वीराज चौहान वश का यशस्वी शासक था जिसने देश के हरेक भाग मे युद्ध जीते और विदेशी आक्रमणकारी मुहम्मद गौरी को भी हराया। पृथ्वीराज दिल्ली के राजा अनगपाल का भानजा था। उसने दिल्ली और अजमेर पर राज्य किया। इसकी वीरता के कारनामे सुनकर कन्नौज के राजा जयचन्द की लडकी सयोगिता इस पर मोहित हो गई थी। जयचन्द पृथ्वीराज का शत्रु था और उसने उसे नीचा दिखाने के लिये सयोगिता के

र पृथ्वीराज की मूर्ति को द्वारपाल की जगह खड़ा कर दिया। संयोगिता ने भी उसी मूर्ति के गले मे माला पहिना दी, तब वहा छिपा पृथ्वीराज उसे ले गया और दिल्ली पहुचकर शादी कर ली। जयचन्द के विश्वासघात के कारण मुहम्मद गौरी ने 1192 ई० की तराई की दूसरी लड़ाई मे उसे हराया और उसे पकड़ कर गजनी ले गया जहा पृथ्वीराज ने शब्दवेधी बाण चलाकर गौरी को समाप्त कर दिया और खुद भी मर गया।

महाराणा प्रताप—मेवाड की गद्दी पर उदयसिंह के बाद महाराणा प्रताप आसनारूढ हुए थे। मुगलो से निरन्तर लडाई और स्वतन्त्रता प्रेमी के रूप मे भी आज महाराणा प्रताप की स्मृति सभी के दिलो मे है। प्रताप जीवन पर्यन्त जगलों मे रहे, पर मुगल बादशाह अकबर की आधीनता स्वीकार नही की। उन्होंने प्रतिज्ञा की थी कि चित्तौड प्राप्त होने तक वे जमीन पर सोयेंगे और सोने-चादी के बर्तनो म खाना नही खायेंगे। सन् 1576 मे उन्होने अकबर की सेना से हल्दी घाटी के मैदान मे डटकर मुकाबला किया, पर वहा से उन्हे हटना पडा। अपने मन्त्री भामाशाह की सहायता से उन्होंने फिर सेना तैयार की और अपने राज्य का काफी हिस्सा प्राप्त कर लिया।

बप्पा रावल—बप्पा रावल ने मेवाड़ के शासन की स्थापना की थी। बप्पा गुहिल वश का पहला शासक था, जिसके उत्तराधिकारियों ने काफी समय तक राज्य किया था और रतनसिंह की मृत्यु के साथ इस वश का शासन समाप्त हो गया।

गोरा-बादल—ये दोनो राजपूत सरदार मेवाड़ के राजा रतनसिंह की पत्नी रानी पद्मिनी के रिश्तेदार थे। अलाउद्दीन खिलजी ने जब रतनसिंह को धोखे से बन्दी बना लिया तो गोरा और बादल के साथ सात सौ डोलियो म राजपूत सैनिक खिलजी के डेरे पर गये और रतनसिंह को छुडाकर किले मे भेज दिया। दोनो वीर खिलजी की सेना से लडते हुए वीरगति को प्राप्त हुए।

राणा कुम्भा—राणा कुम्भा मेवाड का वीर योद्धा होने के साथ ही कला व सस्कृति का प्रेमी था। इसने जहा अपने मेवाड राज्य का विस्तार किया और मेवाड से राठौडो के प्रभाव को कम किया वही 'गीत गोविन्द' 'सगीत मीमासा' 'सगीत राग' आदि ग्रथ भी लिखे। मालवा पर अपनी विजय के उपलक्ष मे उसने 'कीर्ति स्तंभ' का निर्माण कराया, जो आज भी शान से खड़ा हुआ है।

राणा सांगा—यह भी मेवाड का बहुत वीर शासक था। सागा का पूरा नाम सग्रामसिंह था। जिन्होने मेवाड़ पर हमला करने आये इब्राहिम लोदी को कई बार हराया। पहले मुगल बादशाह बाबर की सेनाओं से भी इसने खानवा के मैदान म डटकर मुकाबला किया पर युद्ध मे काफी घायल हो जाने पर बसवा म इनकी मृत्यु हो गई। कहा जाता है कि इसके शरीर पर अस्सी घाव थे।

राणा चूडा—चूडा राणा लाखा के पुत्र थे जिसने मारवाड की राज कुमारी हंसाबाई से शादी करने से इन्कार कर दिया था बाद म हसाबाई क पुत्र मोकलदेव के लिये इन्होने मेवाड का राज्य भी छोड़ दिया। हसाबाई न इन्हें मेवाड से बाहर भेज दिया था। राणा कुम्भा न उन्हें वापस बुलाया।

जयमल और पत्ता—मेवाड के शासक उदयसिंह के यहा सरदार थ। उदयसिंह मुगलो के लगातार आक्रमण क बाद उदयपुर चले गये तो चित्तौड क किले की देखभाल का काम इन दोनो वीरो को सौंप दिया। दोनो न अपना जीवन रहते मुगलो को चित्तौड म नही घुसने दिया। अकबर की सेना से लडते हुए यह मारे गये।

भामाशाह—महाराणा प्रताप के स्वामिभक्त मंत्री थे। हल्दी घाटी की लड़ाई के बाद प्रताप के पास धन की कमी आ गई तो भामाशाह ने अपनी सारी सम्पत्ति नई सेना तैयार करने के लिये महाराणा को दे दी थी, जिसस वे अपने राज्य का काफी हिस्सा फिर प्राप्त करने में सफल हुए।

पन्ना धाय—पन्नाधाय का बलिदान भी इतिहास म अमर है। संग्रामसिंह के बेटे उदयसिंह को जब उसके चाचा बनवीर ने मरवा कर राज अपने हाथ म करना चाहा तो पन्ना धाय ने अपने बेटे की कुर्बानी देकर बालक उदयसिंह की रक्षा की और कुम्भलगढ़ भिजवा दिया।

राव चूडा—यह राठौड वश का प्रथम शासक था जिसने मण्डोर, नागौर आदि राज्यों को जीत कर मारवाड राज्य का विस्तार किया। जैसलमेर के भाटी सरदारों ने इन्हे धोखे से मार डाला था।

राव जोधा—ये भी मारवाड क शासक थ। इन्होंने जोधपुर नगर का निर्माण कराया और वहा एक मजबूत किला बनाकर इसे मारवाड की राजधानी बनाया।

जसवन्तसिंह—जसवन्तसिंह को भी मुगल शासक बनाया था।
था इसी स ेरगजेब उनसे रुष्ट । ग न जसवन्तसिंह को औरगजब को दब क लये भेजा ने मेवाड का
अजीतसिंह क राजा बनाने स इन्कार कर बन्दी बना लिया। वीर दुर्गादास राठौड उनक न उन्हें छुडा कर शासक बनवाया।

राजा मानसिंह—आमेर के शासक भगवानदास के दत्तक का शासक बनन क बाद इन्होन मुगल सम्राट अकबर की ओर से हल्दी घाटी रणथम्भौर और गुजरात म लड़ाइया लडी।

मिर्जा राजा जयसिंह—ये भी जयपुर क राजा थ जिन्होंने मुगल सम्राट जहांगीर व शाहजहां के लिये कंधार और बिहार मे कई युद्ध किये थ। शिवाजी को भी उन्होन औरंगजेब के दरबार म आने पर विवश किया था।

राजा हम्मीर—यह रणथम्भौर का शासक था और इसने कई युद्ध जीत

थे। अलाउद्दीन खिलजी ने हम्मीर के कई साथियो को अपनी ओर मिलाकर इन्हे हटा दिया। हम्मीर लडाई मे मारा गया।

कृष्णा कुमारी—ये उदयपुर की राजकुमारी थी, जिसकी शादी जोधपुर के राजा जगतसिह के साथ होने वाली थी। जयपुर के राजा मानसिह भी कृष्णा कुमारी स शादी करना चाहते थे। दोना राजाओ मे हुई लडाई मे जगतसिह मारे गये और कृष्णा कुमारी ने जहर खा लिया।

रानी पद्मिनी—मेवाड के राजा रतनसिह की सुन्दर पत्नी थी। अलाउद्दीन खिलजी ने उसे प्राप्त करने के लिये आठ वर्ष तक चित्तौड के किले का घेरा डाला। सफलता नही मिलने पर उसे दर्पण मे देखने की इच्छा व्यक्त की। उसी समय उसने चालाकी से रतनसिह को गिरफ्तार कर लिया। राजपूतो ने इस पर लडते हुए वीर गति प्राप्त की और पद्मिनी सहित राजपूत स्त्रियो ने अपने सम्मान की रक्षा के लिये 'जौहर' कर लिया।

ऐतिहासिक व दर्शनीय स्थल

राजस्थान म अनक दशनीय और ऐतिहासिक स्थान हैं जिन्ह देखने के हर साल लाखो देशी विदेशी पर्यटक यहा आते है। जयपुर, जोधपुर, जैसल बीकानेर, पुष्कर, अजमेर, बूदी, कोटा, सरिस्का, रणकपुर और माऊंट आदि कुछ ऐसे स्थान हैं जहा सभी पयटक जाना पसन्द करते हैं। पुराने किले मन्दिरा, महलो और हवेलियो के अलावा यहा वन्य जीव अभयारण्य भी आकर्ष का केन्द्र हैं। सरिस्का और रणथम्भोर के वन्य जीव अभयारण्य और भरतपुर पास घना पक्षी अभयारण्य पयटको के आकर्षण का विशेष केन्द्र बने हुए हैं राजस्थान म विभिन्न स्थानो पर बन राज प्रसादो की स्थापत्य कला ने भी विशे सैलानियो को आकर्षित किया है।

जयपुर—जयपुर शहर की स्थापना सन् 1727 ई० म सवाई जयसिंह की थी। इसकी बसावट आज भी अद्वितीय मानी जाती है। इसलिए भारत का पेरिस कहा जाता है। हवामहल, जन्तर मन्तर न का कि सिटी पैलेस, रामबाग पैलेस, सिसोदिया रानी का बाग गलताजी व गैटोर की छतरिया यहा के दशनीय स्थन हैं।

आमेर— से करीब दस किलोमीटर है। की से पहले आमेर कछवाहा राजपूतो की राजधानी रहा है। यहा शिलादेवी का मं जैन मन्दिर, शीशमहल, दीवान आम, दीवाने खास आदि देखने योग्य हैं।

अलवर—ग्यारहवी शताब्दी मे आमेर के कछवा शासक के अल्दुराय ने अलवर की स्थापना की थी। उसके बाद यहा निकुभ, मुगलो का राज रहा। 1771 ई म महाराजा प्रतापसिं ने इस और राजपूत राज्य कायम किया। अलवर का किला सलीम महल, विनय महल राजकीय सग्रहालय, पुरजन विहार (कम्पनी बाग), विजय पैलेस जयसमन्द झील, सिलीसेढ झील व महल, पांडुपोल, भरथरी, राजौरगढ़ सिरस्का अभयारण्य यहां के दशनीय स्थल है।

विराट नगर— की स्थापना राजा विराट ने की थी और पाचो पाडवों यहां वनवास के दिन बिताए थे। बैराठ बौद्धों का भी बड़ा स्थान रहा है यहा पर 22 सौ वर्ष पुराना मन्दिर भी है जो प्राचीनतम माना जाता है। पुरा विभाग ने यहा जो खुदाई कराई है उसम यहा की प्राचीन सभ्यता के अवशेष मिले हैं। सातवी शताब्दी के मध्य म यहा चीनी यात्री ह्वेनसांग था उसके बाद स यह वीरान पड़ा रहा और पन्द्रहवी शताब्दी म फिर बसा।

आभानेरी—यह नीलकुम्भ राजपूतों की अलवर की स्थापना से पहले राजधानी थी। यह स्थान अपनी शिल्पकला वास्तुकला के कारण प्रसिद्ध है।

टोंक—यह पूर्व मे नागरा के नाम से था और यहा मालव शासक राज्य करते थे बाद म मुसलमानों ने इस पर विजय प्राप्त की और यहा क शासक टोंक के नवाब कहलाने लगे। यहा की सुनहरी कोठी दर्शनीय है जो नवाब का निवास स्थान हुआ करता था। यहा पर बनास नदी मे उगाये जाने वाले खरबूजे भी प्रसिद्ध है।

टोडारायसिंह—यह टोंक जिले म मालपुरा के पास है। यहां पर पहले चावस के गुहिलो ने और बाद मे अजमेर के चौहानो ने राज्य किया। मुगल सम्राट अकबर ने सोलकी राजा से जीतकर इसे आमेर के राजा के भाई जगन्नाथ को दिया था। जगन्नाथ की बावड़ी दर्शनीय स्थल है।

अजमेर—इसकी स्थापना चौहान वश के शासक अजय राज ने सातवी शताब्दी म की थी। ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह सभी धर्मों के लोगो के लिए धार्मिक स्थल है। अजमेर से कुछ किलोमीटर दूर ही तीर्थराज पुष्कर है जहां हर साल मेले मे भाग लेने के लिए हजारों देशी-विदेशी सैलानी आते हैं। अढ़ाई दिन का झोंपडा, जैनिया की नसियां, आना सागर, फाई सागर आदि दर्शनीय स्थल हैं।

किशनगढ़—यह अजमेर से 25 किलोमीटर दूर है जो अपनी कलाकृतियो की शैली के लिए प्रसिद्ध है। बनीठनी किशनगढ शैली की ही प्रसिद्ध कलाकृति है।

आहड़—यह उदयपुर के पास एक छोटा सा कस्बा है। यहा पर पुरातत्व विभाग द्वारा कराई गई खुदाई म चार हजार वर्ष पूर्व की सभ्यता के अवशेष मिले हैं।

माऊन्ट आबू—यह राजस्थान का एकमात्र हिल स्टेशन है। अरावली की सबसे ऊंची चोटी पर स्थित आबू म देलवाडा के जैन मन्दिर, गुरु शिखर, नक्की झील आदि दर्शनीय स्थल है।

बीकानेर—इस राज्य की स्थापना मारवाड़ के शासक जोधाजी के पुत्र राव बीकाजी ने की थी। गगासिंह यहा के प्रसिद्ध शासक हुए हैं जिन्होंने गगनहर का निर्माण कराया। लालगढ पैलेस, गजनेर, देवकुण्ड, कोलायत तीर्थ, देशनोक म करणी माता का मदिर दर्शनीय स्थल है।

बूंदी—यह अब अलग जिला है। पहाड़ियो के बीच बसे इस नगर म कलाकृतियों की बूंदी शैली रही है। बूंदी का किला महल दर्शनीय हैं।

भरतपुर—इसकी स्थापना जाट राजा सूरजमल ने की थी। घना पक्षी अभयारण्य के कारण स्थान [illegible] पर्यटकों के [illegible] गया है। भरतपुर से 33 किलोमीटर दूर डीग के महल भी दर्शनीय है।

चित्तौड़गढ़—यह मेवाड़ के शासकों की राजधानी रहा है। चित्तौड़ के गौरवशाली इतिहास को सहायिया भैरों है, राजपूत स्त्रियों के जौहर देखे हैं। मीरा बाई का मन्दिर, चित्तौड़ दुर्ग, कीर्ति स्तम्भ, पद्‌मिनी महल दर्शनीय स्थल हैं।

जोधपुर—यह मारवाड़ की राजधानी रही है। इस शहर का निर्माण जोधाजी ने कराया था। जोधपुर का किला, उम्मेद महल, जसवंत महल, बाग, रण महल, चामुण्डा महल दर्शनीय स्थल हैं।

जैसलमेर—यह भाटी राजपूतों की राजधानी रहा है। इस नगर की स्थापना राव राजा जैसल ने की थी। रेगिस्तान के बीच इस शहर में पटवों की हवेलियां, किला और रेगिस्तान के टीले दर्शनीय स्थल हैं।

कोटा—यह आज का प्रमुख औद्योगिक नगर है चम्बल नदी के किनारे इस शहर मे अमर निवास, छत्तर निवास, बाड़ोली मंदिर म्युजियम, जैन मंदिर दर्शनीय हैं। यहां दशहरे का मेला भी उत्साह से भरता है।

रणथम्भौर—यह चौहान राजपूतों की राजधानी रही है। अरावली की पहाड़ियों के बीच बने रणथम्भौर किले में गणेश चतुर्थी पर लक्खी मेला भरता है। रणथम्भौर में वन्य जीव अभयारण्य होने से भी इसका महत्व बढ़ गया है।

उदयपुर—यहां पर सिसोदिया राजपूतों का राज्य रहा है। चित्तौड़ पर मुगलों के लगातार आक्रमण के बाद राणा उदयसिंह ने उदयपुर बसाया था। यहां के महल, सहेलियों की बाड़ी, मोती मगरी, नेहरू पार्क तथा तीन झीलें पिछोला, उदय सागर, फतह सागर दर्शनीय हैं। इसे झीलों की नगरी भी कहा जाता है।

उदयपुर जिले मे ही नाथद्वारा मे श्रीनाथजी का मन्दिर, हल्दीघाटी, एकलिंगजी का मन्दिर, जयसमन्द झील, नागदा, कुम्भलगढ़ दुर्ग, राजसमन्द, कांकरोली मे नौ चौकी व कई अन्य मंदिर दर्शनीय है।

ओसिया के मंदिर, बाड़मेर मे किराडू, पोकरण, लोदरवा, फलौदी, मेड़ता, नागौर, कालीबंगा, बिजोलिया, झालरापाटन आदि अन्य दर्शनीय स्थल हैं।

राजस्थान मे इन स्थानों पर कई विशेष दर्शनीय स्थल है जिन्हें देखे बिना पर्यटक वापस नही जाना चाहता। जयपुर मे हवामहल, अजमेर मे अढ़ाई दिन का झोंपड़ा, चित्तौड़ मे कीर्ति स्तम्भ और विजय स्तम्भ तथा जयपुर मे जन्तर मन्तर (वेध शाला) प्रमुख है।

राज्य मे निम्नलिखित पशु व पक्षी अभयारण्य हैं.—

1. घना पक्षी अभयारण्य, भरतपुर
2. रणथम्भौर वन्य जीव अभयारण्य, सवाई माधोपुर
3. सिरस्का वन्य जीव अभयारण्य, अलवर

4 दड़ा अभयारण्य, कोटा

5 आबू अभयारण्य, सिरोही

6 ताल छापर, चूरू

7 जयसमन्द वन्य जीव अभयारण्य, उदयपुर

राज्य की महत्वपूर्ण मस्जिदें

1 अलाउद्दीन मस्जिद, जालोर

2 अकबरी मस्जिद, आमेर

3 उषा मस्जिद, बयाना

4 गुलाब खां मस्जिद, जोधपुर

5 ईदगाह जयपुर व टोंक

6 नलसीद मस्जिद, साम्भर

7 ख्वाजा साहब की दरगाह, अजमेर

राजस्थान की सभ्यता व संस्कृति

राजस्थान का निर्माण विभिन्न रियासतो और ठिकानो से मिल कर हुआ है। ये रियासतें भी पूर्व मे बटी हुई थी और कई राज्यो मे थी जिनकी अपनी अपनी बोली, पहनावा, खानपान रहा है। कहा जाता है कि राजस्थान मे 25 कोस चलने के बाद बोली बदल जाती है। इसी तरह वेश-भूषा और खानपान भी अलग अलग पाये जाते हैं।

पुरातत्व विभाग ने राजस्थान मे जो खुदाई व अन्वेषण किया है उससे पता चलता है कि यहां की सभ्यता अत्यन्त प्राचीन है। कालीबंगा मे हुई खुदाई से सिन्धु घाटी सभ्यता के चिह्न मिले हैं तो उदयपुर के पास आहड मे खुदाई का पर चार हजार वर्ष पुरानी आहड नद घाटी सभ्यता सामने आई। इससे पता चलता है कि तब भी लोग सभ्य ढग से पक्के मकान बनाकर, सड़को व नालियो का निर्माण करा कर सफाई से रहते थे। मिट्टी के कलात्मक बर्तन बनाना उन्हे आता था। वही वे अपनी रक्षा के लिए तांबे के हथियार बनाते थे।

इन सभ्यताओ के बाद यहा उत्तरी भाग मे आर्य आकर बसे और वैदिक संस्कृति का प्रादुर्भाव हुआ। जनपद युग मे यहा मालव, शिवि, शाल्व, यौधेय जातिया आकर बसी। कुषाण भी इसी काल मे यहा आये। गुप्त वश के राजाओ ने भी कुछ समय यहा राज्य किया। बाद मे हूणो ने भी आकर यहा राज्य किया। इससे पता चलता है कि यहा अनेक जातिया आई और बस गई जिसका रहन सहन का समन्वय, शरीर रचना यहा के लोगो मे पाया जाता है। सातवीं शताब्दी मे यहा राजपूतो की विभिन्न जातिया आकर बसी जिन्होने धीरे धीरे पूरे राजस्थान पर अपना शासन फैलाया। मुगल शासको का भी राजपूतो से व्यवहार चला और अजमेर व टोंक मे उनका राज रहा।

राजस्थान मे आदिवासी भी काफी सख्या मे पाये जाते हैं। उदयपुर डिवीजन मे भील और जयपुर डिवीजन मे मीणा काफी सख्या मे हैं। डोम, मजदूर, धोबी, चमार, नट, जुलाहे चिडीमार, मातग आदि जातियो के लोग भी यहा प्रारम्भ से ही रहे हैं। भरतपुर क्षेत्र मे जाट आकर बसे हैं जो अब पूरे राजस्थान मे प्राय. सभी स्थानो पर बसे हुए हैं। गूजर व अहीर भी यहा लम्बे अर्से से रहे हैं वही पजाबी और सिन्धी भी काफी समय पहले शहरी क्षेत्रो मे आकर बस गये थे।

राजस्थान मे इस समय मुख्य रूप से राजपूत, जाट, गूर्जर, यादव, मीणा भील, चारण, भाट, दरोगा, ब्राह्मण, महाजन, गिरासिया, सहरिया, कायोडी, बजारे, रेवारी, गाडिया लुहार, माली, बढ़ई, कुम्हार, मोची, मुसलमान आदि पाये जाते हैं।

हिन्दुओं की सख्या हमारे राज्य म सर्वाधिक है पर उनम भी कई जातिया और सम्प्रदाय हैं। इन्हें हिन्दू इसीलिये कहा जाता है कि य हिन्दुस्तान के पुराने निवासी हैं। राजस्थान मे यो तो हिन्दुओ मे कई सम्प्रदाय व मत पाये जाते है पर उनमें से प्रमुख वैष्णव, शैव, रामोपासक, शक्ति उपासक हैं।

राजपूत, चारण, भाट, कायस्थ आदि जातिया शक्ति की प्रतीक देवी की उपासना करती हैं। वैष्णव सम्प्रदाय के लोग वल्लभाचार्य के उपासक माने जाते हैं। राजस्थान मे नाथद्वारा और कोटा मे वैष्णव सम्प्रदाय की गद्दियां है। हिन्दू लोग मुख्य रूप से पुराणो म बताये गये धर्म को मानते हैं। पुराणो क अनुसार किसी एक देवता की पूजा नही की जाती है। ब्रह्मा, विष्णु महादेव,, गणेशजी, हनुमानजी, राम, कृष्ण, बुद्ध, देवी शक्ति की पूजा की जाती है। हिन्दू लोग इसी के साथ गोवर्धन पर्वत, गगा, यमुना, नर्मदा नदियो और तुलसी, वट व पीपल के पेड की भी पूजा करते हैं।

कृष्ण के उपासक उनके बाल रूप की ही सेवा करते है उनके यहा पूजा की मनाही होती है पर कई लोग राधाकृष्ण की पूजा करते है। राम के उपासको मे रामसनेही सम्प्रदाय प्रमुख है जिनकी गद्दी बांसवाडा मे है। राजस्थान मे शैवमत के अनुयायी बहुत कम है। राजस्थान मे कबीर पथी और दादू पथी भी कुछ सख्या मे मिलते हैं। दादूपथ की गद्दी नरायना म है और य लोग भगवावस्त्र पहनते है।

जैन धर्म—जैन धर्म के प्रवर्तक तीर्थंकर महावीर थे। इस धर्म मे मुख्य रूप से श्वेताम्बर, दिगम्बर, स्थानकवासी (ढ ढिया) और तेरहपथी सम्प्रदाय हैं। श्वेताम्बरो के गुरु वस्त्र पहिनते है। इन्ही की एक शाखा तेरहपथी है जिसे चलाने वाले भीखमजी ओसवाल थे। भीखमजी ने अपने गुरु से वैचारिक मतभेद होने के कारण नया पथ चलाया था। उन्हें अपने विचारो के तब केवल 13 साधु मिले थे इसलिए तेरहपथी मत कहलाया। स्थानकवासी जैन गुरुओं की पूजा करत है जो सफेद वस्त्र धारण करते हैं और मुह पर भी सफेद पट्टी बन्धी होती है दिगम्बर मत के लोगो के गुरु नग्न रहते हैं और नग्नमूर्तियों की ही पूजा भी करते है।

मुसलमान—हिन्दुओ के बाद राजस्थान मे मुसलमानो की आबादी सबसे ज्यादा है। मुसलमान धर्म के प्रवर्तक मुहम्मद साहब थे जिनके बाद म दो वर्ग हो गए सुन्नी और शिया। राजस्थान मे दोनो ही वर्गों के मुसलमान पाए जाते है। यहा पर मुगलकाल से पहले भी कई मुस्लिम शासको ने हमला किया पर उनका मुख्य उद्देश्य लूटमार करना होता था और वे वापस अपने देश लौट जाते थे। मुगल बादशाहो ने पहली बार यहा राज्य किया और यहीं पर आकर बस गए। इसके साथ ही ८८

मे भी मुस्लिम ग्राकर बसे । राजस्थान में अधिकतर मुसलमान वे है जिन्हें जबरन
धर्म परिवर्तन करके मुस्लिम बनाया गया था । कायमखानी ऐसे ही मुसलमान कहे
जाते हैं जो आज भी अपने नाम के आगे राठौड, गौड आदि जाति सूचक शब्द
लगाते हैं ।

सिक्ख—राजस्थान मे सिक्ख धर्म को मानने वाले लोग पहले बहुत कम
संख्या म शहरो व कस्बों में ही पाए जाते थे । देश के स्वतन्त्र होने के बाद जब
भारत का विभाजन हुआ तब इनका आगमन राजस्थान म हुआ और ये लोग यहा
आकर विभिन्न भागो से बस गए । इनकी संख्या राज्य मे अब करीब 5 लाख तक
पहुंच गई है । सिक्ख धर्म के प्रवर्तक गुरु नानक देव थे जो जाति-पाति, तीर्थों और
मूर्ति पूजा के विरोध थे । सिक्ख आज भी मूर्ति पूजा को नही मानते हैं और अपने
पवित्र ग्रन्थ 'गुरु ग्रंथ साहिब' को मत्था टेक कर अपनी श्रद्धा प्रगट करते हैं ।

ईसाई—ईसाई धर्म के लोगो का आगमन राजस्थान मे काफी देर से हुआ ।
उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ मे जब अंग्रेजो का राज भारत मे हो गया तब वे
राजस्थान भी आये । अजमेर स्वतन्त्रता प्राप्ति तक सीधे अंग्रेजो से शासित राज्य
रहा इसलिये इसी क्षेत्र म ईसाई अधिक पाये जाते हैं । वैसे बहुत कम संख्या मे
यह सारे प्रदेश म फैले हुए हैं । ईसाईयो म प्रमुख दो वर्ग हैं कैथोलिक जो मूर्ति
पूजा के समर्थक है और प्रोटेस्टेन्ट जो इसके विरोधी हैं । ईसा मसीह इस धर्म के
प्रवर्तक थे । इन दो प्रमुख वर्गों के अलावा मेथोडिस्ट, चर्च ऑफ इंग्लैण्ड और
फ्री चर्च ऑफ स्कॉटलैण्ड भी ईसाई धर्म के वर्ग हैं ।

बौद्ध—प्राचीनकाल मे जयपुर और मेवाड़ राज्य म बौद्ध धर्म का
काफी था । बैराठ म प्राप्त बौद्ध चैत्यालय इसका प्रमाण है पर अब इस धर्म
बौद्ध धर्म को मानने वाले गिनती के ही लोग रह गये हैं । महात्मा बुद्ध इस धर्म
के प्रवर्तक थे और एक समय इसका अत्यधिक विस्तार हुआ था । भारत ही नहीं
चीन, तिब्बत, श्रीलंका, थाईलैण्ड तक बौद्ध धर्म फैला था पर बाद मे यह समाप्त
प्राय हो गया ।

राजस्थान म अनुसूचित जाति और जन जातियो के लोग भी काफी संख्या
में रहते है । इसके अलावा जाट और राजपूत अहीर, गूर्जर भी प्राय राजस्थान
के सभी हिस्सो म पाये जाते हैं और इनकी संख्या भी काफी है । अनुसूचित जातियों
मे रेगर, चमार, खटीक, धानका, हरिजन मुख्य हैं जो संख्या मे काफी हैं तथा
पूरे राज्य मे बिखरे हुए हैं । ये जातिया उच्च वर्ग की सेवा करती आई हैं पर अब
इनमें भी सामाजिक जागृति आई है । इसका सबसे बड़ा प्रमाण यही है कि
राजस्थान भूतपूर्व मुख्य मन्त्री जगन्नाथ पहाड़िया भी अनुसूचित जाति के ही थे ।
संविधान मे इनके उत्थान के लिये नौकरियों में आरक्षण की सुविधा दी गई है ।
अनुसूचित जनजातियों का भी राजस्थान में बाहुल्य है । मेवाड़ और सिरोही

मे भील, गिरासिया, कथोडिया आदि बहुत है तो जयपुर डिवीजन मे मीणा और कोटा जिले मे सहरिया जाति के लोग काफी हैं। जयपुर मे मीणा पहले शासक थे पर आज भी उनकी आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी है। इसके विपरीत भीलो की माली हालत दयनीय बनी हुई है। वनसम्पदा पर ही मुख्य रूप से उन्हे गुजारा करना पडता है।

जनजातियो के रहन-सहन और सामाजिक जीवन की सक्षिप्त जानकारी इस प्रकार है।—

भील—भील राजस्थान के सबसे पुराने निवासी है। मेवाड मे मुख्य रूप से ये उदयपुर, भीलवाडा, चित्तौड, डूगरपुर, बासवाडा जिलो मे रहते हैं। मेवाड पर वही शासक राज्य कर पाया जिनको भीलो की सहायता मिल गई। बप्पा रावल, महाराणा प्रताप, राणाकुम्भा इसके उदाहरण है जो भील सेना की मदद से राज करते रहे। भीलो की भाषा वागडी है और ये अरावली की पहाडियो मे छोटे-छोटे समूहो मे झोपड़ियां बना कर रहते है। इनकी एक बस्ती पाल के नाम से जानी जाती है। ये लोग गाव के मुखिया को गमेती कहते है और उसका निर्णय सर्वमान्य होता है। भील जाति के लोग आज भी टोने-टोटको, भूत-प्रेत, बलिप्रथा मे विश्वास करते हैं।

गिरासिया—भीलो के बाद आदिवासियो की दूसरी जनजाति गिरासिया है जो मुख्य रूप से सिरोही और मेवाड म उदयपुर जिले के कुछ भाग मे रहती है। गिरासिया जाति के लोग भी राजस्थान मे बहुत पहले से रहते आये हैं। गिरासियो की आजीविका का मुख्य साधन वन सम्पदा ही है। इनके मुख्य त्यौहार होली व गणगौर हैं। गणगौर के त्योहार पर गिरासी युवतियो का घूमर-नृत्य देखने लायक होता है। माऊन्ट आबू मे पिछले कुछ वर्षों मे गिरासिया युवतिया आबू सुन्दरी के रूप मे चुनी जाती रही हैं।

गिरासिया जाति के लोग अन्ध विश्वासो से अभी तक बन्धे हुए हैं। कोई भी नया काम करने से पूर्व गिरासिया लोग भैरूजी या माताजी के मन्दिर म जाकर पूजा करते हैं और गेहू, जो और मक्का के अक्षत चढ़ा कर अपनी सफलता का परिणाम ज्ञात करते है।

काथोडिया—यह जाति भी भीलो का ही एक भाग है और उदयपुर, बासवाड़ा व डूगरपुर जिलो मे रहती है। इनका मुख्य व्यवसाय कत्था बनाना है और कथोडिया महिलाए इसमे प्रवीण होती हैं पर उनकी आर्थिक स्थिति बहुत ही दयनीय है। अपने व्यवसाय से इस जाति के लोग न भरपेट खाना खा सकते हैं और ना ही तन ढकने को कपडा जुटा पाते है। कत्था बनाने के कारण ही इन्हे काथोडिया कहा जाता है।

काथोडिया जाति के रीति-रिवाजो मे हिन्दुओ से एक ही भिन्नता है कि

इनके यहा मृतक का दाह-संस्कार करने की बजाय उसे ... है गावो ... की पूजा करते है ... दीवाली आदि त्योहार ये बडी धूम धाम से मनाते हैं। अन्ध विश्वास से ये भी परे नही है और झाड फूक से उपचार पर ही विश्वास करते हैं।

राजस्थानी वेश-भूषा

राजस्थान मे कई जातियो और धर्म के लोग रहते हैं। उनके खान-पान रहन-सहन और पहनावे मे विविधता होती है और अपने क्षेत्र का प्रभाव भी स्पष्ट से परिलक्षित होता है पर फिर भी उनम सामजस्य नजर आता है। राजपूत लोग सिर पर साफा बाधते हैं और दूसरे लोग पगडी या टोपी पहिनते हैं। जोधपुरी साफा अलग तरह से बाधा जाता है तो मेवाड़ की पगडी के बाधने का ढग दूसरा ही होता है।

राजस्थान म पुरुषो की परम्परागत पोशाक धोती अगरखी और साफा या पगडी होती है। आज भी गावो म अधिकाश लोग यही पोशाक पहनते हैं। यद्यपि धोती पहने की भी अलग अलग विधिया प्रचलित हैं पर अब शिक्षा के प्रसार के साथ साथ युवा पीढी कमीज नेकर, पेन्ट और पाजामा भी पहनने लगी है। पहले शहरो म परम्परागत पोशाक अचकन या शेरवानी और धोती या चूडीदार पजामा होती थी अब उनमे भी काफी परिवतन आ गया है। शहरो म अब अत्याधुनिक फैशन के सूटिंग, शर्टिंग, कोट, पेन्ट, कमीज, जर्सी, टी शर्ट आदि पहने जाने लगे है। शहरो व कस्बो म सिर पर पहनने का रिवाज खतम सा हो गया है फिर भी महाजन आदि टोपी धारण कर लते है।

शहरो व कस्बा मे महिलाए धोती ब्लाऊज पेटीकोट आदि आम तौर पर पहनती हैं पर स्कूल जाने वाली लडकिया गरारा पाजामा चूडीदार पजामा बेल बॉटम स्कर्ट कुर्त्ता कमीज सभीज मिडी मैक्सी भी धडल्ले से पहनती है। गावो के स्कूलो मे अभी कुर्त्ता, पाजामा व दुपट्टा ही चलता है।

गावो की औरतो का पहनावा कमोबेश एक सा ही होता है लहगा कब्जा काचली और लहगा यहा की मुख्य पोशाक है। गावो की औरते रंगीन व कलात्मक कपडे पहनती है लेकिन विशेष मौको शादी ब्याह, मेला, त्योहार पर गोटा लगी पोशाक पहनना पसन्द करती हैं। मुसलमान स्त्रिया चूडीदार पाजामा और ओढनी पहनती है। मुस्लिम महिलाओ मे अभी भी बुर्का पहनने का प्रचलन है।

आभूषण पहिनने का रिवाज भी राजस्थान मे बहुत है। ग्रामीण पुरुष कानो मे मुरकिया कडे व अगूठी आम तौर पर पहनते हैं। शहरो म भी गले मे जंजीर और हाथ म अगूठी पहिनने का रिवाज है।

पुरुषो के मुकाबले आभूषण पहनने का शौक स्त्रियो में बहुत ज्यादा पाया जाता है। उनके पूरे अंग आभूषणो से लदे होते हैं पर अब शहर की महिलाए

वसर विशेष पर ही आभूषण पहिनती हैं। आमतौर पर शहरी स्त्रिया पाँवो पायजब और पैरो की अंगुलिया मे बिछिया, नाक मे लौंग, कानो मे इयरिंग्स टाप्स, गले मे चैन और हाथो मे चूडियाँ या कड़े पहिनती हैं।

गावो मे आमतौर पर साधारण घरो की महिलाए चादी के जेवर पहिनती पर महाजनो व ऊचे घरो की औरतें सोने के जेवर पसन्द करती है। कुछ म्परागत स्त्री आभूषण इस प्रकार गिनाये जा सकते है—

सिर—शीशफूल।

मस्तक—बोरला, टीका, फीणी, माग टीका, साकली।

नाक—नथ, लोग।

कान—झुमके, बाली, पत्ती, सुरलिया, टॉप्स, इयरिंग्स।

छाती—हार, कण्ठी, मटरमाला, झालर, जंजीर।

भुजा—बाजुबन्द, ठड्डा, तक्या, बट्टा।

कलाई—चूडिया, चूडा, कडा, हथफूल, पू चियो, बगडी।

अंगुलिया—छल्ला, अ गूठी, मू दडी।

कटि—तागडी, करधनी, कणकती।

पैर—पायजेब, पायल, कडा।

पैरों की अगुलियाँ—बिछिया।

खान-पान—राजस्थान मे विभिन्न क्षेत्रो मे भिन्न भिन्न प्रकार की जलवायु जाती है और जलवायु के अनुसार ही इन क्षेत्रो मे जो पैदावार होती है वहा के वही खाते हैं। रेगिस्तान के जिलो मे बाजरा पैदा होता है और वहा के लोगो मुख्य भोजन वही है। इन क्षेत्रो मे लोगो की आजीविका मुख्य रूप से पशु न पर निर्भर है इसलिये दूध दही की भी वहा कमी नही होती। दही की लस्सी टक होती है इसी कारण पानी की कमी होते हुए भी वहा के निवासी हृष्ट पुष्ट हैं।

उदयपुर क्षेत्र मे मक्का की फसल बहुत अच्छी होती है और वहा के ग्रामीण का मुख्य आहार भी यही होता है। बासवाडा, डू गरपुर जिलो के क्षेत्रा म चावल की खेती भी होती है वही दलहन की फसल भी यहाँ अच्छी है।

हाडोती क्षेत्र के लोगो का मुख्य भोजन ज्वार है और वे इसे ही खाकर न्दित होत है। जयपुर, भरतपुर, अलवर, सवाई माधोपुर आदि जिलो के का मुख्य भोजन गेहूँ, जौ चने के आटे की मिली रोटी है जिसे यहा लोग बड़े चाव से खाते हैं।

शहरी क्षेत्रो मे पूरे राजस्थान म ही लोग गेहू व चावल का उपभोग दातर करते हैं। रेगिस्तानी क्षेत्रों को ` ५८ हरी सब्जी भी प्राय सभी

जगह उपलब्ध हो जाती है। शहर में लोग बाजरा, मक्का की रोटी शोरियां व पर ही गुड़, घी या सब्जी के साथ खाते हैं।

राजपूत विशेषकर पश्चिमी राजस्थान में राजपूतों के साथ ही कुछ जातियों के लोग अफीम व शराब का सेवन भी करते हैं। राजस्थान में झालावाड़ चित्तौड़ में अफीम की खेती होती है। इन्हीं जातियों के लोग मांसाहारी भी होते हैं वैसे शहरों में सभी जाति के लोग अंडे, मांस, मछली खाने लगे हैं।

भोजन किस प्रकार का हो यह लोगों की आर्थिक स्थिति पर भी निर्भर करता है। चाय का प्रचलन आम हो गया है और दूध गांवों के लोग भी कम पीने लगे हैं। गांवों में सवेरे छाछ-राबड़ी का आज भी कलेवा किया जाता है। तम्बाकू, बीड़ी-सिगरेट का प्रचलन भी राजस्थान में आम हो गया है।

विशेष त्यौहार व मेले

राजस्थान अपनी सांस्कृतिक विविधता के लिए प्रसिद्ध है उसी तरह यहां त्यौहार व मेले भी बहुत से मनाये जाते हैं धीरे-धीरे सभी क्षेत्रों के लोग एक-दूसरे के त्यौहारों को मानने लगे हैं। कुछ मुख्य-मुख्य त्यौहार इस प्रकार हैं—

दशहरा—इस त्यौहार का देशव्यापी अपना महत्व है और राजस्थान में भी यह विजया दशमी के रूप में मनाया जाता है जो अगहन माह के शुक्ल पक्ष की दशमी को दीपावली से बीस दिन पहले आता है। राम की रावण पर विजय के उपलक्ष में मनाये जाने वाले इस त्यौहार के दिन बुराई के प्रतीक रावण, कुम्भकर्ण और मेघनाद के पुतले जलाये जाते हैं और अच्छाई की विजय की जाती है। दशहरे से पहले रामलीला सभी प्रदेश में सैंकड़ों स्थानों पर होती है। राजस्थान में कोटा का दशहरा मेला बहुत प्रसिद्ध है जहां लाखों लोग इसे देखने के लिये आते हैं। अक्टूबर

दीपावली—दीपावली भी पूरे देश का त्यौहार है और राजस्थान भी इससे अछूता नहीं है। वर्षा के मौसम के बाद आने के कारण इस त्यौहार से पहले लोग अपने घरों, दूकानों की सफाई, रंगाई पुताई आदि कराते हैं और दीपावली के दिन दिये जलाकर वर्षा के मौसम में हुई गन्दगी को दूर करते हैं व्यापारी अपना नया वर्ष भी दीपावली से ही लक्ष्मी पूजन के साथ शुरू करते हैं। दीपावली से दो दिन पूर्व धन तेरस को सभी लोग नये बर्तन खरीदते हैं। खरीफ की फसल भी इस समय तक तैयार हो जाती है इसीलिये दीपावली के दूसरे दिन गोवर्धन की पूजा करके अन्नकूट का त्यौहार मनाया जाता है।

होली—होली भी देश भर में प्रमुख रूप से मनायी जाती है। फाल्गुन मास की पूर्णमासी को होली का दहन के साथ यह त्यौहार मनाया जाता है। दूसरे दिन धूलन्डी मनाई जाती है जिसमें लोग रंग-अबीर, गुलाल मलकर अपनी खुशी प्रकट करते हैं। सर्दी की समाप्ति और गर्मी की शुरुआत के समय आने वाले इस त्यौहार के बाद लोग नहाना पसन्द करने लगते हैं। धूलन्डी के दिन लोग अपने

शराब का सेवन भी कर लेते हैं वहीं देवर भाभी के साथ होली खेलने जाता है तो मिठाई साथ ले जाता है।

शीतलाअष्टमी—का त्यौहार होली के आठ दिन बाद आता है और इस दिन लोग शीतला माता की पूजा करके ठण्डा भोजन ही करते हैं। जयपुर से करीब 40 किलोमीटर दूर चाकसु में शीतला माता का मेला भरता है जिसमें नागे लोग भाग लेते हैं। जोधपुर क्षेत्र में यह त्यौहार राव सातल की स्मृति में मनाया जाता हैं। जिन्होने आततायी मल्लूखा को एक युद्ध मे हराया था।

गणगौर—विशेष रूप से राजस्थान का त्यौहार है और मुख्यत स्त्रियों का त्यौहार है जो इसे बडे उत्साह के साथ मनाती हैं। कुवारी लडकिया अच्छा वर पाने और विवाहित महिलाए अपने पति की दीर्घायु की कामना करने के लिए गणगौर की पूजा करती है। चैत्र माह के शुक्लपक्ष की चतुर्थी को राज्य में कई स्थानो पर गौरी माता की सवारी निकाली जाती है। जयपुर मे इस अवसर पर बहुत बडा मेला भरता है जो अब विदेशी पर्यटकों के आकर्षण का भी केन्द्र बन गया है। गणगौर की सवारी दो दिन तक निकाली जाती है। जयपुर में इस अवसर पर घेवर का रसास्वादन विशेष रूप से होता है। उदयपुर व बूंदी क्षेत्र मे भी सवारी निकालन के साथ ही औरतें घूमर नृत्य भी करती हैं।

तीज—सावन के महीने का त्यौहार होता है। गणगौर की तरह ही तीज पर कई स्थानों पर मेला भरता है और तीज माता की सवारी दो दिन तक निकलती है। गर्मी का मौसम समाप्त होने के साथ ही वर्षा की फुहारों से मौसम ठण्डा रहता है और त्यौहारों की शुरुआत इससे होती है। तीज के बहुत पहले से ही बालिकाए झूला झूलने का आनन्द लेना शुरू कर देती है। नव विवाहित युवतियों के लिए यह त्यौहार विशेष रूप से आनन्ददायक होता है। इस दिन सभी घरों मे पकवान बनते हैं मारवाड और शेखावाटी क्षेत्रो मे औरतें गीत गाकर वर्षा आने की प्रार्थना करती हैं। श्रावण शुक्ला तृतीया

रक्षाबन्धन—श्रावण मास की पूर्णमासी को आता है और भाई बहिन के प्यार को और मजबूत बनाने व भाई को बहिन की रक्षा के प्रण की याद दिलाने वाला पर्व है। ब्राह्मण लोग इस दिन अपने यजमानो को राखी बांधते हैं।

गणेशचतुर्थी—भादोमास मे आती है गणेशजी के जन्म दिन से जुड़ा हुआ यह त्यौहार बच्चों का माना जाता है। बच्चे इस दिन नये वस्त्र धारण करते हैं और गुरुओ को रुपया-नारियल भेंट करके उनका आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। पूरे राज्य म गणेशजी के मदिरो के पास मेला भरता है और लोग वहा दर्शन करने जाते है।

रामनवमी—भगवान राम के जन्म दिन के रूप म मनाई जाती है जो क्वार मास के शुक्लपक्ष की नवमी को आती है। इस दिन लोग रामायण का पाठ करते हैं। जयपुर मे श्रीराम की शोभायात्रा भी निकाली जाती है।

जन्माष्टमी-का त्योहार भगवान कृष्ण की जन्म तिथि के रूप में मनाया जाता है। इस दिन राज्य के प्रमुख मंदिरों में कृष्ण की लीला की झांकियां दिखाई जाती है और शोभा यात्रा निकाली जाती है। भादों मास की अष्टमी को मनाने वाले इस दिन कृष्ण भक्त व्रत रखते हैं और आधी रात के बाद कृष्ण जन्म के उपरांत ही भोजन ग्रहण करते हैं।

ये सब त्योहार हिन्दू लोगो के ही हैं पर होली-दीपावली के दिन सभी धर्मों के लोग इसे अपना त्योहार मान कर ही इनमे शामिल होते हैं। इन त्योहारों पर मुस्लिम लोग भी अपने हिन्दू भाइयो के घर जाते हैं और गले मिलकर मुबारकबाद देते है। हिन्दू धर्म के अलावा मुस्लिम भी अपने त्योहार उत्साह से मनाते हैं। इदुल जुहा और इदुल फित्र इनके प्रमुख त्योहार हैं जिन्हें वे बडे जोश और उत्साह से मनाते हैं। ईद के दिन सभी मुसलमान नये वस्त्र धारण करते हैं और ईदगाह या मस्जिद मे जाकर नमाज अदा करते है। नमाज के बाद वे सभी मित्रों व रिश्तेदारो को ईद की मुबारकबाद देते हैं। मीठी ईद पर सिवईयां, खुरमा, खीर बनाई जाती है वहीं बकरा ईद पर बकरे का गोश्त पकाया जाता है। हिन्दू भाई भी इन त्योहारो पर अपने मुसलमान भाइयो को गले मिलकर मुबारकबाद देते हैं। मुसलमान रमजान के महिने मे व्रत रखते हैं और शाम को इफ्तार के समय उसे खोलते है।

मोहर्रम भी मुसलमान बडे जोश से मनाते हैं। मोहर्रम आने के पहले से ही ताजिया बनाने का काम शुरू हो जाता है। मोहर्रम के दिन ताजियों का जुलस निकाल कर उन्हे कर्बला मे ले जाकर दफना दिया जाता है।

ईसाई लोग भी बड़ा दिन क्रिसमस डे का त्योहार पूरे उत्साह के साथ मानते हैं। इस दिन वे गिरजाघर मे जाकर प्रार्थना करते हैं नये वस्त्र धारण करते हैं और खुब नाचते गाते हैं।

सिक्ख धर्म के लोग गुरु नानक जयन्ती और गोविन्द सिंह जयन्ती उल्लास से मनाते है। अप्रैल मे बैसाखी का त्योहार भी वे बडे उत्साह से मनाते है। नानक व गोविंदसिंह जयती पर जुलूस निकालते हैं, गुरुद्वारे मे जाकर ग्रन्थ साहिब का पाठ करते हैं। खुशी के अवसरो पर वे भंगडा नृत्य करते हैं।

धार्मिक त्योहारो के अलावा देश मे दो राष्ट्रीय त्योहार 15 अगस्त को स्वाधीनता दिवस और 26 जनवरी को गणतन्त्र दिवस के रूप में भी मनाये जाते हैं। ये दोनो राष्ट्रीय त्योहार देश प्रेम की भावना जगाते हैं। दोनों अवसरों पर प्रभात फेरी निकाली जाती है, झांकियां निकाली जाती हैं और तिरंगा झंडा फहराया जाता है। लोग अपने घरो व सरकारी इमारतों पर रोशनी भी करते हैं।

प्रमुख मेले

राजस्थान मे छोटे-मोटे मेले बडी सख्या मे लगते है पर क ... मा,
हत्व है जिनमे लाखो लोग भाग लेने आते हैं ।

कैला देवी—का मेला करौली से 18 मील दूर कैला दे...
रता है । चैत्र माह मे कई दिन तक भरने वाले इस मेले मे लाखा लोग देवी
। के दर्शन के लिये आते है । इस अवसर पर पशु मेला भी भरता है ।

गणेश चतुर्थी—पर सवाई माधोपुर के पास रणथम्भोर के ऐतिहासिक
ले मे गणेशजी के मन्दिर पर मेला भरता है जिसमे भाग लेने लाखो लोग
ते हैं ।

महावीर जी का मेला– सवाई माधोपुर जिले मे ही हिण्डोन के पास श्री
हावीर जी मे भरता है जहा जैन धर्म के लोगो का प्रमुख तीर्थ है इस मेले म
न धर्म के अलावा गुजर, मीणा आदि जातियो के लोग भी भाग लेने आते है ।

पुष्कर मेला—कार्तिक पूर्णमासी को भरता है जहा बहुत बडी सख्या मे
शी विदेशी पर्यटक आते है । हिदू लोग यहाँ आकर पुष्कर झील म स्नान करते
। और ब्रह्माजी के मन्दिर मे जाकर दर्शन करते है । इस अवसर पर पशु मेला
ो होता है और श्रेष्ठ नस्ल के पशुओ को पुरस्कृत किया जाता है ।

रामदेवजी का मेला—भाद्रपद मास मे जैसलमेर जिले के पोकरण म
गता है । यहा आने वाले यात्री सत रामदेव की पूजा करते हैं यहा पशु मेला भी
गता है ।

राणीसती का मेला—झुझुनू मे राणी सती के मन्दिर पर ही लगता है
समे शेखावाटी क्षेत्र के हजारो लोग दर्शन करने आते है ।

कपिल मुनि का मेला भी कार्तिक पूर्णिमा को ही बीकानेर जिले के
ोलायत मे कपिल मुनि की याद मे लगता है । यहा लाखो लोग आकर कोलायत
ील मे स्नान करते हैं ।

ख्वाजा का उर्स—अजमेर म ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह पर
रता है जहा हजारो लोग बाहर से जियारत करने आते हैं । बाहरी देशो से भी
ायरीन यहा चादर चढाने आते हैं ।

राजस्थान के प्रमुख मन्दिर

- ब्रह्माजी का मन्दिर–पुष्कर (अजमेर)
- श्री नाथजी का मन्दिर–नाथद्वारा (उदयपुर)
- द्वारकाधीश मन्दिर–काकरोली (उदयपुर)
- केसरियाजी जैन मन्दिर–ऋषभदेव (उदयपुर)
- एकलिगजी मन्दिर–कैलाशपुरी (उदयपुर)
- जगदीश मन्दिर–उदयपुर (उदयपुर)
- शिलादेवी का मन्दिर–आमेर (जयपुर)

सूर्य मन्दिर–जयपुर

गोविन्द देवजी का मन्दिर–(जयपुर)

देलवाडा जैन मन्दिर–माउन्ट आबू (सिरोही)

काली माता व मीराबाई का मन्दिर–(चित्तौड़गढ़)

मदन मोहन जी का मन्दिर–करौली (सवाई माधोपुर)

महावीरजी जैन मन्दिर–श्री महावीरजी (सवाई माधोपुर)

सूर्य मन्दिर, जैन मन्दिर, सती माता मन्दिर–ओसिया (जोधपुर)

ऋषभदेव, सम्भवनाथ व अष्टपाद मन्दिर–जैसलमेर

करणीमाता का मन्दिर–देशनोक (बीकानेर)

हिन्दू मन्दिर–बाडोली (कोटा)

कपिलदेवजी का मन्दिर–कोलायत (बीकानेर)

लक्ष्मीनारायणजी का मन्दिर–बीकानेर

लक्ष्मणजी मन्दिर–भरतपुर

राणीसती मन्दिर–झुंझुनू

नवग्रह मन्दिर–किशनगढ (अजमेर)

गणेश मन्दिर–रणथम्भौर (सवाई माधोपुर)

कैलादेवी मन्दिर–करौली (सवाई माधोपुर)

बालाजी मन्दिर–मेहन्दीपुर (जयपुर)

अन्धविश्वास और जादू-टोना—शिक्षा और विज्ञान के प्रसार के साथ साथ राजस्थान मे भी अन्ध विश्वासो पर से शिक्षित लोगो का विश्वास उठ रहा है लेकिन पिछले कुछ अर्से मे राजनीतिज्ञ लोग फिर से ज्योतिषियो और तान्त्रिकों पर विश्वास करने लगे हैं। बडे-बडे नेता यहा तक कि देश की प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी भी किसी शुभ कार्य करने से पहले धार्मिक स्थानो की यात्रा करती हैं तथा ज्योतिषियो और तान्त्रिको की सलाह लेती हैं।

गावो मे अभी भी अन्धविश्वास बरकरार है। छीक आने पर कहीं की यात्रा प्रारभ नही करना, बिल्ली के रास्ता काट जाने पर आगे नही जाना, बुधवार को यात्रा प्रारभ नही करना, मुहर्थ देखकर शादी ब्याह व अन्य आयोजन करना ये सब अन्धविश्वास आज भी प्रचलित हैं। वैसे शहरी लोग भी काफी हद तक इनसे अछूते नही हैं पर गावो म यह पूरी तरह माना जाता है। अन्ध विश्वासों मे आज ही विभिन्न देवी-देवताओ की पूजा की जाती है।

अन्धविश्वास के साथ ही जादू-टोने मे भी अभी तक बहुत बडी संख्या में विशेषकर भील लोग विश्वास करते हैं। ग्रामीणो का अभी भी यह मानना है कि झाड़ा-फूका करने से किसी भी बीमारी का इलाज किया जा सकता है वहीं जादू टोना करके अपनी रक्षा के साथ ही आई विपत्ति को दूर किया जा सकता है

जादू-टोना करने के लिये लोग शिवजी, भैरूजी, हनुमान, भवानी, कंकाली मां, तेजाजी, गोगाजी, रामदेवजी, आदि की पूजा करते है। इन देवी-देवताओं को प्रसन्न करने के लिये बलि भी चढ़ाई जाती है पर अब राजस्थान मे इस पर कानूनी प्रतिबन्ध लगा दिया गया है। भूत, चुड़ैल, प्रेत आदि भगाने मे भोपा लोग सिद्धहस्त माने जाते हैं नवरात्रा में व्रत करके भी लोग सिद्धी प्राप्त करते है।

राजस्थान में महिलाओं की दशा प्रारम्भ से ही शोचनीय रही है। रूढ़िवादी विचारो के कारण यहा आज भी स्त्रियो की दशा मे अपेक्षित सुधार नही हुआ है। एक समय ऐसा भी था जबकि लडकी होना शुभ नही समझा जाता था आज प्रगतिशील विचारो के हामी लोगो के भी घर मे कन्या पैदा होती है तो ऐसा लगता है जैसे कोई विपत्ति आ गई हो। भाटी राजपूतो के घरो मे तो कुछ वर्षों पहले तक कन्या को पैदा होते ही मार दिया जाता था। अब कानून बन जाने से इस पर रोक लगी है।

बाल विवाह, पर्दा प्रथा, सती प्रथा, विधवा विवाह निषेध होने की परम्पराए समाज में इतनी गहरी पैठ गई थी कि उनके शिकंजे से महिला का निकलना असम्भव था। सती प्रथा पर तो आधुनिक युग मे प्रभावी नियन्त्रण लग गया है पर अब भी यदा-कदा ऐसे मामले सामने आते ही रहते है। विधवा विवाह आज भी बहुत कम सख्या मे होते हैं पर इस ओर यह कहा जा सकता है कि उच्च वर्गों मे सामाजिक चेतना जागृत हो रही है। नीची जातियो मे तो स्त्रियां पति के मरने के बाद किसी के भी नाते बैठ जाती हैं। कुछ जातियो में स्त्रियां पति के मरने पर देवर के साथ शादी कर लेती हैं।

बाल विवाह—की प्रथा शहरो मे कुछ कम भले ही हो गई हो पर गावो मे आज भी यह बदस्तूर जारी है हिन्दू ही नही मुसलमानो में भी बाल विवाह काफी प्रचलित है आज भी गावो मे हजारो की सख्या मे बाल विवाह होते है। आखा-तीज का सावा शादियो के लिये उत्तम माना जाता है। इस दिन हजारो शादिया होती हैं। अकेले जयपुर शहर मे इस दिन करीब दस हजार शादिया तक हो जाती है।

पर्दा प्रथा शिक्षा के प्रसार के साथ-साथ कम हो रही है लेकिन अभी भी हिन्दुओ के उच्च वर्गो म यह बहुत हद तक बनी हुई है। मुसलमानो म भी शिक्षा का प्रसार कम होने के कारण औरतें बुर्का पहिनकर ही घर से बाहर निकलती हैं।

राजस्थान का साहित्य और कला

राजस्थान की सभ्यता और संस्कृति जितनी प्राचीन है उतना ही यह साहित्य भी पुराना है। यहां की प्राचीन भाषा राजस्थानी ही मानी जाती है राजस्थान के अलग-अलग राज्यो में विभक्त होने के कारण यहां की बोलि अलग अलग रही हैं। कहावत मशहूर है कि राजस्थान में बीस कोस (50) मीटर) चलने के बाद बोली और पानी बदल जाता है।

राजस्थानी भाषा—राजस्थानी यहां की प्राचीन भाषा रही है ऐतिह तथ्यो और उपलब्ध साहित्य के आधार पर यह कहा जा सकता है कि राज भाषा का उपयोग राजस्थान ही नही पूरे उत्तरी भारत मे होता था। गुजरात मध्यप्रदेश के मालवा क्षेत्र में भी राजस्थानी भाषा का प्रभाव परिलक्षित होत बृज भाषा के 16 वी शताब्दी में लोकप्रिय होने के साथ ही राजस्थानी का कम हुआ। पूर्वी उत्तर प्रदेश में अवधी और दिल्ली आगरा मे उर्दू जबान लगी। इसी के साथ हिन्दी भाषा बनी और बीसवी शताब्दी तक खडी बोल निर्माण हो गया। हिंदी के विकास के साथ-साथ राजस्थानी इन क्षेत्रो से लुप्त चली गई और ती भाषा के कारण राजस्थानी केवल राजस्थान तक ी रह गई।

राजस्थानी भाषा बहुत प्राचीन है। दस से • ी शताब्दी बीच उ राजस्थान ८ इसका प्रमाण माना जा सकता है। हिन्दी पर राजस्थानी प्रभाव 'पृथ्वीराज रासो' रचना को पढने से नजर आ जाता है। 'पृथ्वीराज डिंगल भाषा की रचना जो हिन्दी और राजस्थानी दोनो में ही मानी जाती प्राचीन काल और फिर मध्यकाल में राजस्थानी भाषा मे साहित्य सृजन काफी वर्तमान में राजस्थानी साहित्य का बहुत कम सृजन हुआ है जो कुछ भी सा उपलब्ध है वह प्राचीन और मध्यकाल का ही है। श्री पुरुषोत्तमलाल मेनारि राजस्थानी साहित्य के इतिहास को चार भागो में विभक्त किया है जिसे इस बांटा जा सकता है।

(1) प्रारंभ काल—वि.स. 835 से 1240
(2) वीरगाथाकाल—,, 1241 से 1584
(3) भक्ति काल—,, 1585 से 1913

(4) आधुनिक काल—,, 1914 मे प्रारम्भ

राजस्थानी साहित्य अधिकाशत हिन्दी की तरह अपभ्रंश मे ही उपलब्ध है। इस साहित्य के रचयिता मुख्यत जैन और चारण विद्वान रहे हैं। चारण कवि व विद्वान राजाओ पर आश्रित रहते थे जिसके कारण उनकी रचनाओ मे उन राजाओ की वीरता व प्रशसा का ही उल्लेख मिलता है।' राजस्थानी साहित्य मौखिक व लिखित दोनों प्रकार का है। हस्तलिखित प्राचीन साहित्य को चार भागो मे बाटा जा सकता है—

(1) चारण साहित्य, (2) जैन साहित्य, (3) ब्राह्मण साहित्य और (4) सन्त साहित्य

चारण साहित्य—यह साहित्य भी गद्य व पद्य दोनो मे मिलता है जिसमे मुख्य रूप से तत्कालीन नरेशो की वीरता का बखान किया गया है। चारण साहित्य मे वीर रस के बाद शृगार व शाति रस की रचनाए भी हैं।

चारण साहित्य मे जो प्रमुख प्रबन्ध काव्य उपलब्ध हैं, उनमे चदवरदाई का पृथ्वीराज रासो, वीठलदास का रुक्मणी हरण, राठौड पृथ्वीराज का वेली किसन रुक्मणी, 'माधोदास चारण का राम रासो,' चारण सिवदास की अचलदास खीची री वचनिका, सूर्यमल्ल मीषण का वश भास्कर' और करणीदान का 'सूरज प्रकाश' मुख्य हैं। प्रबन्ध काव्य के अलावा चारण साहित्य गीत छन्द के रूप मे और दोहो सोरठा कुण्डलियो के रूप मे भी मिलता है। दोहो के कुछ सग्रह सत्रसालरा दूहा, जवानीरा दूहा ढोला मारू-रा दूहा 'ठाकुर जी रा दूहा' पृथ्वीराज रा दूहा आदि कहे जा सकते है।

चारणो ने गद्य साहित्य का सृजन भी बहुत किया। उन्होने जितने साहित्य का सृजन किया, उतना जैन विद्वानो के अलावा किसी अन्य न नहीं किया। चारण राजपूतो के जनजीवन से इतने घुलमिल गये थे कि उनके जीवन के सभी पहलुओ पर उन्होंने अपनी रचनाए लिखी हैं। चारण साहित्यकारो की कुछ प्रमुख कृतिया 'दलपत-विलास' 'औरगजेब की हकीकत' 'उदयपुर री ख्यात' 'कछवाहा री ख्यात' बाकीदास की वाता,' दयालदासरी ख्यात' शिशोदियारी वशावली आदि प्रमुख है।

जैन साहित्य—जैन आचार्यों, मुनियो, श्रवको व मन्त्रियो ने सस्कृत प्राकृत व अपभ्रश भाषाओ के साहित्य की रचना की है। उसे उन्होने लिपिबद्ध करके सुरक्षित भी रखा है यही वजह है कि आज प्राचीनतम साहित्य जैन ग्रन्थो म ही सुरक्षित हैं।

राजस्थानी लोक साहित्य को भी जैन विद्वानो ने ही लिपिबद्ध करके सुरक्षित रखा है। राजस्थानी लोक साहित्य के दोहे, कथाए जो इन भडारो मे उपलब्ध हैं अत्यन्त दुर्लभ हैं। जैन साहित्य मे प्रबन्ध, काव्य, कथाए, फाग, रास गीत प्रमुख हैं।

सस्कृत या ब्राह्मणी साहित्य—यह साहित्य राजस्थान मे

वाला सबसे प्राचीन है जो संस्कृत भाषा म लिखा हुआ है। यह तीन प्रकार का है (i) धार्मिक (ii) साहित्यिक और (iii) ऐतिहासिक इस संस्कृत साहित्य की मुख्य कृतिया इस प्रकार हैं।

(1) **पृथ्वीराज विजय**—इस ग्रन्थ मे रचनाकार जयानक हैं। इसमें ऐतिहासिक विषय सामग्री है, जो उपमाओ व अलकारो से भरी पडी है। इस ग्रन्थ मे मुख्य रूप से चौहान राजाओ विशेष कर पृथ्वीराज तृतीय के गुणो व पराक्रमों का वर्णन है। अजमेर नगर के विकास के साथ ही उस समय की धार्मिक व सामाजिक स्थिति का भी चित्रण उसम है।

(2) **सुर्जन चरित्र**—इसके रचयिता कवि चन्द्रशेखर हैं। बनारस म रचित इस महा काव्य मे बून्दी के राजा सुर्जन हाडा के चरित्र का वर्णन है। जिन्होंने बनारस मे सुन्दर इमारतें, गंगाघाट बनवाया था और द्वारिकापुरी मे रणछोडजी के मन्दिर का निर्माण कराया था।

(3) **हम्मीर महाकाव्य** यह महाकाव्य नयनचन्द्र सूरि ने लिखा था जिसमे रणथम्भौर के चौहान वश के राजा हम्मीर की वीरता का वर्णन हैं। इसमे अलाउद्दीन खिलजी के आक्रमण के साथ ही तत्कालीन समाजिक राजनीतिक जीवन का भी चित्रण है।

(4) **प्रबन्ध चिन्तामणी**—इस ग्रन्थ के लेखक मेरुतुंग हैं। इसम 13 वीं शताब्दी के राजनीतिक व सास्कृतिक जीवन का वर्णन है।

(5) **प्रबन्ध कोष**—इस ग्रन्थ के रचयिता राजशेखर हैं। 16 वी शताब्दी म लिखे इस ग्रन्थ म जैन साधुओं राजा, कवि व ग्रन्थों का जीवन वृतात है।

(6) **राजवल्लभ**—इस ग्रन्थ को महाराणा कुम्भा के शिल्पी मण्डन ने लिखा था। उस समय की वास्तु व शिल्पकला का इससे पता चलता है।

(7) **एकलिंग महात्म्य**—गहलोत वश की वशावली बताने वाले इस ग्रन्थ का रचनाकार महाराणा कुम्भा को माना जाता है।

(8) **भट्टिकाव्य**—इस ग्रन्थ से 15 वीं शताब्दी के जैसलमेर के राजनीतिक व समाजिक जीवन का पता चलता है। जैसलमेर के राव भीम की मथुरा वृदावन यात्रा व राजा अक्षयसिंह के तुलादान का भी इसम वर्णन है।

(9) **राज विनोद**—इसम बीकानेर की 16 वी शताब्दी के समाजिक आर्थिक व सैनिक जीवन का वर्णन है। इसके लेखक भट्ट सदाशिव हैं। बीकानेर के राजाओ का वर्णन जयसोम के ग्रन्थ कर्मचन्द्र वंशोत्कीर्तनक काव्यम म भी मिलता है।

(10) **अमरसार**—इसमे राणा प्रताप और उनके पुत्र अमरसिंह के जीवन का वर्णन पण्डित जीवाधर ने किया है। उदयपुर के शासकों की उपलब्धियो व

समाजिक जीवन का वर्णन रणछोड भट्ट की रचना अमरकाव्य वंशावली मे भी मिलता है।

(11) अजितोदय—मारवाड के राजा अजीतसिंह के राज दरबारी कवि भट्ट जगजीवन ने इसकी रचना की थी, जिसमे जसवन्तसिंह के पुत्र अजीतसिंह के जीवन और नागरिक जीवन का वर्णन है।

इनके अतिरिक्त सस्कृत भाषा मे कुछ अन्य रचनाए व उनके लेखको के नाम इस प्रकार हैं—

रचना	लेखक
(1) राज रत्नाकर	सदाशिव।
(2) समराइच्चकहा	हरिभद्र सूरी।
(3) वृहत् कथा कोष	हरिसेन।
(4) कुवलय माला	उद्योतन सूरी।
(5) पार्श्वनाथ चरित्र	श्री धर।
(6) जिनदत्त सूरी स्तुति	पाल्ह जैन ग्रन्थ।

इनके अलावा भी भीनमल नगर के रहने वाले नागर ब्राह्मण कवि पद्मनाभ का कान्हदे प्रबन्ध महत्वपूर्ण काव्य है, जिसमे अलाउद्दीन व सोनिगरा चौहान कान्हदे के युद्ध का वर्णन है। इन्हीं की एक अन्य महत्वपूर्ण रचना हम्मीरायण भी है। नरपति नाल्ह ने बीसलदेव रासो की रचना की थी।

सन्त साहित्य—परोपकार की भावना से काम करने वाले सतो ने भी अपने साहित्य की रचना से मानव और समाज मे सुख-शाति की स्थापना का प्रयास किया। राजस्थान मे दादू, कबीर, रैदास, गोरखनाथ आदि ने बहुत लम्बे समय तक निवास करके साहित्य सृजन किया। मीराबाई, सुन्दरदास, सहजोबाई और महात्मा जगनाथ की जन्मभूमि राजस्थान ही है। कबीर की रचनाओ मे राजस्थानी का प्रभाव स्पष्ट नजर आता है। बालकदास, जनगोपाल, प्रतापसिंह, कुअर महाराजा प्रतापसिंह ने भी पौराणिक चरित्र गाथाए लिखी हैं।

मध्यकालीन कथा साहित्य—राजस्थानी भाषा का मध्यकालीन कथा साहित्य बातो के रूप मे मिलता है। जिसका अर्थ लघु कथा या छोटा उपन्यास होना है। ये सब रचनाए घटना प्रधान हैं, जिनका कथानक काय गति से पूर्ण है पर कही सूक्ष्म वर्णन भी है। कुछ बातो मे भाषा शैली मुख्य है। अधिकतर ये रचनाए वीर रस, प्रेम रस और हास्य रस की हैं।

इस कथा साहित्य की मुख्य रचनाए चाद कुवर की बात, बोडीयन री बात, माडाली री बात, बात ठगरी बेटी री, राव रिणमाल री बात, अमरसिंह री बात, राजी री बात, मानदद री बात, राजा मानधाता री बात, जोग चारण री बात, दानिगढ़ री बात, और सपरणी चारणी री बात हैं।

राजस्थान मे मध्यकाल में हिन्दी साहित्य का विकास हुआ पर उसका ...

काल राजस्थानी भाषा से बहुत प्रभावी रहा। भक्तिकाल में दौरान मीरा बाई, रैदास, दादू, गोरख, सुन्दरदास, महात्मा जगनाथ ने अपनी भक्तिकाल की रचनाएं लिखी, जिसमे राजस्थानी भाषा का प्रभाव नजर आता है। इन रचनाओं का मूल तत्व धर्म व समाज सुधार रहा। इसी काल मे संत कवियों के अतिरिक्त रीतिकाल मे महाकवि बिहारी भी हुए, जिनके दोहे चुभने हुए होते थे।

आधुनिक काल मे राजस्थानी साहित्य—हिन्दी के विस्तार व प्रसार के साथ-साथ ही राजस्थानी भाषा का साहित्य आधुनिक काल मे बहुत धीरे हो गया है। फिर भी वर्तमान मे राजस्थानी म साहित्य सृजन कुछ तेज हुआ है।

कविता साहित्य मे कन्हैयालाल सेठिया की 'पातल और पाथल' सुंदर महत्वपूर्ण रचना है। राजस्थानी मे ही मेघराज मुकुल की 'सनाणी' लोकप्रिय रचना रही है। ठाकुर रामसिंह की 'मातृभाषा रो गीत' सुन्दर रचना मानी जाती है। केसरीसिंह बारहठ, उदयराज उज्जवल, नाथूदास, बद्रीप्रसाद आचार्य, मुरलीधर व्यास, भोपराज भी आधुनिक काल मे राजस्थानी भाषा के कवि रहे हैं।

कथा साहित्य मे भी राजस्थानी भाषा म आधुनिक काल मे काम हुआ है। विजयदान देथा ने 'बाता री फुलवारी' मे राजस्थानी लोक कथाओं का सग्रह किया है। श्रीमती लक्ष्मीकुमारी चूडावत भी जानी मानी लेखिका रही हैं। शिवचरण भारती ने 'कनक सुन्दरी', श्रीलाल जोशी ने 'आभेपतरी' बद्रीप्रसाद सकरिया ने 'अनोखी कहानी', मुरली धर व्यास व नरोत्तमदास स्वामी की 'राजस्थानी कहावता' मे मणि मधुकर की 'पगफेरो' राजस्थानी साहित्य की उल्लेखनीय रचनाएं हैं। 'पगफेरो' तो 1975 मे साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत भी हो चुकी है। अगरचन्दनाहटा, गुलाबचन्द गणगौरी, मुनालाल पुरोहित भी राजस्थानी के लेखक हैं।

कोमल कोठारी राजस्थानी लोक साहित्य के सकलन का कार्य कर रहे हैं। कोठारी को 1975 मे नेहरू फैलोशिप प्रदान की गई थी। सीताराम लालस ने राजस्थानी शब्द कोष तैयार किया हैं। चन्द्रसिंह ने कालीदास के नाटकों का अनुवाद राजस्थानी मे किया है।

आधुनिक काल मे हिन्दी साहित्य—राजस्थान म आधुनिक काल म कई प्रसिद्ध हिन्दी साहित्यकार हुए हैं जिनकी रचनाए प्रसिद्ध हुई है।

कविता साहित्य—के क्षेत्र मे कन्हैलाल सेठिया मेघराज मुकुल, सत्य प्रकाश जोशी, सुधीन्द्र, गिरधरशर्मा, गणपतिचन्द्र भडारी, नन्द चतुर्वेदी प्रमुख कवि व गीतकार रहे हैं।

कथा साहित्य—मे मन्नू भडारी, शचीन्द्र, परदेशी, शील, मोहनरनाथ दिनकर, शांतिलाल भारद्वाज, लक्ष्मीकांत शर्मा उपन्यासकार है। मणि मधुकर, जयसिंह राठौड़, आलमशाह' कहानीकार रहे हैं।

गद्य साहित्य—में स्व डा. रांगेय राघव, मोतीलाल मेनारिया, अगरचन्द नाहटा डा हीरालाल माहेश्वरी, डा. कन्हैयालाल सहल, नरोत्तम स्वामी के नाम प्रसिद्ध हैं। व्यंगकारो मे त्रिभुवन चतुर्वेदी का नाम उल्लेखनीय है।

प्रमुख साहित्यकार

नरपति नाल्ह—इन्होने बीसलदेव रासो की रचना सं. 1212 में की थी। नाल्ह विग्रहराज चतुर्थ के दरबारी कवि थे। विग्रहराज सांभर का शासक था। बीसलदेव की वीरता, राजमती के साथ प्रेम आदि का वर्णन इन्होंने अपनी रचना मे किया है। 'बीसलदेव रासो' राजस्थानी की रचना है जिसमे कुछ शब्द तुर्की, फारसी, अरबी व डिंगल के भी मिलते हैं। ये शृंगार रस के कवि थे।

जयानक—जयानक संस्कृत के ग्रंथ 'पृथ्वीराज विजय' के लेखक थे। 12वीं शताब्दी मे लिखे गये इस ग्रंथ मे तब की ऐतिहासिक, राजनीतिक व आर्थिक परिस्थितियों का वर्णन किया गया है। वे अच्छे कवि थे और उन्होंने अजमेर के विकास का इसमे पूरा वर्णन किया है। जयानक कश्मीर के निवासी थे

चन्द्रबरदाई—वे पृथ्वीराज रासो के रचियता थे वे भट्ट जाति के चारण कवि थे। वे पृथ्वीराज चौहान के यहां राज कवि भी थे। चौहान से उनकी मित्रता घनिष्ट थी। इनके काव्य मे वीर रस तथा अन्य विशेषताएं पाई जाती हैं। चन्द्र बरदाई चौहान के साथ युद्ध मे लड़े थे यह कहा जाता है कि मुहम्मद गौरी की कैद में चौहान के हाथो शब्दभेदी बाण चलवाकर उन्होंने गौरी को मरवाया था और फिर एक दूसरे के सीने मे कटार भोंक कर उन्होंने आत्महत्या कर ली थी।

बिठू सूजो नागर जोत—इन्होने 'राव जैतसी रो छन्द' की रचना सन् 1529 मे की थी। वे बीकानेर के दरबारी कवि थे। डिंगल भाषा की इस रचना में उन्होंने राव जैतसी की वीरता का वर्णन किया है।

सूर्यमल्ल मीशण—मीशण बूंदी के चारण कवि थे जिनकी रचना भास्कर वंश भास्कर प्रसिद्ध है। इस रचना मे बूंदी के चौहान राजाओ का वर्णन है। वे डिंगल, संस्कृत और बृजभाषा के विद्वान थे। इनकी रचना वीररस की है।

पृथ्वीराज राठौड़—वे मुगल बादशाह अकबर के सम्मानित दरबारी थे। 'वेलि क्रिसन रुकमणी री' इनकी प्रमुख रचना है जिसमे उस समय के रीति-रिवाजों, त्यौहारों व उत्सवो का वर्णन है।

नैणसी—नैणसी मारवाड़ के राजा जसवन्त सिंह के दीवान थे। उन्होने राजपूतों के इतिहास का संकलन अपनी रचना नैणसी री ख्यात में किया है। नैणसी को राजपूताने का अबुल फजल कहा जाता है।

करणीदान—मारवाड़ के राजा अभयसिंह के दरबारी करणीदान ने डिंगल भाषा मे सूरज प्रकाश काव्य की रचना की है। चारण जाति के इस विद्वान ने उस समय के रीति रिवाजों के साथ ही युद्ध का भी आंखों देखा वर्णन किया है।

बांकीदास—महाराणा मानसिंह के दरबारी बांकीदास संस्कृत, डि
ब्रजभाषा के विद्वान थे। इन्होंने बांकीदास री वाता लिखी है। इन्हें इतिह
का बड़ा ज्ञान था। बांकीदास ने अपनी कविता में अंग्रेजों की अधीनता स्वीक
करने वाले राजपूत राजाओं को फटकारा था।

दयालदास—बीकानेर के राजाओं के विश्वास पात्र चारण दयालदास ने
अपनी रचना दयाल दास री ख्यात में बीकानेर के राजाओं की वीरता
वर्णन किया है।

मीराबाई—मीराबाई मेड़ता के सरदार रत्नसिंह की पुत्री थी जिनक
विवाह मेवाड़ के राणा सांगा के पुत्र भोजराज से हुआ था। कृष्ण की दीवा
मीरा ने अपने आराध्य की भक्ति में कई पदों की रचना की जो आज भी लो
की जुबान पर है। इनके पति की मृत्यु जल्दी हो गई और देवर ने साधुओं
उठने बैठने का विरोध करते हुए मीराबाई की हत्या करने की कई कोशिशें
पर असफल रहा है। मेवाड़ से मीराबाई वृन्दावन चली गई थी जहां एक दिन कृ
की भक्ति करते-करते रणछोड़जी की मूर्ति में विलीन हो गई।

दादूदयाल—गुजरात निवासी दादू दयाल ने राजस्थान में दादू पं
चलाया था। ये ईश्वर व गुरु में विश्वास करते थे पर जातिवाद, रूढ़िवाद
पूजा के विरोधी थे। जयपुर जिले के नरायणा गांव में इनकी मृत्यु हुई थी
आज भी इनकी स्मृति में एक स्मारक बना हुआ है।

रैदास—जातिवाद, रूढ़िवाद और आडम्बर के विरोधी रैदास बनारस
जूते गांठ कर अपना गुजारा चलाते थे। भारत-भ्रमण करते हुए ये चित्तौड़
थे और मीराबाई से मिले थे। इनकी एक छत्री यहां कुम्भा श्याम के मन्दि
बनी हुई है। रैदास की रचनाएं गुरु ग्रन्थ साहिब में संग्रहित हैं।

सुन्दर दास—खण्डेलवाल जाति के विद्वान सुन्दरदास ने सुन्दर विल
की रचना की है। इनकी गणना भी मीरा दादू, रैदास, कबीर की तरह संत क
में होती है। सुन्दरदास पर दादूदयाल का प्रभाव था। उन्हें ब्रजभाषा का
अच्छा ज्ञान था। इन्होंने सवैये, कवित्त भी लिखे हैं।

कन्हैयालाल सेठिया—सेठिया आधुनिक काल के हिन्दी और राजस्थ
भाषा के लेखक है। पातल और पीथल इनकी अति प्रसिद्ध काव्य रचना है।

विजयदान देथा—देथा ने राजस्थानी में अनेक पुस्तकें लिखी हैं। बाता
फुलवारी प्रसिद्ध रचना है जिसमें राजस्थानी लोक कथाओं का संग्रह किया
इस पुस्तक पर उन्हें साहित्य अकादमी ने पुरस्कार भी प्रदान किया है। राज
स्थानी के लोक गीत, कथाओं आदि के शोध में भी इनका महत्वपूर्ण योग
रहा है।

कोमल कोठारी—रूपायन संस्था के संचालक कोमल कोठारी एक

स्थानी लोक गीतो, कथाश्रो श्रादि का सकलन व शोध कार्य व
स्थानी साहित्य मे किये गये कार्य के लिये ही उन्हें नेहरू फे
गई थी।

सीताराम लालस—लालस भी राजस्थानी भाषा के
विद्वान है। लालस ने राजस्थानी शब्द कोप का निर्माण किया है। जोधपुर विश्व-
विद्यालय इन्हे डी. लिट की मानद उपाधि से विभूषित कर चुका है।

अगरचन्द नाहटा—नाहटा ने राजस्थानी मे लघु कथाए लिखी है। ये
हिन्दी और राजस्थानी के गद्य लखक हैं।

बशीर अहमद मयूख—मयूख जहा कवि है वही वैदिक व जैन धर्म के
विद्वान भी हैं। उन्होने गालिब की रचनाश्रो का राजस्थानी मे अनुवाद किया है।
मयूख को 1976 मे सिंघवी राष्ट्रीय एकता पुरस्कार दिया गया था।

मणि मधुकर—मणि मधुकर भी राजस्थानी श्रौर हिन्दी के लेखक हैं।
इनके काव्य पगफेरो पर साहित्य अकादमी श्रौर उपन्यास भरत मुनि के बाद
पर प्रेमचन्द पुरस्कार मिल चुका है।

(3.5)

ललित कलाए

राजस्थान का साहित्य देश मे गौरव से पढा-सुना जाता है। साहित्य की
तरह ही राजस्थान ललितकलाश्रो का भी भंडार कहा जा सकता है। यहा की
स्थापत्य कला, चित्रकला, नृत्यकला, भित्ति चित्र श्राज भी उतने ही प्रसिद्ध हैं
जितने पूर्व मे थे। यहाँ की स्थापत्य कला का किलो, महलो और मन्दिरो मे प्रादु-
र्भाव हुआ है जो श्राज भी बेजोड है। स्थापत्य कला को देखने के लिए हर साल
राजस्थान मे लाखो देशी-विदेशी पर्यटक श्राते है। इसी तरह चित्रकला की भी
विभिन्न राजघरानो की अलग-अलग शैलियाँ श्राज भी प्रसिद्ध है।

स्थापत्य कला—राजस्थान मे स्थापत्य कला काफी समृद्ध रही है जो
मन्दिरो राजप्रासादो को देखने से नजर श्रा जाती है। मन्दिरो मे मूर्तिया भी काफी
कलापूर्ण हैं जयपुर मे मूर्तिकला श्राज भी समृद्ध हैं जिसमे हजारो लोग काम पर
लगे हुए हैं। यहाँ मूर्तिकला का विकास मुगलकाल मे राजा मानसिंह के समय से
हुआ।

राजस्थान को किलो का घर कहा जाता है। इन किलो मे स्थापत्य कला
अधिक मुखरित हुई है। काली बगा की सभ्यता के जो अवशेष है उनमे भी किले
का भाग दिखाई देता है। राजा लोग अपनी प्रजा, सेना, सुरक्षा के लिये किले
बनाते थे। चित्तौड का दुर्ग सबसे पुराना है। चौहान राजाश्रो ने भी अजमेर,
रणथम्भोर, नागौर मे किले बनवाये थे। भटनेर का किला बहुत

आमेर के किले में राजपूत व मुगल स्थापत्य कला का समावेश है। ह
किला अपनी अलग विशेषता लिये हुए है।

किलों के बाद उनके अन्दर व बाहर बने राजप्रासाद भी स्थापत्य कल
श्रेष्ठ प्रमाण कहे जा सकते है।

ऊंची छतें, साफ सुथरे विशाल व हवादार कमरे और उनकी छतों व
पर की गई कारीगरी आज भी मन मोह लेती है। मुगल शैली की सजावट को
राजपूतों ने अपनाया और महलों, मे बाग फव्वारे आदि बनवाये।

किलो और महलों के अलावा मन्दिरों के निर्माण की स्थापत्य कला
अनूठी और आकर्षक रही है। मन्दिरों में देवी देवताओं के भाव व मुद्रांकन सूक्ष्म
व दक्षता से किया गया है। बाल क्रीड़ा संघर्ष, शंखनाद, रासलीला आदि
अकन मन्दिरो की दीवारों व खभों पर उत्कीर्ण किया हुआ है। जैन तथा
धर्म के अवशेष भी स्थापत्य कला की प्रचानीता को दर्शाते हैं।

रणकपुर देलवाड़ा के जैन मन्दिर, चित्तौड़ का सूर्य मन्दिर, शिव मं
आम्बानेदी का हर्ष माता का मन्दिर, ओसियां के मन्दिर स्थापत्य कला के उ
उदाहरण हैं। कमलगढ़ का नीलकण्ठ मन्दिर और एकलिंगजी का मन्दिर दुर्ग
बनाया गया है।

जलाशय उद्यान आदि भी स्थापत्य कला के विकास को दर्शाते हैं।
की समाधियां और छतरियां भी स्थापत्य कला के अनुपम उदाहरण हैं। उद
में आहड़ जयपुर मे गैटोर, जोधपुर में पत्र कुण्ड, बीकानेर व देवकुण्ड में
शासको की छतरियां बनी हुई है जो पटकोण में बनती थीं। इन छतरियां में
संगमरमर पर कारीगरी दर्शनीय है।

स्थापत्य कला की दृष्टि से राणा मोकल, राणा कुंभा, राजा मान
राजा जसवन्तसिंह मिर्जा राजा जयसिंह द्वारा बनायें गये उद्यान भी दर्शनीय
सवाई जयसिंह ने जयपुर शहर का निर्माण सन् 1727 में कराया था
आज भी स्थापत्य कला का सुन्दर उदाहरण माना जाता है।

चित्रकला—स्थापत्य कला के साथ-साथ ही राजस्थान में चित्रक
भी पनपी है राजपूत शासकों ने चित्रकारों को बहुत प्रोत्साहन दिया और
औरंगजेब ने उन्हे दरबार से निकाल दिया तो इन्होने राजघरानों की श
में ही अपनी कला को विकसित किया। राजस्थान की चित्रकला मे प्रेम रस
काफी चित्रण हुआ है। देवी-देवताओं के चित्र राग-रागिनियों के चि
प्रेम श्रृंगाररस के बने चित्र सैकड़ो वर्षो के बाद आज भी खराब न
हुए है।

राजस्थान की चित्र शैली मे नारी के सौन्दर्य को प्रधानता दी गई है
भारतीय नारी के सौन्दर्य और आदर्श का उसमे समावेश नजर आता है। कम

की तरह बड़ी-बड़ी आँखें लहराते हुए या चोटी गूथे बाल, पतली कमर व गुनिया इन चित्रो के नारी सौन्दर्य को स्पष्ट करती है। कई चित्रो मे शिकार का भी चित्रण होता है जो पुराने शासन मे राजपूतो का प्रमुख शौक था। किशनगढ शैली की बनीठनी नारी सौन्दर्य का उत्कृष्टतम चित्र कहा जा सकता है।

चित्रकला की कई शैलिया राजस्थान मे प्रचलित थी जिनमे से कुछ इस प्रकार हैं—(1) किशनगढ शैली, (2) मेवाड शैली, (3) मारवाड शैली, (4) बूदी शैली, (5) जयपुर शैली, (6) बीकानेर शैली, (7) नाथद्वारा शैली, (8) अलवर शैली (9) डागियारा शैली (10) डूगर शैली। राजस्थान की चित्रकला अपनी प्राचीनता, कलात्मकता, रग और विविधता के लिये प्रसिद्ध है।

भित्ति चित्र—चित्रकला के साथ ही राजस्थान मे भित्ति चित्रो की कला भी दर्शनीय है। आरायश से बने भित्ति चित्र आज भी खराब नही हुए है। राजस्थान के सभी प्रमुख मन्दिर व महलो मे भित्ति चित्रो की कला देखी जा सकती है।

संगीत कला—सगीतकला राजस्थान मे बहुत पहले से ही काफी प्रगति कर चुकी थी। पुरावशेषो मे यह प्रमाण मिलते हैं कि यज्ञो और उत्सवो मे सामवेद का गायन होता था। नरेशो ने अपने यहाँ अन्य कलाओ की भाँति सगीत व नृत्य कला को भी काफी प्रोत्साहन दिया।

मेवाड के महाराणा कुम्भा खुद सगीत विद्या मे प्रवीण थे। मीराबाई का मल्हार राग राज भी प्रसिद्ध है। मिर्जा राजा जयसिंह के यहाँ जयपुर मे बिहारी ने सतसई बनाई थी। एक सगीत ग्रथ हस्तकार रत्नावली भी सत्रहवीं शताब्दी मे लिखा गया था। जयपुर के महाराजा सवाई प्रतापसिंह भी संगीताचार्य थे। उनके समय मे मतगो उस्ताद चाँद खाँ ने 'स्वर सागर' और देवीप भट्ट ब्रजपाल ने राधागोविन्द सगीत सार की रचना की थी। राजस्थान मे ही उस्ताद अल्लादिया खा व जाकिरुद्दीन खा के प्रसिद्ध घरानो ने आश्रय पाया था। जोधपुर, जयपुर, करौली, अलवर, बीकानेर मे आज भी कई अच्छे गायक है। जयपुर का डागर बन्धु और बीकानेर की अल्ला जिलाई बाई का गायन आज भी मशहूर है।

नृत्य कला—सगीत के साथ ही राजा महाराजाओ ने नृत्यकला को भी प्रोत्साहन दिया, विशेषकर यहा के लोकनृत्य आज भी बहुत प्रसिद्ध हैं। त्यौहारो व उत्सवो के अलावा राज दरबार मे भी नर्तक व नर्तकियो को सम्मान दिया जाता था। होली, दीवाली, तीज, गणगौर आदि पर गूहर व घूमर नृत्य आज भी किये जाते हैं। जयपुर का कत्थक घराना कत्थक के लिए पूरे देश मे सम्मान प्राप्त है। धार्मिक त्यौहारो पर भी अलग-अलग नृत्य होते हैं। घूमर नृत्य राजस्थान मे सर्वाधिक लोकप्रिय है। झूमरा नत्य वीर रस व ... शृगारिक नृत्य है ... अब एक ... केन्द्र खोलकर इस नृत्य ... क्षण दिया जा रहा है।

आज का राजस्थान

स्वतन्त्रता प्राप्ति से पूर्व राजस्थान कई राज्यों में बटा हुआ था और इन राज्यों में जनता के हित का ध्यान राजाओं पर निर्भर करता था। जिन राजाओं की रुचि जनकल्याण में हुई उन्होंने अपने यहां काफी विकास कार्य किए। बीकानेर रियासत को इस बारे में एक उदाहरण के रूप में लिया जा सकता है जहां विकास के काफी कार्य हुए, सड़कें बनीं, रेल लाइन बिछी और जमीन की पैमाइश का काम हुआ। रेगिस्तानी क्षेत्र बीकानेर रियासत में वहां महाराजा गंगासिंह ने गंगनहर बनवाई जिससे गंगानगर का इलाका सरसब्ज हो गया। इसी तरह से सभी रियासतों में कुछ न कुछ विकास कार्य हुआ था लेकिन गरीबों के उत्थान और गावों व शहरों के सुनियोजित विकास का कार्य स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद ही शुरू हो पाया। पिछले तीस वर्षों में पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से राजस्थान विकास के पथ पर तेजी से बढ़ा है लेकिन अभी भी यहां के विशाल भूभाग को देखते हुए बहुत कुछ करना बाकी है।

विकास कार्यों के अलावा राजस्थान में भूमि सुधार, जमींदारी व जागीर प्रथा का उन्मूलन, कृषि व शहरी भूमि की सीलिंग लागू करना, अनुसूचित जाति और जनजाति के लोगों को भूमि आवंटन, औद्योगीकरण, विद्युतीकरण, सिंचाई योजनाओं का जाल बिछाना, सड़कों का निर्माण, स्कूलों का खोलना, चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराना, कृषि उपज मण्डियों का निर्माण और पंचायत व्यवस्था लागू करने के कार्य भी हुए हैं जिन्होंने ग्रामीण क्षेत्रों का कायाकल्प कर दिया है। बड़े नगरों में भी कच्ची बस्तियों के विकास और शहरों की सफाई आदि की दिशा में उत्साहजनक कार्य हुआ है।

जनतान्त्रिक प्रणाली में निर्वाचित सरकार के आने के बाद 35 वर्षों में राजस्थान में काफी काम हुए हैं और इस दौरान यहां के लोगों के रहन सहन आदि में आया परिवर्तन स्पष्ट परिलक्षित होता है।

राजस्थान में अब तक हुए विकास कार्यों को मुख्य रूप से निम्न प्रकार बांटा जा सकता है—

भूमि सुधार	सिंचाई व्यवस्था
चिकित्सा सुविधा	सहकारिता
पेयजल व्यवस्था	पंचायत राज

✓सडक निर्माण (परिवहन) ✓शिक्षा व्यवस्था
✓औद्योगिकरण ✓डेयरी विकास
✓विद्युतिकरण ✓कृषि व पशुपालन

भूमि सुधार—रियासती काल मे राजस्थान मे राजा महाराजाओ के अपने कानून लागू थे। गावो म जमीदार व जागीरदार रहते थे और अधिकाश भूमि भी उनके पास ही रहती थी। इस भूमि को वे किसानो से जुतवाते थे और पूरी देखभाल भी, फसल भी उनके ही जिम्मे रहती थी। इसके बदले उन्हे पेट भरने के लिए फसल का थोडा सा हिस्सा दे दिया जाता था। बेगार प्रथा भी उस समय चरम सीमा पर थी वही लगान नही देने पर उनके साथ गुलामो जैसा बर्ताव किया जाता था।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद सरकार ने सबसे पहले इन गरीब किसानो की स्थिति सुधारने की तरफ ध्यान दिया। सन् 1952 मे राजस्थान भूमि सुधार एव जागीर पुनर्ग्रहण अधिनियम पारित कर जागीरदारी प्रथा समाप्त कर दी गयी। इस अधिनियम को पारित करने के बाद सरकार ने 2 लाख 24 हजार 980 गैर धार्मिक और 57 हजार धार्मिक जागीरो का अधिग्रहण कर लिया। अधिग्रहण के मुआवजे के रूप म सरकार ने करीब 70 करोड रुपया जागीरदारो को दिया।

जागीरो के अधिग्रहण के लगभग सात साल बाद एक नवम्बर 1959 को जमीदारी व बिस्वेदारी प्रथा भी समाप्त कर दी गयी। इसी के साथ राज्य सरकार ने यह भी व्यवस्था की कि काश्तकारो को उनकी भूमि से बेदखल नही किया जाए और लगान की जबरन वसूली नही हो। जागीरदारी, जमीदारी और बिस्वेदारी प्रथा तो समाप्त कर दी गयी पर बेगार प्रथा आज भी समाप्त नही हो पायी है। सरकार को आज भी बधुआ मजदूर मुक्ति अभियान चलाना पडता है। बडे किसानो व साहूकारो के 'कर्ज कम और ब्याज अधिक' के नीचे दबे लोगो को आज भी गावो म बेगार करनी पडती है।

बन्धक मजदूरी उन्मूलन प्रथा के लिए कानून तो सन् 1961 मे ही बना दिया गया था पर उसका प्रभावी क्रियान्वयन आपातकाल (1975–76) मे जाकर ही हो पाया। इस अवधि मे करीब साढ़े पाच हजार बधुआ मजदूरो को मुक्ति दिलायी गयी। इनमे से आधे से ज्यादा लोगो को उसी अवधि मे बसाकर अपने पाव पर खडे होने की सुविधाए जुटाई गयी। वर्ष 1976 मे राज्य मे मजदूरो का सर्वेक्षण किया गया और 6 036 बधक मजदूर शनाख्त किये गये। वर्ष 1977–78 तक करीब 4,266 बधुआ मजदूरो को विभिन्न योजनाओ के अन्तर्गत पुनर्वासित कर दिया गया। वर्ष 1978–79 मे केन्द्र प्रवर्तित योजना के तहत शेष बधुआ मजदूरो के पुनर्वास हेतु 71 लाख रुपये की एक योजना बनाई गई और उसके क्रियान्वयन से वर्ष 1978-79 मे 700, वर्ष 1979-80 मे 700 तथा वर्ष 1980–81 म 344 मजदूरो का पुनर्वास किया गया। वर्ष 1981-82 मे झालावाड जिले मे 26 बधक मजदूर शनाख्त किये गये और

1,04,000 रुपये व्यय करके उनका पुनर्वास किया गया। इस प्रकार राज्य
घनाख्त शुदा सब बन्धक मजदूरों का पुनर्वास कर दिया गया है।

इसके बाद सभी जिलाधीशों को यह निर्देश दिये गये कि वे पुन सर्वे
कर यह सुनिश्चित करलें कि उनके जिले में अब कोई बन्धक मजदूर नहीं है।
1982-83 में फिर भी 200 बंधक मजदूरों के योजनाबद्ध पुनर्वास का ल
रखा गया।

भूमि सुधार की दिशा में ही कदम उठाते हुए सरकार ने कृषि सम्बन्धी
कानूनों का सन् 1955 में एकीकरण किया और नया काश्तकारी कानून बनाया।
काश्तकारी कानून बनाने के साथ ही सरकार ने लगान की दरों में भी संशोधन
किया और जहा पहले उपज का एक चौथाई लगान दिया जाता था, उसे घटा कर
छठा हिस्सा कर दिया गया। राजस्थान में आये वर्ष अकाल पड़ने के कारण
लगान की वसूली बहुत कम हो पाती है और सरकार को लगान वसूली स्थगित
करने का निर्णय लेना पड़ता है। भूमि सुधार कानूनों के तहत ही सरकार ने अनु
सूचित जाति और जन जाति तथा कमजोर वर्ग के लोगों को भू-आवटन काय
प्राथमिकता दी है। शिकमी काश्तकारों को छोड़ कर राज्य के सभी काश्तकारों
खातेदारी के अधिकार दे दिये गये हैं। किसानों को कर्ज प्राप्त करने में सुविधा हो
इसके लिए उन्हें पास बुक भी दी जाती है। पास बुकों को वैधानिक रूप देने के लिए
कानून में सशोधन किया जायेगा।

काश्तकारों को अपने गाव में रहने के लिए निःशुल्क भूखण्ड प्राप्त करने के
अधिकार भी सन् 1955 में ही प्राप्त हो गये। भूखण्ड आवटन का काम अब भी
जारी है पर सिंचित भूमि का आवटन पूरा हो चुका है और अब केवल रेगिस्तानी
क्षेत्रों में असिंचित भूमि का आवटन ही बाकी है। सिंचित भूमि का आवटन-अब
केवल वही रह गया है जो सीलिंग से अधिक भूमि के अधिग्रहण में प्राप्त हो
रही है।

भूमि सुधारों के साथ ही नामान्तरकरण का काम भी काफी बढ़ा है।
राज्य सरकार हर वर्ष राजस्व अभियान चला कर नामान्तरकरण, भूखण्ड आवटन
अतिक्रमण आदि के मामलों का निपटारा करती है।

राज्य सरकार ने कमजोर वर्गों के लोगों को भूमि आवटन के साथ ही
उसकी रक्षा की व्यवस्था भी की है। इन लोगों की कृषि भूमि के सवर्णों का
हस्तांतरण पर रोक लगा दी गई है वहीं इस लोगों को जमीन से बेदखल करने या
उस पर अतिक्रमण करने वालों के खिलाफ कानून बना कर तुरत फुरत मुकदमा
कर दण्ड देने का प्रावधान भी किया गया है। इसी के साथ खेतिहर मजदूरों की
मजदूरी भी निर्धारित कर दी गई है।

सीलिंग से अधिक भूमि का अधिग्रहण—राजस्थान में पांच जनों के
एक परिवार पर कृषि भूमि रखने की सीलिंग लगाने का कानून 1958 में पारित

हुआ पर 1966 मे ही उसके नियम आदि बने और यह क्रियान्वित हो सका। पहले सीलिंग कानून के तहत एक परिवार 30 एकड से अधिक जमीन नही रख सकता था। 1973 मे इस कानून मे फिर सशोधन किया गया और 22 एकड की सीमा तय कर दी गई। यह सीमा अलग अलग क्षेत्रो की मिट्टी के उपजाऊपन और सिंचाई की सुविधाओ को ध्यान में रख कर कम से कम 22 एकड और ज्यादा से ज्यादा 200 एकड रखी गई थी।

राज्य मे दिसम्बर, 1981 तक 87,286 सीलिंग के मामले दर्ज हुऐ थे, जिनमे से 85,503 मामलो का निष्पादन हो चुका है और अब केवल 1,783 मामले ही विचाराधीन रह गये है। इनमे से अधिकतर मामलो को सबधित न्यायालयो से शीघ्र निर्णित करवाने का प्रयास किया जा रहा है।

अब तक निष्पादित मामलो के अन्तर्गत 6,13,176 एकड भूमि अवाप्ति हेतु सरप्लस घोषित की गई जिसमे से 5,31,095 एकड भूमि का कब्जा भी लिया जा चुका है। शेष भूमि मे से, जिनके सम्बन्ध मे न्यायिक विवाद विचाराधीन नही है, उनका कब्जा भी आगामी वर्ष मे ले लेने का लक्ष्य है। जिस भूमि का कब्जा लिया जा चुका है उसमे से 4,48,183 एकड भूमि का आवटन किया जा चुका है। जो अवाप्त शुदा 1,82,912 एकड भूमि अब आवटन से शेष रह गई है, उसमे से करीब 75,000 एकड भूमि कतिपय वैज्ञानिक कारणो से कृषि अयोग्य है। इस प्रकार कुल 1,07,912 एकड अवाप्तशुदा भूमि ऐसी बचती है जो कृषि योग्य होने के कारण आवटित की जा सकती है। इसमे से 47,377 एकड भूमि राजस्थान नहर के कमाण्ड क्षेत्र मे है और उसका आवटन नहर की वितरण प्रणाली बन जाने और भूमि का विकास हो जाने पर ही हो सकेगा। 33 495 एकड भूमि ऐसी है जिसके सम्बन्ध मे न्यायालयो मे विवाद चल रहे है और स्थगन आदेशो के अन्तर्गत आवटन सम्भव नही है। अत करीब 27,040 एकड भूमि ऐसी बच जाती है जिसका तुरन्त आवटन किया जा सकता है इसमे से भी 17,330 एकड भूमि जैसलमेर-जिले मे जहा मरूक्षेत्र होने के कारण इस भूमि का कृषि हेतु उपयोग न होकर वन विकास, चरागाह विकास आदि मे ही हो सकेगा। शेष लगभग 10,000 एकड भूमि का वर्ष 1982-83 मे आवटित करने का लक्ष्य रखा गया।

राज्य सरकार ने भूतपूर्व नरेशो की सीलिंग से अधिक जमीन अधिग्रहीत करने के लिए कानून बनाया था पर अधिकाश मामले अदालत मे विचाराधीन होने से, इस कानून के तहत भूमि का अधिग्रहण नही के बराबर हुआ है।

चिकित्सा सुविधाएं – राजस्थान के गठन के समय और आज की स्थितियो चिकित्सा सुविधाओ की उपलब्धि मे बहुत बडा अन्तर आ गया है। चेचक, त... मलेरिया आदि बीमारियो का इलाज बहुत आसान हो गया है।

चिकित्सा सुविधाओ मे पिछले वर्षों मे काफी बढोत्तरी हुई है वहीं उ विस्तार के लिए और गावो मे अधिकाधिक विस्तार के लिये कई नई योजनाए की गई हैं जिनमे से कुछ इस प्रकार है।

(1) बहुद्देशीय कार्यकर्ता योजना—इस योजना के तहत सभी स्वा सम्बन्धी तथ्यो पर जानकारी रखने के लिए स्वास्थ्य कार्यकर्ताओ को प्रशि दिया जा रहा है। पाच हजार की जनसख्या पर दो बहुद्देशीय कार्यकता महिला व पुरुष को लगाया जा रहा है।

(2) जन स्वास्थ्य स्वय सेवक योजना—इस योजना के अतर्गत हजार की जनसख्या पर एक स्वय सेवक वही का निवासी चुना जाता है। गावो म इलाज करने के लिए दवाइयो का वितरण किया जाता है और दवा भी दी जाती हैं।

(3) विस्तृत चिकित्सा सेवा योजना—ग्रामीण क्षेत्रो के निवासि के लिये यह योजना आपातकाल म 1975-76 मे लागू की गई थी। इस योज के तहत वरिष्ठ चिकित्सको की टोली सप्ताह मे एक दिन निश्चित तिथि निश्चित स्थान पर जाते हैं और मरीजो का इलाज करते हैं।

राज्य के पाचो मेडिकल कालेजो के दल जिला स्तर के अस्पताला म जाते और मरीजो को देखते है। इसी तरह जिला अस्पतालो से चिकित्सक उपख मुख्यालयो पर जाते है। जिला अस्पतालो के डॉक्टर प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र मे जाकर मरीजो को अपनी सलाह देते है। इसी तरह प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रो चिकित्सक उपकेन्द्रो पर जाते हैं और गभीर रूप से बीमार रोगियो की चिकि करते हैं।

(4) भ्रमणशील शल्य चिकित्सा इकाई—इस इकाई की स्था 1955 मे की गई थी। यह इकाई 5 सौ शैय्याओ का एक चलता-फिरता अस्पता है जो वर्षा ऋतु को छोडकर पूरे साल गावो म जहा चिकित्सा की पर्याप्त सुवि उपलब्ध नही है नेत्र व शल्य चिकित्सा शिविर आयोजित करता है जिसमे मरी को भर्ती करने के साथ ही मरीजो के रोगो का निदान भी किया जाता है। ह साल इस शल्य चिकित्सा इकाई से हजारो लोग लाभान्वित होते हैं।

(5) अस्पताल व स्वास्थ्य केन्द्र—राज्य मे इस समय प्रत्येक पचाय समिति मे एक प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, दो डिस्पेन्सरी व एक प्राथमिक चिकित्सा पोस्ट का प्रावधान है। धीरे धीरे पिछले वर्षों मे चिकित्सा सुविधा मे काफी वृद्धि हुई हैं और वतमान म पाच हजार की आबादी के पीछे एक स्वास्थ्य उपकेन्द्र खोलने का लक्ष्य लेकर सरकार काय कर रही है।

स्कूली स्तर पर बच्चो के स्वास्थ्य परीक्षण की समय-समय पर व्यवस्था का कार्यक्रम मिडिल स्कूलों म चालू किया गया है। भारत सरकार के सहयोग म राष्ट्रीय विद्यालय स्वास्थ्य योजना 1977 म शुरू की गई थी। इस योजना के

हत प्राथमिक विद्यालयो मे छात्रो के स्वास्थ्य की जाच की जाती है और
सी जी के टीके, हैजा, मोतीझरा व अन्य रोगो की रोकथाम के टीके लगाये
ते है।

✓अधापननियन्त्रण योजना—राज्य मे अधापन रोकने और आखो की
मारिया के इलाज की भी विशेष व्यवस्था की गई है जिसके तहत सभी जिला
स्पतालयो पर नेत्र विशेषज्ञ नियुक्त किये गये है। इसके साथ ही हर साल नेत्र शिविर
लगाये जाते है। हर साल इन नेत्र शिविरो की सख्या बढ रही है और सरकारी
जेन्सियो के अलावा स्वय सेवी सस्थाए भी ऐसे शिविर लगाने मे अत्यधिक रुचि
रही हैं।

तपेदिक (टीबी) की बीमारी की चिकित्सा के लिये भी राज्य मे विशेष
व्यवस्था की गई है तपेदिक अब लाइलाज बीमारी नही रह गई है पर इसके रोगिया
की सख्या निरन्तर बढ रही है।

चिकित्सा शिक्षा—राज्य मे 5 मेडिकल कालेज हैं जिनमे शिक्षा के लिये
450 सीटें निश्चित है। राज्य सरकार आम तौर पर हर साल स्नातक शिक्षा मे
पच्चीस सीटो की बढोतरी करती रही है। डॉक्टरो को अत्याधुनिक चिकित्सा
शिक्षा देने के लिये मेडिकल कॉलेज के प्राध्यापक अपने स्तर पर प्रयास करते रहत
है। जयपुर मे कुछ समय पूर्व ही अनुसधान व उच्च शिक्षा केन्द्र स्थापित किया
गया है। हमे चूरिया निदान केन्द्र की भी जयपुर मे स्थापना की गई है। रिहेबिलि-
टेशन व रिसर्च सेन्टर भी यही खोला गया है।

✓राष्ट्रीय मलेरिया उन्मूलन योजना—राज्य मे मलेरिया की बीमारी को
एक बार पूर्णत समाप्त कर दिया गया था पर उसके बाद उस पर कोई ध्यान नही
दिया गया और मच्छर नये जोश से फिर सक्रिय हो गये है। मच्छरो पर अब डी डी टी
पाउडर छिडकने का भी असर नही होता। राष्ट्रीय मलेरिया उन्मूलन योजना के
तहत मच्छरो के बड़ा होने से पहले ही उनके लार्वा के पैदा होते ही दवाई छिडक
कर मारने का काम किया जा रहा है।

औषधि नियन्त्रण सगठन—नकली दवाइयो की रोकथाम व जीवन रक्षक
दवाइयो का निश्चित मूल्य पर वितरण करने के लिये औषधि नियन्त्रण सगठन
बनाया गया है। चिकित्सा निदेशक राज्य के औषधि नियन्त्रक है। इसके अलावा
एक सहायक औषधि नियन्त्रक (एक आयुर्वेद) और 29 औषध निरीक्षक (तीन
आयुर्वेद) इस सगठन मे कार्यरत रहे है। जयपुर मे एक खाद्य व औषध प्रयोगशाला
स्थापित की जा रही है जिनमे दवाइयो के नमूनो की जाच हो सकेगी। अभी इन
नमूनो की जाच कलकत्ता व गाजियाबाद की प्रयोगशाला मे की जाती है।

नकली दवाइया पकडने के साथ ही चिकित्सा व स्वास्थ्य विभाग के कर्म-
चारी खाद्य पदार्थों मे मिलावट के मामले भी पकडते है। इसके लिये राज्य मे एक
केन्द्रीय जन स्वास्थ्य प्रयोगशाला व 12 जन प्रयोगशालाएं कार्यरत है।

पोषाहार कार्यक्रम—इसके तहत हर वर्ष 50 पोषाहार व खाद्य सर्वेक्षण किये जाते हैं।

कर्मचारी राज्य बीमा योजना—राज्य के श्रमिकों को चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराने के लिये कर्मचारी राज्य बीमा योजना प्रारम्भ की गई है। राज्य मे योजना 1956 से शुरू की गई है। यह योजना इस समय 18 केन्द्रो पर कार्यरत है। जयपुर मे इस योजना का बेडा अस्पताल व 37-औषधालय अन्य स्थानों पर हैं।

प्रशिक्षण संस्थान—राज्य मे बी० एस० सी० नर्सिंग, सामान्य नर्सिंग पाठ्यक्रम (पुरुष व महिला), रेडियोग्राफर, प्रयोगशाला तकनीशियन, फार्मेसी डिप्लोमा व बहुद्देशीय स्वास्थ्य कार्यक्रम पाठ्यक्रम मे प्रशिक्षण देने की व्यवस्था है।

परिवार कल्याण कार्यक्रम—राज्य मे जनसख्या पर नियत्रण और बच्चो व माता की देखभाल के लिये परिवार कल्याण कार्यक्रम बड़े पैमाने पर चलाया जा रहा है।

परिवार कल्याण कार्यक्रम के तहत ही रोगो से बचाव के टीके व महिलाओं और बच्चो को दवाइया दी जाती हैं। नसबदी कराने वालो को प्रोत्साहन राशि के रूप म रुपये दिये जाते हैं।

शिक्षा का विस्तार

राजस्थान मे शिक्षा का विस्तार इसके गठन के बाद काफी हुआ है फिर भी यह अन्य प्रदेशो के मुकाबले यहा काफी है आदिवासी व अन्य पिछड़ी जातियों मे शिक्षा का प्रसार बहुत कम हुआ है। राजस्थान मे शिक्षा का प्रतिशत 24.0 है जो अधिकाश बड़े राज्यो से कम है। पिछले कुछ वर्षो मे राज्य मे शिक्षा विस्तार बडी तेजी से हुआ है और प्राथमिक शिक्षा को प्रोत्साहन देने म सरकार ने बडी रुचि दिखाई है। पिछले तीन वर्षों मे प्रत्येक वर्ष मे एक हजार से ज्यादा प्राथमिक स्कूल खोले गये।

राज्य मे इस समय तीन विश्वविद्यालय हैं उदयपुर, जोधपुर और जयपुर इनके नाम इस प्रकार है—

(1) राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।
(2) सुखाडिया विश्वविद्यालय, उदयपुर।
(3) जोधपुर विश्वविद्यालय, जोधपुर।

पिलानी का बिडला इस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलाजी एण्ड साइन्स (बिटस) को भी विश्वविद्यालय स्तर का सस्थान माना गया है।

राजस्थान मे तीन प्रमुख शोध सस्थान है जो भारत सरकार के हैं। इनके नाम इस प्रकार है—

(1) राष्ट्रीय आयुर्वेद सस्थान जयपुर।
राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, जयपुर
राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र, बीकानेर
भारतीय ऊँन अनुसंधान केन्द्र, जोधपुर।

(2) केन्द्रीय इलेक्ट्रोनिक इन्जीनियरिंग शोध संस्थान, (सीरी) पिलानी और

(3) केन्द्रीय सूखा क्षेत्र शोध संस्थान जोधपुर।

वर्तमान में राज्य में 22 हजार 640 प्राथमिक विद्यालय, 5,697 उच्च प्राथमिक विद्यालय, 1974 माध्यमिक विद्यालय, 508 उच्च माध्यमिक विद्यालय, 148 महाविद्यालय तथा 3 विश्वविद्यालय कार्यरत हैं।

पिलानी के इलेक्ट्रोनिक इन्जीनियरिंग शोध संस्थान में आधुनिकतम शोध की जा रही है। जहां इस संस्था में इलेक्ट्रोनिक कम्प्यूटर, टेलीविजन, वायरलैस सैट (वाकी टाकी) आदि के निर्माण का काम हुआ है वहीं अब सौर ऊर्जा के अधिक से अधिक उपयोग के लिए भी शोध कार्य किया जा रहा है। संस्थान में सौर ऊर्जा से ट्रांजिस्टर चलाने व कुए में पम्प के जरिये पानी निकालने का सफल प्रयोग हो चुका है।

केन्द्रीय सूखा क्षेत्र शोध संस्थान जोधपुर रेगिस्तान के विस्तार को रोकने और वहां कृषि की पैदावार बढ़ाने के लिए शोध कार्य कर रहा है। यह संस्थान मरु भूमि में भूमिगत जल का पता लगाता है और उसका उपयोग करने का काम करता है। संस्थान ने मोटे अनाज जैसे बाजरा आदि के ऐसे बीजों का विकास किया है जो कम पानी में भी अच्छी फसल दे सकें।

जयपुर में राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान में आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति को और अधिक विकसित करने के लिए शोध कार्य किया जा रहा है। संस्थान के पास अपना खुद का एक बहुत बड़ा कृषि फार्म भी है जिसमें आयुर्वेदिक औषधि तैयार करने वाली जड़ी-बूटियाँ उगाई जाती हैं। यह भारत का एक मात्र आयुर्वेद शोध संस्थान है।

राजस्थान में राज्य स्तर पर भी शिक्षा के विकास के लिए राज्य स्तरीय शिक्षा शोध संस्थान की स्थापना उदयपुर में की गई है। उदयपुर में ही इस संस्थान के अलावा विज्ञान शिक्षण शोध संस्थान और शैक्षणिक एवं व्यावसायिक निर्देशन केन्द्र भी खोले गये हैं।

राजस्थान में साक्षरता—1981 की जन गणना के आधार पर राजस्थान में साक्षरता का प्रतिशत 19 था जो अब 24 05 प्रतिशत आंका गया है। साक्षरता का प्रतिशत निरन्तर बढ़ा है जिसका अनुमान निम्नलिखित तालिका से लगाया जा सकता है।

सन् 1981 की जनगणना के अनुसार शहरों में सर्वाधिक साक्षरता उदयपुर में 61 84 प्रतिशत थी। सन् 1971 में सर्वाधिक साक्षर लोग अजमेर में थे पर अब अजमेर का स्थान दूसरा रह गया। राज्य के अन्य बड़े शहरों में साक्षरता का प्रतिशत 1981 में इस प्रकार था—

जयपुर शहर	54 28	अलवर	57 05
जोधपुर	51 53	भीलवाडा	48 47

साक्षरता

अजमेर	60·51	गंगानगर	55 59
कोटा	55·30	भरतपुर	50 96
बीकानेर शहर	50·90	सीकर	38 55

राज्य में साक्षरता की प्रगति

वर्ष	प्रतिशत	पुरुष	महिला	प्रतिशत
1921	4 22	7·33	0·59	"
1931	4 65	8·15	0 72	"
1941	5·51	9·36	1·14	"
1951	8 95	14·44	3·00	"
1961	15·21	23 71	5·84	"
1971	19 07	28 74	8·46	"
1981	24·05	35·78	11·32	"

महिलाओं मे साक्षरता अभी भी बहुत कम है। इसका मुख्य कारण पुराने रीति-रिवाज, जल्दी शादी करना और उनके लिए अलग से शिक्षण संस्थाओं का अभाव मुख्य कहा जा सकता है। बच्चों के लिए अधिक स्कूलों के खोलने के साथ ही राज्य मे प्रौढ शिक्षा के विस्तार की ओर भी पर्याप्त ध्यान दिया गया है।

राज्य में इंजीनियरिंग कालेज पाच हैं जो इस प्रकार हैं—

(1) मालवीय रीजनल इन्जीनियरिंग कालेज, जयपुर।

(2) बिडला इन्स्टीट्यूट ग्राफ टेक्नोलोजी एण्ड साइन्स, पिलानी।

(3) एम० बी० एम० इन्जीनियरिंग कालेज, जयपुर।

(4) कृषि इन्जीनियरिंग कालेज, उदयपुर।

(5) इंजीनियरिंग कालेज, कोटा।

मेडीकल कालेज—राज्य मे पाच मेडीकल कालेज है जिनमें 550 स्नातक व 150 स्नातकोत्तर शिक्षा के स्थान है। इनके नाम इस प्रकार हैं।

(1) सवाई मानसिंह मेडीकल कालेज, जयपुर।

(2) सम्पूर्णानन्द मेडीकल कालेज, जोधपुर।

(3) सरदार पटेल मेडीकल कालेज, बीकानेर।

(4) जवाहरलाल नेहरू मेडीकल कालेज, अजमेर।

(5) रवीन्द्रनाथ टैगोर मेडीकल कालेज, उदयपुर।

आयुर्वेदिक कालेज—(i) राजकीय आयुर्वेदिक कालेज, जयपुर।

(ii) राजकीय आयुर्वेदिक कालेज, अजमेर।

(iii) राजकीय आयुर्वेदिक कालेज, उदयपुर।

पशु चिकित्सा का कालेज राजस्थान मे केवल एक बीकानेर में कालेज आफ वेटरनरी एण्ड एनीमल हसबैण्ड्री है।

पोलीटेकनीक सस्थाए—राज्य मे आठ पोलीटेकनीक स्तर की सस्थाए है। अजमेर, अलवर, जयपुर, जोधपुर, कोटा व बीकानेर मे राजकीय पोलीटेकनीक, उदयपुर विश्वविद्यालय के अन्तर्गत एक और विद्या भवन रूरल सस्थान एक स्वय सेवी सस्था है। इन पोलीटेकनीक मे डिप्लोमा स्तर का तीन वर्षीय इन्जीनियरिंग पाठ्यक्रम है। अजमेर पोलीटेक्नीक मे मशीन टूल टेक्नोलाजी तथा ट्रैफिक व ट्रासपोर्टेशन इन्जीनियरी, जयपुर मे रेफ्रिजिरेशन, एयर कण्डीशन व भवन निर्माण-मूल्याकन तथा जोधपुर मे डेयरी टेक्नोलाजी और भूजल इन्जीनियरी के पोस्ट डिप्लोमा पाट्यक्रम भी चलते है।

खाद्य कला संस्था

भारत सरकार के सहयोग से जयपुर मे होटल व केटरिंग व्यवसाय का प्रशिक्षण देने के लिये खाद्य कला सस्थान खोला गया है जिसमे होटल रिसेप्शन, बुक कीपिंग, हाऊस कीपिंग, कुकरी, काउन्टर सर्विस आदि का प्रशिक्षण दिया जाता है। इसमे 72 स्थान प्रत्येक पाठ्यक्रम के लिये हैं।

राज्य के मुख्य पब्लिक स्कूल इस प्रकार है—

(1) सैनिक स्कूल, चित्तौडगढ (2) मेयो कालेज, अजमेर (3) महारानी गायत्री देवी पब्लिक स्कूल, जयपुर (4) विद्या भवन, उदयपुर (5) सादुल पब्लिक स्कूल, बीकानेर (6) बिडला पब्लिक स्कूल, पिलानी (7) वनस्थली विद्यापीठ, वनस्थली (8) सेंट जेवियर स्कूल, जयपुर।

शिक्षक प्रशिक्षण सस्थान—राज्य मे 18 शिक्षक प्रशिक्षण सस्थान अजमेर, बीकानेर, उदयपुर, सरदार शहर, जयपुर, वनस्थली, हटूडी (अजमेर), डीग, मुसावर (भरतपुर), बगड (झुझुनू), अलवर, डबोक (उदयपुर), शाहपुरा (जयपुर), हिण्डौन (सवाई माधोपुर), गुलाबपुरा (भीलवाडा) और गगानगर मे हैं।

इनके अलावा सरकार ने बेसिक एस० टी० शिक्षक प्रशिक्षण स्कूल भी खोल रखे है। राज्य मे इसके अलावा 16 औद्योगिक प्रशिक्षण सस्थान भी है।

हिंदी ग्रथ अकादमी—राज्य सरकार ने विश्वविद्यालय स्तर के ग्रन्थो को हिन्दी माध्यम मे उपलब्ध कराने के लिए भारत सरकार की नीति के अन्तर्गत हिन्दी ग्रन्थ अकादमी का गठन किया है। अकादमी 250 से अधिक ग्रन्थो का प्रकाशन कर चुकी है।

सगीत नाटक अकादमी—शिक्षा की ही एक अन्य सास्कृतिक विद्या को प्रोत्साहन देने के लिए सगीत नाटक अकादमी कार्य कर रही है। अकादमी नाटक प्रशिक्षण शिविर आयोजित करती है और सगीतकारो को प्रोत्साहन देती है। 1979-80 के वर्ष से जयपुर मे नृत्यक केन्द्र ने काम शुरू कर दिया है।

अरबी फारसी सस्थान—राज्य सरकार ने अरबी और फारसी भाषाओ

के ऐतिहासिक व सास्कृतिक अनुसधान कार्य के लिये 1978 के दिसम्बर मे टाक मे अरबी व फारसी शोध सस्थान कायम किया है। सस्थान ने अरबी हस्तलिपी ग्रन्थो की छपाई का काम शुरू किया है। इसे कुछ ग्रथ भेंट स्वरूप भी प्राप्त हुए हैं।

ललित कला अकादमी—नये व युवा रग कर्मियो को प्रोत्साहन देने के लिये ललित कला अकादमी काफी अर्से से कार्य कर रही है। अकादमी प्रत्येक वर्ष नये चित्रकारो के चित्रो की प्रदर्शनी लगाती है।

राज्य क्रीडा परिषद—राज्य मे खेलों व खिलाड़ियो को प्रोत्साहन देने के लिये क्रीडा परिषद महत्वपूर्ण कार्य कर रही है। प्रत्येक वर्ष राज्य व अखिल भारतीय स्तर की खेल प्रतियोगिताओ का यह आयोजन करती है। राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त खिलाडियो को आर्थिक सहायता भी यह देती है।

परिवहन संचार व्यवस्था

राजस्थान मे परिवहन के तीन मुख्य साधन हैं—

(1) वायु मार्ग (2) रेल मार्ग और (3) सडक मार्ग

(1) वायु मार्ग—राजस्थान मे परिवहन व्यवस्था बहुत सीमित है। इस का एक प्रमुख कारण हवाई अड्डो का कम होना और विमान मे यात्रा करने वाले यात्रियों की सख्या जयपुर, उदयपुर को छोडकर बहुत कम है। राज्य मे तीन मुख्य वायु मार्ग है—

(i) दिल्ली—जयपुर–उदयपुर–औरगाबाद–बम्बई

(ii) दिल्ली—जयपुर–जोधपुर–उदयपुर–अहमदाबाद–बम्बई

(iii) दिल्ली—आगरा—जयपुर

दिल्ली से जयपुर—औरगाबाद वाले वायुमार्ग पर बोईग विमान चलते हैं। इस मार्ग पर पर्यटका की सख्या भी ज्यादा रहती है। दिल्ली—जयपुर—अहमदाबाद मार्ग पर एवरो विमान चलते है और इससे यात्रा मे समय ज्यादा लगता है। जयपुर से आगरा होकर दिल्ली के बीच भी अपेक्षाकृत कम सीटों वाला विमान चलता है। इसमें जयपुर से दिल्ली पहुचने म करीब ढाई घटे लग जाते हैं जबकि सीधी विमान सेवा से आधा घटा ही लगता है।

राज्य सरकार ने अपने अधिकारियो के लिये जयपुर से कोटा व जयपुर से बीकानेर भी विमान सेवा शुरू की है जो एक पाच सीटो वाले विमान मे होती है।

राज्य के कई पर्यटन स्थलों बीकानेर, जैसलमेर, अलवर, भरतपुर को विमान सेवा से जोडने की माग भी काफी समय से की जा रही है। राज्य सरकार ने तीसरे स्तर की विमान सेवा शुरू करने के लिये सरकार से कई बार अनुरोध किया है। भारत सरकार इस प्रश्न पर विचार कर रही है। जयपुर को अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा बनाने का मामला भी विचाराधीन है।

रेल सेवा—राजस्थान में सड़क मार्ग के बाद परिवहन का दूसरा बड़ा साधन है। राजस्थान से तीन क्षेत्रों की रेल गाड़िया गुजरती हैं—(i) पश्चिम रेलवे, (ii) उत्तर रेलवे और (iii) मध्य रेलवे

(i) पश्चिम रेलवे—राजस्थान के अधिकांश हिस्सों मे पश्चिम रेलवे की गाडियां जहां चलती हैं वहा छोटी और बड़ी दोनों ही लाईनें हैं। बड़ी लाईन मुख्य रूप से तीन मार्गों पर ही है। पहला मार्ग दिल्ली से बम्बई के बीच का है जहां ट्रैफिक बहुत ज्यादा होने के कारण दोहरी लाईन बिछी हुई है। राजस्थान में यह लाईन भरतपुर से कोटा तक मानी जा सकती है। भरतपुर से बयाना, हिण्डौन, श्री महावीर जी, गगापुर, सवाई माधोपुर और कोटा इसी लाईन पर है। कोटा से आगे यह मध्यप्रदेश मे रतलाम, गुजरात मे बड़ौदा होती हुई बम्बई चली जाती है। बड़ी लाईन का एक अन्य मार्ग कोटा से बीना का है। तीसरी बड़ी लाईन कोटा से आगरा के बीच है। यह लाईन कोटा से बयाना तक दिल्ली बम्बई वाली ही है। बयाना से आगरा के लिये अलग नई लाईन बिछी हुई है।

पश्चिम रेलवे की छोटी लाईनें दक्षिणी पूर्वी भाग मे अधिक फैली हुई है। दिल्ली से अहमदाबाद वाया अलवर जयपुर और दिल्ली से अहमदाबाद वाया रींगस, फुलेरा अलग अलग छोटी लाईन है। जयपुर से टोडारायसिंह भी एक छोटी लाईन की गाडी चलती है।

आगरा से जोधपुर भी छोटी लाईन पर गाडी भरतपुर, बांदीकुई, जयपुर, फुलेरा, मेडता होती हुई जाती है। इसी तरह जयपुर से सीकर चूरू, बीकानेर और एक अन्य लाईन जयपुर से गगानगर के बीच तक बिछी हुई है। दिल्ली से उदयपुर चेतक एक्सप्रेस चलती है जो अजमेर तक दिल्ली अहमदाबाद लाईन और अजमेर से नसीराबाद, भीलवाडा, चित्तौड लाईन पर जाती है। चित्तौड से यह लाईन एक तरफ तो निम्बाहेडा, नीमच, रतलाम और इन्दौर होते हुए खण्डवा तक चली जाती है। दूसरी लाईन की रेलगाडी मावली की ओर जाती है। चित्तौड से उदयपुर, डूंगरपुर होती हुई एक लाईन हिम्मतनगर तक जाती है। मारवाड से उदयपुर भी एक गाडी चलती है।

देश मे छोटी लाईन पर सर्वाधिक तेज गति से चलने वाली एक मात्र रेलगाडी पिंक सिटी एक्सप्रेस है जो जयपुर से दिल्ली के बीच चलती है। अब इससे अजमेर से जयपुर तक लिंक एक्सप्रेस जोडी गई है जो गरीब नवाज एक्सप्रेस कहलाती है। कुछ समय पहले ही जयपुर से जोधपुर के बीच मरुधर एक्सप्रेस शुरू की गई है। जयपुर से बीकानेर भी एक रेलगाडी शुरू की गई है।

राजस्थान मे औद्योगीकरण की गति तेज करने के लिये दिल्ली से अहमदाबाद छोटी लाईन को बडी लाईन मे बदलने की माग हो रही है जिसे भारत सरकार ने मजूर करके सर्वेक्षण कार्य प्रारम्भ कर दिया है।

उत्तर रेलवे—उत्तर रेलवे की रेल लाईने मुख्यतया राज्य के [illegible] भागो मे बिछी हुई है। यह रेल लाईने राजस्थान के जो[illegible] बीकानेर

जिलो को हरियाणा, पजाब और दिल्ली से जोडती है। इस रेलवे म एक रेलगाडी बीकानेर से रतनगढ चूरू, हिसार, रेवाडी होती हुई दिल्ली तक जाती है। बीकानेर से सूरतगढ, हनुमानगढ होती हुई एक रेल पजाब म भटिण्डा तक जाती है। बीकानेर से एक रेल लाईन कोलायत जी तक और दूसरी नागौर होती हुई मेडता तक जाती है जहा से दो भागो मे बटकर एक फुलेरा होती हुई जयपुर और दूसरी पीपाड, जोधपुर, वालोतरा, बाडमेर से होती हुई पाकिस्तान सीमा से लगे भारत के आखिरी स्टेशन मुनाबाव तक जाती है। जोधपुर से फलौदी, पोकरण होती हुई एक रेल लाइन जैसलमेर तक बिछी हुई है। सीकर से दिल्ली भी एक लाईन है, वही पाली मारवाड से एक लाईन सरदार शहर तक जाती है।

कुछ समय पहले ही श्री ग गानगर से बम्बई तक एक रेलगाडी उद्यान आभा एक्सप्रेस शुरू की गयी है जो भटिण्डा, दिल्ली होते हुए बम्बई जायेगी। राजस्थान म उत्तर रेलवे की एक मात्र बडी लाईन सूरतगढ से भटिण्डा के बीच बिछी हुई है।

मध्य रेलवे—मध्य रेलवे की बडी लाईन राजस्थान के धौलपुर से होकर गुजरती है। यह दिल्ली से बम्बई की लाईन है जो आगरा, ग्वालियर होते हुए जाती है।

सडक मार्ग—राजस्थान मे स्वतन्त्रता के समय बहुत कम सडकें थी। *1951* म राजस्थान मे 5428 किलोमीटर पक्की व 11 हजार 911 किलोमीटर कच्ची सडकें थी। *1980* तक सडको की कुल लम्बाई 40 हजार किलोमीटर से अधिक पहु च गई है जिनमे करीब 25 हजार किलोमीटर डामर, साढे चार हजार किलोमीटर पत्थर की सडके, *7889 किलोमीटर कच्ची सडकें* और पौने तीन हजार किलोमीटर मौसमी सडकें थी। 1980 के प्रारम्भ मे राज्य मे औसतन सौ वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र मे 11 61 किलोमीटर सडकें बन गई थी जिनम 815 किलोमीटर पक्की सडकें थी। एक लाख की आबादी पर भी राजस्थान म 113 किलोमीटर पक्की सडको का औसत है। 1980–81 मे 795 किलोमीटर सडको का निर्माण 16 करोड 25 लाख रुपये खच करके कराया गया।

राष्ट्रीय राजमार्ग—राजस्थान म चार राष्ट्रीय राजमार्ग गुजरते है जो जयपुर से दिल्ली, जयपुर से अहमदाबाद, बीकानेर से दिल्ली और आगरा से बीकानेर के बीच हैं। इन चारो राजमार्गो की राजस्थान म कुल लम्बाई 2 हजार 110 किलोमीटर है। इन मार्गो पर यातायात सर्वाधिक है। 1980–81 के वष म 5 करोड रुपया इनकी मरम्मत पर खर्च किया गया है।

राजकीय राजमार्ग—राष्ट्रीय राजमाग के अलावा काफी सख्या मे राजस्थान मे राजकीय राजमार्ग भी हैं जो इस प्रकार हैं—

(1) जयपुर से कोटा, झालावाड होते हुए भोपाल तक ।
(2) ब्यावर से जोधपुर ।
(3) जोधपुर से जैसलमेर ।
(4) जोधपुर से बाडमेर ।
(5) बीकानेर से जैसलमेर ।
(6) बीकानेर से जोधपुर वाया नागौर ।
(7) जोधपुर से अहमदाबाद वाया पाली, सिरोही ।
(8) जैसलमेर से शिव बाडमेर ।
(9) टोंक से सवाई माधोपुर ।
(10) जयपुर से खेतडी ।
(11) कोटा से बारा, बीना, झासी ।
(12) जयपुर से दिल्ली वाया अलवर ।
(13) दौसा से सवाई माधोपुर ।
(14) अलवर, धौलपुर वाया भरतपुर ।
(15) करौली से सरमथुरा, धौलपुर ।
(16) महुवा से करौली ।
(17) सवाई माधोपुर से गगापुर ।
(18) चूरू से बीकानेर ।
(19) रतनगढ़ से गगानगर ।
(20) गगानगर से बीकानेर वाया सूरतगढ ।
(21) लडनू से,सुजानगढ, सीकर, जयपुर ।
(22) नागौर से जयपुर ।
(23) ब्यावर से सिरोही वाया पाली, शिवगज ।
(24) कोटा से चित्तौड ।

राज्य मे इस वर्ष 5 हजार से अधिक की आबादी के गाँवो को सडका से जोडने का काम पूरा हो जायेगा। राज्य सरकार जल्दी ही हजार तक की आबादी के गावो को सडको से जोडने का प्रयास कर रही है ।

पुलों का निर्माण—राज्य मे अधिकाश बडी नदियो पर पुल बने हुए हैं । अब और नदियो पर पुलो के निर्माण का काम तेजी स चल रहा है। पुलो का निर्माण करने के लिये राज्य स्तर पर पुल निगम का गठन किया गया है। कुछ निर्माणाधीन पुल इस प्रकार है—

(1) बयाना, हिण्डौन मार्ग पर गम्भीरी नदी पर पुल निर्माण ।
(2) सवाई माधोपुर, शिवपुर के बीच चम्बल नदी पर पुल ।
(3) कोटा के पास चम्बल पर पुल निर्माण ।
(4) दौसा, सवाई माधोपुर मार्ग पर बनास पुल ।
(5) डूगरपुर, बासवाडा के बीच माही नदी पर ।

(6) डूंगरपुर के पास बनास नदी पर।

(7) बासवाडा, रतलाम के बीच माही नदी पर।

प्राकृतिक साधन

(1) खनिज

राजस्थान का विभिन्न खनिज पदार्थों की दृष्टि से देश मे महत्वपूर्ण स्थान है। राज्य की प्रगति और आय के स्रोत बढाने में इस प्राकृतिक सम्पदा का काफी योगदान रहा है। देश मे पाये जाने वाले कई खनिजो का उत्पादन पूर्णत तथा विशेषत राजस्थान म होता है।

राज्य मे लगभग सात प्रकार के धात्विक एव 45 प्रकार के अधात्विक एव अप्रधान खनिज पाये जाते हैं। इनमे सीसा, जस्ता, तावा, टगम्टन, चादी, केडमियम, रॉक फॉस्फेट, जिप्सम, केलसाईट, सोपस्टोन, एसबेस्टस, फेल्सपार, वोलेस्टोनाटूर आदि खनिज एस हैं जिनका उत्पादन राज्य म सर्वाधिक होता है। अन्य महत्वपूर्ण खनिजो मे अभ्रक, पाइराइट्स, चीनी मिट्टी काच बनाने की बालू चूने के पत्थर, क्वार्ट्ज, पायरो फाइलाइट्, फायरक्ले, बेन्टोनाइट, मुलतानी मिट्टी आदि है।

रत्न खनिजो मे पन्ना और गारनेट का उत्पादन केवल राजस्थान मे ही होता है। हाल ही राजस्थान म सिरोही के पास टगस्टन का बहुत बडा भण्डार मिला है। इसके अलावा रेगिस्तानी क्षेत्र मे नमक का अथाह भण्डार भी मिला है जिसमे पोटाश की मात्रा बहुत है।

बीकानेर के पास पलाना म लिग्नाइट कोयले का बहुत बडा भण्डार मिला है। इस कोयले पर आधारित यहा ताप बिजलीघर लगने की आशा है। राजस्थान मे चूने के पत्थर का भी अथाह भण्डार है। जोधपुर, बिलोलिया, भरतपुर, सवाई माधोपुर आदि मे पाये जाने वाले सेंड स्टोन, कोटा तथा चित्तौड़गढ जिलों म सोपस्टोन तथा जालौर म ग्रेनाइट तथा मकराना का सगमरमर विशेष उल्लेखनीय हैं।

(11) खनिज उत्पादन

तांबा—खेतडी, दरीबा की खानो के अलावा कुछ तावा उदयपुर, भीलवाडा झालावाड म भी निकलता है।

लोहा—जयपुर, बूंदी, भीलवाडा नीम का थाना, झुंझुनूं, बासवाडा तथा झालावाड मे निकलता है।

अभ्रक—उदयपुर, टोंक, जयपुर, भीलवाडा, अजमेर, पाली, सीकर म अभ्रक काफी मात्रा मे मिलता है।

सीसा व जस्ता—सीसा व जस्ता उदयपुर की जावर खानो मे निकलता है।

मैंगनीज—यह उदयपुर, बासवाडा, कुशलगढ, अजमेर मे मिलता है।

जिप्सम—बाडमेर, जोधपुर, बीकानेर, नागौर, पाली, जैसलमेर मे निकलता है।

कोयला—बीकानेर के पास पलाना में लिग्नाइट कोयले का भण्डार है।

संगमरमर—यह मकराना में मिलता है।

एसबेस्टस—उदयपुर, और भीलवाड़ा मे इनकी खाने है।

सोपस्टोन—भारत मे प्राप्त 90 प्रतिशत सोपस्टोन राजस्थान मे ही मिलता है। भीलवाडा, उदयपुर, जयपुर, टोंक, बासवाडा, डूंगरपुर, सीकर मे भी इसकी खानें है।

चूने का पत्थर—सीमेन्ट उत्पादन के लिए चूने का पत्थर सवाई माधोपुर, चित्तोड़, बूंदी व उदयपुर मे मिलता है।

(i) **वन**—राजस्थान मे करीब 30 हजार 444 वर्ग किलोमीटर का भू-भाग वनो से आच्छादित है। ये वन भी राजस्थान के लिए काफी उपयोगी सिद्ध हो रहे है। वनो से प्रदेश मे वर्ष 80-81 के दौरान करीब 6 लाख क्विंटल जलाने की लकडी, करीब 1 लाख 93 हजार क्विंटल चारकोल तथा 2 लाख 10 हजार घनफुट टिम्बर लकडी प्राप्त हुई। इसके अलावा वनो की वजह से इसी अवधि मे करीब 59 लाख 66 हजार बास, 686 क्विंटल कत्था तथा तेन्दू पत्तो के 1 लाख 54 हजार थैले भी प्राप्त हुए।

(ii) **भूमि**—राजस्थान मे करीब 154 71 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में ही कृषि कार्य होत हैं। जबकि प्रदेश मे कृषि योग्य भूमि का क्षेत्रफल 264 18 लाख हैक्टेयर है। इसलिए पिछले दो वर्षों से सरकार इस तरह के प्रयास कर रही है कि शेष अनुपयोगी भूमि मे भी कृषि उत्पादन किया जाये।

(iv) **सिंचाई**—राजस्थान मे अधिकांश भाग रेगिस्तानी होने से पानी की बहुत कमी रहती हैं। इसी वजह से पूर्वी राजस्थान के लोगो का मुख्य व्यवसाय जहा खेती है वही पश्चिमी राजस्थान मे लोगो का आजीविका का मुख्य साधन पशु है। अधिक से अधिक भूमि को उपजाऊ बनाने के लिए प्रदेश के गठन के बाद से ही सिंचाई सुविधाओ का विस्तार करने के भारी प्रयास किये गये। राज्य के गठन के समय केवल 4 लाख 80 हजार हैक्टेयर भूमि मे सिंचाई सुविधा थी जो अब बढकर 29 लाख 83 हजार हैक्टेयर भूमि तक हो गयी।

गत दो वर्ष म राजस्थान नहर परियोजना, माही बजाज सागर, व्यास परियोजना, चम्बल परियोजना तथा 14 मध्यम सिंचाई परियोजनाओ के निर्माण कार्यों को बहुत अधिक गतिशील और तेज किया गया। बीस परियोजनाओ को आधुनिक बनाने का कार्य हाथ म लिया गया तथा 205 लघु सिंचाई परियोजनाओ पर भी कार्य प्रारम्भ किया गया, जिसमे से 105 परियोजनाए पूरी की जा चुकी हैं।

राज्यो मे नहरी पानी के बहुत कम तथा सीमित क्षेत्र होने के कारण सिंचाई की आवश्यकताओ के लिए राज्य को अन्तर्राज्यीय समझौतो के तहत प्राप्त हो रहे पानी पर निर्भर करना पडता है और अन्य राज्यो से प्राप्त होने वाला यह पानी भी निरंतरता से उपलब्ध नही होता । अत इस प्रकार की समस्या के संदर्भ मे दिसम्बर 1981 मे राज्य सरकार द्वारा रावी व्यास जल समझौता किया गया । इस समझौते से राजस्थान को मिलने वाले पानी की मात्रा मे वृद्धि होगी तथा सिद्ध मुख तथा नोहर परियोजनाओ के निर्माण कार्यों को शीघ्र ही शुरू किया जाना सम्भव होगा ।

कृषि एव आर्थिक विकास

भौगोलिक दृष्टि से राजस्थान एक ऐसा राज्य है जहा मौसम कृषि उत्पादन के लिए अनुकूल नही रहा । समय पर अनुकूल वर्षा का अभाव और आवश्यकता के विपरीत अतिवृष्टि, ओलावृष्टि एव बेमौसम तूफानो की मार ने ही राजस्थान के जुझारू किसान को अनेक थपेडे लगाये हैं । गत दो वर्ष मे राज्य सरकार ने सूखे और पेयजल के संकट की समस्या के निवारण के लिए काफी प्रयास किये हैं । विभिन्न योजनाओ कार्यक्रमो के प्रभावशाली क्रियान्वयन और कृषि विस्तार कार्यक्रम के प्रसार से राज्य के कृषि उत्पादन मे ठोस प्रगति हुयी है ।

फसलें—राजस्थान मे खाद्यान्नो म बाजरा, जौ, ज्वार, मक्का, गेहू की फसले मुख्य है । राज्य मे अधिक उत्पादन देने वाली फसलो का क्षेत्र जहा वर्ष 1980-81 म 19 07 लाख हैक्टेयर था वही वर्ष 1982 -83 म 24 43 लाख हैक्टेयर हो गया । वर्ष 1983 84 के लिए 27 75 लाख हैक्टेयर क्षेत्र मे अधिक उत्पादन देने वाली फसले बोने का लक्ष्य रखा गया ।

मुख्य फसलो का उत्पादन वर्ष 1980-81 के दौरान निम्न रहा—

अनाज	उत्पादन (हजार टनो मे)	वार्षिक लक्ष्य (82–83)
(i) बाजरा	5348	**64.80 लाख टन**
(ii) ज्वार	1163	—
(iii) गेहूँ	340	—
(iv) मक्का	230	—
(v) जौ	785	—
(vi) चावल	517	—
	150	—

दाहन	1154	22 20 लाख टन
तिलहन	383	7 15 लाख टन
कपास	388 गाठें (हजारों मे)	
गन्ना	1161	
तम्बाकू	2	
मिर्च	17	
आलू	3	

औद्योगिकरण

स्वतन्त्रता प्राप्ति के समय राज्यों मे केवल ग्यारह उद्योग लगे हुए थे जिनमे सात कपड़े के, 2 चीनी के तथा दो सीमट के कारखाने थे। इनके अलावा एक हजार लघु उद्योग भी थे। पहली और दूसरी पचवर्षीय योजना मे सरकार ने औद्योगिकरण के काम को कम प्राथमिकता दी लेकिन तीसरी योजना से ही इस ओर विशेष ध्यान दिया जाने लगा। इसी वजह से आज राजस्थान उद्योगो के मानचित्र पर उभर चुका है। जयपुर, अलवर, कोटा, पाली और भीलवाड़ा ऐसे शहर हैं जहा औद्योगिकरण काफी तेजी से हुआ है।

राजस्थान मे लगे कुछ बड़े उद्योग इस प्रकार हैं—

(i) हिन्दुस्तान जिंक लि उदयपुर।
(ii) हिन्दुस्तान कॉपर लि खेतड़ी।
(iii) हिन्दुस्तान मशीन टूल्स, अजमेर।
(iv) श्री राम रेयन्स, कोटा।
(v) जे के सिंथेटिक्स, कोटा।
(vi) इन्स्ट्रूमेटेशन, कोटा।
(vii) जे के ट्यूब्स एण्ड टायर्स, कांकरोली।
(viii) केलविनेटर, अवन्ती स्कूटर्स, अलवर।
(ix) नेशनल इंजीनियरिंग इण्डस्ट्रीज, जयपुर।
(x) जयपुर मेटल्स, जयपुर।
(xi) मेवाड़ टेक्सटाइल मिल, भीलवाड़ा।
(xii) उम्मेद मिल्स, पाली।
(xiii) सिमको वॅगन फैक्ट्री, भरतपुर।
(xiv) लेलैण्ड ट्रक का कारखाना, अलवर।

ये कुछ प्रमुख उद्योग हैं जो यहा स्थापित हुए हैं, इनके अलावा भी राजस्थान मे तरह के उद्योग बडी सख्या मे लगे हैं।

प्रदेश के प्रमुख औद्योगिक क्षेत्र इस प्रकार है—

(i) मत्स्य औद्योगिक क्षेत्र, अलवर।
(ii) भिवाडी औद्योगिक क्षेत्र, अलवर।

(iii) विश्वकर्मा औद्योगिक क्षेत्र, जयपुर ।

(iv) मालवीय औद्योगिक क्षेत्र, जयपुर ।

(v) झोटवाड़ा व बाइस गोदाम औद्योगिक क्षेत्र, जयपुर ।

(vi) इन्द्रप्रस्थ औद्योगिक क्षेत्र, कोटा ।

(vii) रेलवे क्रासिंग औद्योगिक क्षेत्र, कोटा ।

(viii) एम. टी. सी. औद्योगिक क्षेत्र, अजमेर ।

(ix) भगत की कोठी औद्योगिक क्षेत्र, जोधपुर ।

(x) बासनी औद्योगिक क्षेत्र, जोधपुर ।

इसके अलावा, भरतपुर, उदयपुर, सवाई माधोपुर, सीकर, मकराना, खेतड़ी, पिलानी, पाली, टोंक और किशनगढ़ में भी औद्योगिक क्षेत्र बने हुए हैं । यहां कुछ उद्योगों का संक्षिप्त वर्णन दिया जा रहा है—

(i) कृषि आधारित उद्योग--

(अ) कपड़ा उद्योग राजस्थान में सूती कपड़े की लगभग 28 मिलें हैं । ये मिलें जयपुर, किशनगढ, ब्यावर, पाली, भीलवाड़ा, विजयनगर, उदयपुर, श्री गंगानगर, भवानी मण्डी (कोटा) में हैं । वर्ष 1980 में 45 करोड़ 44 लाख 9 हजार मीटर सूती कपड़े का उत्पादन हुआ था जबकि वर्ष 1981 में इसका उत्पादन बढ़कर 47 करोड़ 40 लाख 4000 मीटर हो गया था । इसी प्रकार सूती धागे का वर्ष 1980 में 38 लाख 68 हजार मीट्रिक टन का उत्पादन हो गया जबकि वर्ष 1981 में यह घटकर 35 लाख मीट्रिक टन रह गया था । मिलो में हड़तालें, तालाबंदी तथा श्रम दिवसों की गिरावट से यह कमी आई थी ।

(अ) चीनी मिलें—राजस्थान में तीन चीनी मिलें हैं जो श्री गंगानगर, भोपालसागर तथा केशोरायपाटन मे स्थित हैं । प्रदेश में वर्ष 1980 में 27·11 हजार मीट्रिक टन तथा वर्ष 1981 मे 13·23 हजार मीट्रिक टन चीनी उत्पादित हुई थी ।

(इ) वनस्पति उद्योग—राजस्थान में यह उद्योग भी प्रगति कर रहा है । अकेले जयपुर मे ही चार वनस्पति घी बनाने की फैक्ट्रियां है । वर्ष 1980 में 12·79 हजार मीट्रिक टन तथा वर्ष 1981 मे 55·91 हजार मीट्रिक टन वनस्पति उत्पादों का उत्पादन हुआ था ।

(ii) खनिज आधारित उद्योग—

राज्य में इस समय पांच सीमेंट फैक्ट्रियां हैं । वर्ष 1980 में प्रदेश में 1662·02 हजार मीट्रिकटन तथा वर्ष 1981 मे 2144·76 हजार मीट्रिकटन सीमेंट का उत्पादन हुआ था । कोटा के पास मोड़क में भी सीमेंट के कारखाने की स्थापना का कार्य चल रहा है । गत दो वर्षों मे राज्य मे खनिज आधारित उद्योगों की

स्थापना के आसार बहुत अच्छे बन गये हैं। वर्ष 1982-83 में सिरोही जिले में नया कारखाना लग जाने से उस वर्ष राज्य मे सीमेंट का उत्पादन 29.81 लाख टन से 41.51 लाख टन बढ़ गया है। करीब 12 लाख टन सीमेंट सालाना उत्पादन का एक नया कारखाना ब्यावर में लग रहा है जिससे सीमेंट उत्पादन और अधिक बढ़ जायेगा।

इसके अलावा उदयपुर मे जस्ते का कारखाना, खेतड़ी में तांबा परियोजना, पलाना में लिग्नाइट कोयले से ताप बिजलीघर परियोजना भी चल रहे है। मकराना में संगमरमर पर कई उद्योग स्थापित हैं।

भीलवाड़ा, बूंदी और चित्तौड़गढ़ जिलों में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध चूना पत्थर के भंडारों का दोहन कर सीमेंट उत्पादन करने के लिए 7 बड़े उद्योग स्थापित होंगे जिनकी वार्षिक उत्पादन क्षमता 35 लाख 45 हजार टन होगी। इसके अलावा भारत सरकार ने सीकर में खाद का बड़ा कारखाना लगाने का निर्णय लिया है।

उद्योग एवं उनका विकास

प्रदेश मे औद्योगिक विकास के लिए भी काफी प्रयास किये गये हैं। भारत सरकार भी इस सम्बन्ध में पूरी उदारता प्रदर्शित कर रही है। राज्य में गठित वित्त निगम और राजस्थान औद्योगिक विकास एवं विनियोजन निगम (रीको) भी इस कार्य में अहम भूमिका अदा कर रहा है। रीको ने वर्ष 1981-82 और 1982-83 में 24.97 करोड़ रुपये का शुद्ध पुनर्वित्त प्राप्त कर देश के उत्तरी संभाग में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। इस अवधि में रीको ने 40 करोड़ 33 लाख रुपयों की सहायता औद्योगिक इकाइयों को दी जो रीको की स्थापना के बाद से मार्च 1983 तक की अवधि में दी गयी 76 करोड़ 17 लाख रुपये की कुल सहायता का 52 प्रतिशत से भी अधिक है। रीको राज्य में इलेक्ट्रोनिक उद्योगों के विकास को भी विशेष प्रोत्साहन दे रहा है।

राज्य सरकार ने भी हाल ही 3 लाख से कम आबादी वाले स्थानों पर उद्योग लगाने के लिए उद्यमियों को 22 जनवरी 1983 से 15 प्रतिशत अनुदान देने का निर्णय लिया था।

इसके अलावा ग्रामीण उद्योगों में 325 करोड़ 59 लाख रुपये की पूंजी विनियोजित है जिससे लगभग 3 लाख 75 हजार लोगों को रोजगार के साधन सुलभ हो रहे है।

लघु एवं कुटीर उद्योग

राज्य में लघु एवं कुटीर उद्योगों के विकास के लिए भी उपयुक्त वातावरण है। वर्ष 1983-84 में भी राज्य सरकार ने प्रदेश में 10 हजार लघु एवं ग्रामीण औद्योगिक इकाइयों के स्थायी पंजीयन करने का लक्ष्य रखा है जिसके फलस्वरूप करीब 29 हजार लोगों को रोजगार मिल सकेगा।

लघु और कुटीर उद्योगों को बिजली की कमी महसूस नहीं हो इसके लिए राज्य सरकार पिछले दो साल से इन उद्योगों को अपने डीजल जनरेटिंग सेट्स लगाने के लिए 50 प्रतिशत तक अनुदान दे रही है। अब तक कुल 171 उद्योगों को एक करोड़ 20 लाख रुपये का अनुदान भी दिया जा चुका है।

इसके अलावा खादी ग्रामोद्योग कार्यक्रम के तहत गत दो वर्षों में कुल 18 हजार 294 लघु उद्योगों को सहायता सुलभ करायी गयी और इन उद्योगों ने 43 26 करोड़ रुपये मूल्य का उत्पादन किया। वर्ष 1983–84 के दौरान ऐसी दस हजार इकाइयों को सहायता देने का लक्ष्य रखा गया है जिससे ये उद्योग 52 50 करोड़ रुपये का उत्पादन कर सकेंगे तथा इनसे करीब 56 लाख परिवारों को रोजगार मिल सकेगा।

पंचायत राज संस्थाएं भी लघु एवं कुटीर उद्योगों को भरपूर सहयोग दे रही हैं। विकेन्द्रीकरण योजना के तहत खादी और ग्रामोद्योग इकाइयों और अन्य छोटे उद्योगों को क्रमश: 5 हजार और 2 हजार रुपये तक के ऋण स्वीकृत करने के अधिकार अब पंचायत समितियों को दे दिये गये हैं। अब पंचायत समितियां बिजली के लिए एक हजार रुपये तक का अनुदान भी स्वीकृत कर सकती हैं।

राज्य के प्रमुख कुटीर उद्योगों में संगमरमर का काम, ऊनी दरियां, कालीन-गलीचे, कशीदाकारी, चमड़े का सामान, मिट्टी के बर्तन, पीतल की वस्तुएं, बेल-बूटे काढ़ने का काम, कपड़ों पर हाथ छपाई मुख्य हैं।

निर्यात की वस्तुएं

हालांकि राजस्थान औद्योगिक दृष्टि से इतना विकसित नहीं है जितने की उत्तर भारत के अन्य राज्य, इसके बावजूद यहां की कई वस्तुएं कलात्मकता एवं क्वालिटी के दृष्टिकोण से इतनी अच्छी होती हैं कि उनकी विदेशों में भी भारी मांग रहती है।

यहां का पन्ना व्यवसाय तो जगप्रसिद्ध है और जवाहरात भी विदेशों को निर्यात होते हैं। इसके अलावा यहां की संगमरमर की मूर्तियां, गलीचे, हाथ की छपाई के वस्त्र, चमड़े का सामान, पीतल की वस्तुएं आदि का भी निर्यात होता है।

प्रदेश में औद्योगिक उत्पादन

उत्पाद का नाम	इकाई	उत्पादन 1980	1981
1	2	3	4
1. टेक्सटाइल			
(i) सूती कपड़ा	,000 मीटर	45449	47404
(ii) सूती धागा	,000 मी टन	38 68	35 00
2 सीमेंट	"	1662·02	2144 ·6

3 चीनी	,,	27 11	13 23
4 नमक	,,	935 82	943 61
5 विद्युत मीटर	,000 संख्या	203 74	176 46
6 बाल बियरिंग	लाख म	92 90	97 76
7 नायलोन धागा	1000 मी टन	4 25	3 77
8 वनस्पति उत्पाद	,,	12 79	55 91
9 रसायनिक खाद (यूरिया)	,,	236 64	266 77
10 तांबा	,,	14 72	12 57

आर्थिक एव सांख्यिकीय निदेशालय, राजस्थान, जयपुर द्वारा प्रदत्त नवीनतम आकड़ो के अनुसार

डेयरी विकास एक दृष्टि

जिस प्रकार कृषि के विस्तार के लिए राजस्थान मे कार्य हुआ है उसी प्रकार पशु पालको को दूध का उचित पैसा दिलाने और अधिक दूध एकत्र करने को प्रोत्साहन देने के लिए डेरी विकास कार्यक्रम चलाया गया है। पिछले कुछ वर्षों स इस कार्यक्रम म तेजी आई है और दुग्ध सहकारी समितियो का जाल पूरे राज्य मे फैल गया है।

राजस्थान मे डेयरी फेडरेशन की भी स्थापना की गयी जो डेयरी विकास के सारे कार्यक्रम की देखरेख करता है। इस के अलावा दूध का विपणन तथा उसे खराब होने स बचाने के लिए अवशीतन यन्त्रो की स्थापना आदि का काम भी करता है।

डेयरी विकास कार्यक्रम को गत दो वर्षों म अभूतपूर्व सफलताए मिली हैं। ग्राम स्तरीय दुग्ध उत्पादन सहकारी समितियो के गठन और सहकारी आन्दोलन को प्रोत्साहन देने के कारण ही ऐसा हुआ है। मार्च 1983 तक राज्य की ऐसी समितियो की संख्या 3 हजार 250 तथा इनकी सदस्य संख्या 1 लाख 92 हजार थी।

वर्ष 1977–78 मे राज्य के केवल 757 दुग्ध सग्रह केन्द्रो पर 2 08 लाख लीटर दूध प्रति दिन एकत्र किया जाता था। यह वर्ष 1982–83 मे बढकर 1041 केन्द्रो पर 2 85 लाख लीटर दूध प्रतिदिन हो गया है। गत तीन वर्षों से निरतर पड रहे सूखे की स्थिति के बावजूद दुग्ध सग्रह की यह औसत 2 45 लाख लीटर प्रतिदिन रही है। राज्य सरकार द्वारा इस दिशा मे किये गये सफल प्रयत्नो का ही यह परिणाम है कि फरवरी 1983 के माह म तो 3 70 लाख लीटर प्रतिदिन दुग्ध सग्रह किया गया।

दुग्ध उत्पादको को दूध की कीमत मे भी गत दो वर्षों मे 65 पैसे प्रति लीटर की वृद्धि की गयी। पिछले दो वर्षों मे 3676 लाख रु दुग्ध उत्पादको को उनके दूध के मूल्य के रूप मे दिया गया जो कि एक रिकार्ड है।

इस अवधि में ही जयपुर में 1.50 लाख लीटर दूध प्रतिदिन की क्षमता का एक डेयरी संयंत्र चालू किया गया। बीकानेर, जोधपुर और अजमेर के डेयरी संयंत्रों की क्षमता 2.30 लाख लीटर प्रतिदिन से बढ़ाकर 4 लाख लीटर प्रतिदिन कर दी गयी तथा बांसवाड़ा में एक लाख लीटर दूध प्रतिदिन और उदयपुर में 25 हजार लीटर दूध क्षमता के डेयरी संयंत्र स्थापित कर दिये गये हैं। कोटा में 25 हजार लीटर और हनुमानगढ़ में एक लाख लीटर दूध प्रतिदिन की क्षमता के डेयरी संयंत्र की स्थापना का काम चल रहा है। इन सबके शुरू हो जाने पर राज्य में 9.50 लाख लीटर दूध प्रतिदिन की क्षमता हो जायेगी। इसके अलावा नागौर, बाड़मेर, गंगापुर सिटी, ब्यावर और विजय नगर में पांच नये प्रशीतन केन्द्र स्थापित किये जा चुके हैं। बागवाड़ा और डूंगरपुर में प्रशीतन केन्द्रों के भी शीघ्र तैयार होने की आशा है। इस प्रकार राज्य में कुल 19 प्रशीतन केन्द्र कार्यरत होंगे।

राज्य में हुई श्वेत क्रांति के फलस्वरूप अब राजस्थान और दिल्ली के बाजारों में सरस ट्रेडमार्क पनीर, मक्खन, देशी घी, दूध पाउडर आदि दुग्ध खाद्य पदार्थ की बिक्री बहुत लोकप्रिय हो गयी है। चीज, दही, और बेबी फूड भी निकट भविष्य में बाजारों में बिक्री के लिए उपलब्ध हो जायेगा। फ्लड–II आपरेशन कार्यक्रम के तरह राज्य में डेयरी विकास की एक महत्वाकांक्षी योजना निकट भविष्य में लागू की जायेगी जिसके क्रियान्वयन पर करीब 80 करोड़ रुपये व्यय होने का अनुमान है। पशु आहार संयंत्र :- अजमेर, जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, भरतपुर

विद्युतिकरण

राज्य के विकास की योजना में सिंचाई के साथ सर्वोच्च प्राथमिकता विद्युतिकरण को दी गई है। प्रत्येक वार्षिक योजना में इस पर सर्वाधिक राशि व्यय की जाती है।

राजस्थान बनने से पहले बिजली केवल शहरों तक सीमित थी और वह भी रियासती नरेशों के पावर हाउस में बनती थी। राजस्थान के गठन के बाद राज्य विद्युत मण्डल का गठन किया गया और विद्युतिकरण के कार्य को धीरे-धीरे आगे बढ़ाया गया।

आज राजस्थान को भाखड़ा, पोंग बिजलीघरों से बिजली मिलती है। इसके अलावा चम्बल नदी पर तीन बड़े बांधों गांधीसागर, राणाप्रताप सागर और जवाहर सागर से भी बिजली है। देश का दूसरा परमाणु बिजलीघर भी रावतभाटा में ही बनाया गया जिसकी दोनों इकाइयां चालू हो गयी। परमाणु बिजलीघर राजस्थान का बिजली का बहुत बड़ा स्रोत है पर इसमें बराबर उत्पादन नहीं हो पा रहा है।

उपलब्ध संसाधनों के अनुरूप विद्युत क्षमता और मांग के बीच अंतर को समाप्त करने के लिए राज्य सरकार द्वारा सतत् प्रयास किया जा रहा है। कोटा में ताप विद्युत परियोजना की स्टेज–I की दोनो इकाइयों को एवं माहीपन विद्युत

भाखड़ा 104 गांधी सागर परमाणु बिजलीघर, रावतभाटा कोटा ताप बिजलीघर
पोंग राणाप्रताप सागर (2 इकाई) (कोटा) (पहली व दूसरी यूनिट)

परियोजना के तहत प्रथम पावर हाउस को छठी पचवर्षीय योजनावधि तक पूर्ण किये जाने का प्रयास जारी है तो दूसरी ओर बिजली की पूर्ति के लिए अन्य राज्यो तथा केन्द्रीय इकाइयो से बिजली प्राप्त करने के प्रयत्न भी जारी हैं। कोटा ताप परियोजना स्टेज-(I) की पहली इकाई को चालू किया जा चुका है एव दूसरी इकाई भी शीघ्र ही उत्पादन शुरू कर देगी। आशा है इस परियोजना की दोनो इकाइयों से वर्ष 1983 के अन्त तक व्यावसायिक उत्पादन प्रारम्भ किया जा सकेगा। कोटा ताप परियोजना स्टेज-(II) पर भी कार्य तीव्र गति से किया जा रहा है। माही बजाज सागर परियोजना के तहत प्रथम पावर हाऊस की पहली 25 मेगावाट इकाई से भी वर्ष 1984 के अंत तक बिजली उत्पादन की सभावना है।

राज्य सरकार अन्य स्रोतों से भी विद्युत प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील है। हिमाचल प्रदेश की संजय विद्युत परियोजना तथा नाल परियोजना म हिस्सेदारी करके बिजली प्राप्त करने का एक अनुबध गत सितम्बर, 1982 मे किया गया था। बीकानेर जिले के पलाना क्षेत्र म लिग्नाइट के भडारों पर आधारित 60-60 मेगावाट के दो विद्युत सयत्र लगाये जाने के लिए राज्य सरकार प्रयत्न कर रही है। केन्द्रीय विद्युत प्राधिकरण द्वारा भी इस परियोजना का अनुमोदन कर दिया गया है लेकिन योजना आयोग से वित्तीय मजूरी मिलनी अभी बाकी है।

राज्य के बाड़मेर व नागौर जिलो म लिग्नाइट के विशाल भडारो का पता चला है। राज्य सरकार के भू-सर्वेक्षण विभाग, मिनरल कार्पोरेशन ऑफ इडिया तथा कोल इडिया से द्रुत सर्वेक्षण हेतु सहयोग प्राप्त करने के प्रयास किये जा रहे हैं। वार्षिक योजना 1983-84 के तहत प्रारम्भिक कार्य करने हेतु एक करोड रुपये का प्रावधान किया गया है, जिससे लिग्नाइट के विशाल भडारो के दोहन के विषय मे विस्तृत विवरण प्राप्त हो सके। इससे प्रदेश मे एक सुपर थर्मल प्लांट लग सकेगा।

राज्य सरकार कुछ छोटी पन बिजली परियोजनाए स्थापित करने की दिशा मे भी प्रयत्नशील है। अनूपगढ हाइडल परियोजना पर कार्य प्रगति पर है और आशा की जाती है कि छठी पचवर्षीय योजना अवधि के अंत तक इसकी पहली इकाई से 1 5 मेगावाट बिजली प्राप्त हो सकेगी। चम्बल के दोई ओर के मुख्य नहर एव राजस्थान पर सूरतगढ हाइडल की परियोजनाओ की केन्द्रीय विद्युत प्राधिकरण से तकनीकी एव आर्थिक स्वीकृति प्रदान करायी जा चुकी है व इनकी विनियोजन स्वीकृति योजना आयोग से प्राप्त कराने के प्रयास किये जा रहे है।

छठी पचवर्षीय योजना के अंत तक विद्युत उत्पादन क्षमता 1785 5 मेगावाट हो सकेगी। यह उल्लेखनीय है कि छठी पचवर्षीय योजना के प्रथम तीन वर्ष मे जहा कोटा ताप बिजलीघर की पहली इकाई को विशेष प्रयासो के फलस्वरूप चालू करना सम्भव हो सका, वही 3,904 गावो को विद्युतिकृत एव 61,781 कुओ को ऊर्जीकृत

करना सम्भव हो पाया है। वर्ष 1983-84 के लिए राज्य में 1 100 गांवों का विद्युतिकृत एवं 11,000 कुओं को ऊर्जीकृत करने का लक्ष्य रखा गया है।

आदिवासी विकास

निरक्षरता तथा निरंतर आर्थिक पिछड़ेपन के कारण प्रदेश के आदिवासियों तक विकास की लहर नहीं पहुंच पायी। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद इनके कल्याण के लिए कई प्रयास किये गये पर अभी भी इन्हें प्रगति की राह पर साथ लाने के लिए भगीरथी प्रयत्न किये जाने आवश्यक हैं।

इसी दृष्टिकोण से राज्य सरकार ने आदिवासी क्षेत्रीय कार्यक्रमों और योजनाओं के निर्माण के लिए फरवरी 1982 में एक परामर्श समिति का गठन किया। इस कार्यक्रम के सफल क्रियान्वयन के लिए एक समन्वय और निर्देशन समिति पहले से ही कार्यरत थी। साथ ही आदिवासी क्षेत्रों में औद्योगिक विकास की सम्भावनाओं का पता लगाने के लिए सरकार ने एक टास्क फोर्स का भी गठन किया। टास्क फोर्स ने अपनी रिपोर्ट राज्य सरकार को प्रस्तुत कर दी है।

आदिवासी क्षेत्र विकास कार्यक्रमों को राज्य में पहली बार इस तरह क्रियान्वित किया जा रहा है कि इनसे आदिवासी लोगों को व्यक्तिगत स्तर पर लाभ मिल सके। वर्ष 1982-83 में 22 हजार आदिवासी परिवारों को लाभ पहुँचाने के लक्ष्य की तुलना में 26 हजार 280 परिवारों को लाभान्वित किया गया।

इसके अलावा संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम की सहायता से 25 25 लाख रुपये की लागत की एक सेमी कल्चर परियोजना उदयपुर जिले में लागू की गई है। यह भी निर्णय लिया गया कि आदिवासी क्षेत्रों में मछली पालन का कार्यक्रम सहकारिता के तहत चलाया जाये जिसका सीधा लाभ आदिवासी क्षेत्रों में गठित सहकारी समितियों के सदस्यों को मिले। इसके अलावा आदिवासी युवकों को कम्पाउण्डरी, नर्सिंग, औद्योगिक सम्बन्धी कार्यों का प्रशिक्षण देने के प्रबन्ध भी किये जा रहे हैं। आधारभूत विकास के लिए राज्य में निर्धारित मानदण्डों में आदिवासी क्षेत्रों के लिए रियायत और छूट भी दी गई है।

ग्रामीण विकास योजनाएं

(अ) एकीकृत ग्रामीण विकास

राज्य सरकार ने गरीबी उन्मूलन कार्य को सर्वोच्च प्राथमिकता दी है। इस उद्देश्य से वर्ष 1978-79 से प्रारम्भ किये गये एकीकृत ग्रामीण विकास कार्यक्रम को शक्तिशाली ढंग से क्रियान्वित किया जा रहा है। अक्टूबर 1980 से इस कार्यक्रम को राज्य के सभी विकास खण्डों में लागू कर दिया गया। वर्ष 1981-82 में 1 42 लाख परिवारों को लाभान्वित करने का लक्ष्य रखा गया था। पर उस वर्ष 1 22 लाख परिवारों का ही लाभान्वित किया जा सका।

जिनमे अनुसूचित जाति तथा जनजाति के लाभान्वित परिवारो की सख्या 70 हजार (57 प्रतिशत) थी। वर्ष 1982-83 मे भी 1 42 लाख परिवारो को लाभान्वित किये जाने लक्ष्य था जिसके विरुद्ध 1 83 लाख परिवारो को लाभान्वित करके प्रदेश मे एक कीर्तिमान स्थापित किया। इस कार्यक्रम के तहत अनुसूचित जाति व जनजाति के परिवारो पर विशेष ध्यान दिया गया है जिसके फलस्वरूप अनुसूचित तथा जनजाति के लाभान्वित परिवारो की सख्या 1 05 लाख (57 प्रतिशत) रही।

ग्रामीण युवाओ को रोजगार के लिए प्रशिक्षण (ट्राईसम) एकीकृत ग्रामीण विकास कार्यक्रम का ही अग है जिसके तहत अब तक 47 हजार युवको को प्रशिक्षण दिया जा चुका है और इसमे से 30 हजार युवको को काम धधे सुलभ हो चुके हैं। वर्ष 1983-84 मे इस कार्यक्रम के तहत 1 42 लाख परिवारो को 18 88 करोड रुपयो का अशदान दिया जाकर लाभान्वित किया जायेगा तथा 28 हजार अनुसूचित जन जाति के लोगो को लाभान्वित किया जायेगा।

(ii) **सीलिंग की अतिरिक्त भूमि का आवंटन**—यह योजना कुछ वर्षों पहले देहाती क्षेत्रो मे उन गरीब भूमिहीन परिवारो को सहायता देने के लिए शुरू की गयी थी, जिन्हे सीलिंग से अवाप्त भूमि आवंटित की गयी थी। आवंटित भूमि का सुधार करने हेतु आवश्यक उर्वरक, बीज आदि उपादान इस कार्यक्रम के तहत उपलब्ध कराते जाते है।

वर्ष 1981-82 मे 10 46 लाख रुपये खर्च कर इस योजना से 1924 परिवारो को लाभान्वित किया गया। वर्ष 1982-83 के दौरान इस कार्यक्रम पर पुर विशेष जोर दिया गया और 28 85 लाख रु खर्च कर 3677 परिवारो को लाभान्वित किया गया। वर्ष 1983-84 मे 30 लाख रुपये खर्च कर 3000 परिवारो को लाभान्वित किया जायेगा।

(iii) **ग्रामीण रोजगार कार्यक्रम**—ग्रामीण अचलो मे स्थायी सम्पदा निर्माण तथा रोजगार के अवसर सुलभ कराने के उद्देश्य से यह कार्यक्रम अक्टूबर 1980 मे आरम्भ किया गया था। वर्ष 1981-82 मे 15 75 करोड रुपये व्यय कर 105 95 लाख मानव दिवस कार्य जुटाया गया। स्कूल, भवन, कुए, तालाब, डिस्पेंसरियाँ आदि सुविधाओ के रूप मे 6 हजार 780 निर्माण कार्य हुए। वर्ष 1982-83 मे करीब 8 54 लाख रुपये खर्च हुए तथा 48 16 लाख मानव दिवस कार्य जुटाए गए और 2 हजार 953 निर्माण कार्यों के रूप मे स्थायी सम्पदा बनी।

वर्ष 1982-83 मे इस कार्यक्रम की मुख्य विशेषता यह रही कि राज्य की विभिन्न पौधशालाओ मे कुल 1 90 करोड पौधे उगाये गये जिन्हे फार्म फोरेस्टरी योजना के तहत देहाती क्षेत्रो मे वितरित किया जायेगा। इस प्रकार विभिन्न

अप्रैल '82 उक — २० करोड़ मानव दिवस
— २८ करोड़ रु.

पचायतों को 500 हैक्टेयर भूमि मे पौधे उगाने का कार्य हाथ मे लिया गया है। वर्ष 83-84 मे 9 36 करोड़ रुपये का प्रावधान रखा गया है, जिससे 4364 कार्य पूरे कर लिए जायेंगे। इस वर्ष के दौरान कुल 62 40 लाख मानव दिवस काम जुटाने का भी अनुमान है।

अकाल की समस्या

राजस्थान एक ऐसा राज्य है जो अतिवृष्टि एव अनावृष्टि से एक साथ ग्रसित रहता है। राज्य पाचवें वर्ष फिर अकाल की चपेट मे है।

जुलाई, 1981 मे बाढ से जो अभूतपूर्व क्षति हुई, उससे 10 जिलो म 1576 गांव, 84 794 परिवार तथा 7 88 लाख लोग प्रभावित हुए। इसके अतिरिक्त 2 48 लाख हैक्टेयर भूमि म फसल नष्ट हो गयी और लगभग 1 37 लाख हैक्टेयर भूमि मे उपजाऊ मिट्टी बहकर चली गयी। राज्य सरकार ने इस चुनौती को स्वीकार किया तथा बडे पैमाने पर राहत कार्य आरम्भ किये गये। अगले वर्ष भी राज्य के सभी जिला म फिर अनावृष्टि के कारण 23,246 गाव सूखे की चपेट मे आये, जिससे 276 12 लाख पशु एव 2 करोड से अधिक जनसख्या प्रभावित हुयी।

वर्ष 1983 मे भी 27 मे से 26 जिलो मे पुन अनावृष्टि के कारण फसलें खराब हो गयी। राज्य के 22 हजार 606 गाव पुन अकाल की चपेट म आ गये जिन्हे अभाव ग्रस्त घोषित कर राहत कार्य शुरू किये गये। इन गावो म 1 करोड 71 लाख 10 हजार जनसख्या तथा 2 करोड 60 लाख 95 हजार पशु प्रभावित हुए हैं।

राज्य म अकाल की स्थिति का जायजा लेने के लिए केन्द्रीय अध्ययन दल भी प्रदेश का दौरा कर गया। इसके उपरान्त केन्द्र सरकार ने 69 71 करोड रुपये की तदर्थ सहायता भी प्रदान की।

अकाल राहत कार्यों के सुचारु ढग से सचालित करने के लिए जिला स्तर पर अकाल राहत परामर्शदायी समितिया बनाई हुयी है। जिले के जनप्रतिनिधि इन समितियो के सदस्य है। इन सदस्यो के परामर्शानुसार राहत कार्य खोलने के प्रस्ताव राज्य सरकार को प्रेषित किये जाते है।

अभावग्रस्त क्षेत्रो में एक ओर रोजगार एव भोजन तथा चारे की समस्या विकराल रूप धारण कर लेती है वही दूसरी ओर पेय जल की समस्या भी विकट हो जाती है। राज्य सरकार ने अभावग्रस्त क्षेत्रो मे पेय जल की व्यवस्था करने के लिए जन स्वास्थ्य अभियान्त्रिकी विभाग को 21 04 करोड रुपये स्वीकृत किये हैं। इनसे अलावा 226 नये कुए खोदने, 784 कुओ को गहरा करने तथा 640 सामुदायिक टांको के निर्माण के लिए मजूरी दी गयी है। जल पहुचाने के लिए राहत विभाग ने पानी के टैंकर भी अकाल ग्रस्त गावो मे पहुचाये। इसके

लिए राज्य भर मे 215 टैंकर लगाये गये जो 589 ग्रामालय, पहुंचाने का कार्यरत रहे थे। जिन कुओ मे डेढ सौ फुट या इससे भी भी गयी है पानी है, ऐसे 475 गावो मे पिवाई की समुचित व्यवस्था की गयी।

पशुधन की सुरक्षा के लिए भी राज्य सरकार द्वारा प्रयास किये राज्यभर प्रदेश मे कुल 2 लाख 80 हजार पशुओ के लिए पशु पोषाहार केन्द्र स्वीकृत किये गए है। राजस्थान राज्य सहकारी डेयरी फेडरेशन इन केन्द्रो पर पशु आहार उपलब्ध करा रही है जिस पर राज्य सरकार प्रतिदिन डेढ रुपये प्रति पशु अनुदान दे रही है।

वन विभाग चारा सग्रहित कर अनुदानित दरो पर पचायतो के माध्यम से पशुपालको को चारा वितरित करता है। वर्ष 1983 मे पश्चिमी राजस्थान के छह जिलो मे पचायत समितियो एव स्वय सेवी सस्थाओ को चारे की व्यवस्था एव वितरण हेतु 19 50 लाख रुपये का ब्याज मुक्त ऋण उपलब्ध कराया। राज्य से चारे की निकासी पर रोक लगाकर तथा चारा उगाने व साडो के पोषण के लिये भी अनुदान स्वीकृत कर पशुधन की रक्षा करने के प्रयास किये गये।

पिछले दो साल म राज्य मे अकाल राहत कार्यों पर 151 करोड 58 लाख रुपये व्यय हुए हैं। वर्ष 1982–83 म राज्य सरकार द्वारा अकाल राहत कार्यों के लिए अक्टूबर, 1982 से मार्च, 1983 तक के लिए केन्द्र सरकार से 50 करोड रुपये की माग की गयी थी परन्तु स्वीकृति केवल 11 करोड 87 लाख रुपये की हुयी थी। इस प्रकार राज्य सरकार ने अकाल राहत कार्यों के लिए अप्रेल, 1983 से जुलाई 1983 तक की अवधि के लिए 70 80 करोड रुपये की माग की जबकि केन्द्र सरकार ने केवल 23 15 करोड रुपये की ही मजूरी दी।

विशिष्ट योजनाए

राज्य के ग्रामीण क्षेत्रो का पिछडापन दूर करने के लिए सरकार ने एक विशिष्ट योजना सगठन स्थापित कर उसे देहाती इलाको के विकास की योजनाए बनाने का दायित्व सौंपा हुआ है। इस विशिष्ट योजना सगठन ने गत दो वर्षों म करीब 470 26 करोड रुपय की लागत की कुल 1117 योजनाए बनायी और उन्हे विभिन्न वित्तीय अभिकरणों की सहायता के लिए प्रस्तुत की।

वित्तीय अभिकरणो ने इसी अवधि मे लघु सिचाई, फलो के पौधे लगाने, जलोत्थान से सिचाई करने तथा प्राथमिक ग्रामीण बाजार लगाने आदि की कुल 899 योजनाए मजूर की। इन स्वीकृत योजनाओ मे 192 25 करोड रुपये की लागत से कार्य किय जा रहे है।

कोटा तथा उदयपुर जिला मे रेशम उत्पादन वृद्धि हेतु शहतूत के पेड लगाने व रेशम कीटपालन व्यवसाय बढाने की नई योजनाए भी सम्मिलित हैं। 25 हैक्टेयर क्षेत्र मे वर्ष 1982–83 मे प्रायोगिक तौर पर शहतूत के पेड लगाये जा चुके हैं तथा रेशम उत्पादन प्रारम्भ किया जा चुका है। साथ ही इन्ही जिलो मे

ग्रामीण प्रगति
राज (1981) 24

पचायतों की 50
वर्ष 83-84 मे
पूरे कर
जुटाने

...र मे अर्जुना पौधे लगाने का प्रथम कार्य किया जा

पचायती राज

...राज का बहुत पुराना इतिहास है। देश मे सर्वप्रथम 1959 म त्रिस्तरीय पचायती राज का श्री गणेश ... तत्कालीन प्रधान मन्त्री जवाहर लाल नेहरू ने

लेकिन बाद म एक ऐसा अतराल आया जब इस व्यवस्था मे शैथिल्य आ गया, जिसे दूर करने के लिए राज्य सरकार न पचायती राज अधिनियम मे आवश्यक सशोधन कर ग्राम पचायतो का कार्य काल पाचवर्ष से घटाकर तीन वर्ष कर दिया और पचायती राज के समूचे तन्त्र को फिर स चुस्त और कारगर बनाने एव इसमे पुन प्राण प्रतिष्ठित करने के सकल्प के साथ 1981–82 म राज्य की 7292 पचायतो, 236 पचायत समितियो तथा सभी जिला परिषदो के चुनाव सम्पन्न कराये। लोगो ने इस चुनावो का स्वागत ही नही किया बल्कि राज्य सरकार की नीतियो के पक्ष म अपना भारी जन समर्थन भी अभिव्यक्त किया। पहली बार पचायत समिति और जिला परिषदो के चुनाव दलीय आधार पर हुए।

राजस्थान मे पचायती राज की कडी म पचायत समिति सबसे महत्वपूर्ण सस्था है अत प्रशासन मे जनता की भागीदारी के उद्देश्य से एकीकृत ग्राम विकास कार्यक्रम ट्राईसम, राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार कार्यक्रम, ग्रामीण हाटो का निर्माण, कृषि आदानो पर राजकीय अनुदान, ग्रामीण पशु औषधालय, चारा विकास योजनाए, अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम, हैल्थगाइड एव दाइयो की प्रशिक्षण योजनाए पचायत समितियो को स्थानातरित कर दी गयी हैं। वन विभाग की विभिन्न योजनाए, दो लाख रुपये की लागत तक के सभी निर्माण कार्य, 50 एकड से कम सिचाई वाले तालाबो और एनीकिटस की मरम्मत, ग्रामीण दस्तकार एव लघु उद्योगो को लाभ पहुचाने वाले कार्यक्रम तथा समाज कल्याण के अनेक कार्यक्रम भी इन सस्थाओ को स्थानातरित किय गये है। ग्रामीण विकास से सबधित बुनियादी सरचना तथा गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम की समीक्षा करने का अधिकार भी पचायत समितियो को दिया गया है। क्रियान्वयन मे कमिया पाई जाने पर उनकी समीक्षा करने और उनमे अपने स्तर पर सुधार करन क अधिकार भी पचायत समितिया को दे दिये गय हैं।

पचायत समितियो को सुदृढ बनाने के लिए पशुपालन प्रसार अधिकारियो, सहकारिता प्रसार अधिकारियो, प्रगति प्रसार अधिकारियो, कनिष्ठ अभियताओ, कृषि प्रसार अधिकारियो, उद्योग प्रसार अधिकारियो, खादी पर्यवेक्षको एव पचायत प्रसार अधिकारियो की नियुक्तिया पचायत समितियो मे की गयी है। जन प्रति

निधियों एव सभी श्रेणी के कर्मचारियो के प्रशिक्षण की व्यवस्था भी भी गयी है जिससे कार्यक्रम को दक्षता से क्रियान्वित किया जा सके।

पचायतो को ग्रामीण हाट व्यवस्था करने, स्वास्थ्य मार्ग दर्शकों का प्रारम्भिक चयन करने, ग्रामीण क्षेत्र मे वृक्षो की अवैध कटाई को रोकने, हैण्ड पम्पो व परम्परागत पेयजल साधनो का सुधारण एव परिचालन करने तथा राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार कार्यक्रम के क्रियान्वयन के अधिकार दिये गये है।

पचायती राज की पुनर्स्थापना के साथ ही राज्य सरकार ने जिला स्तरीय तथा मण्डलीय अधिकारियो को निर्देश दिये हैं कि वे पचायती राज सस्थाओ की बैठको में सक्रिय रूप से भाग लेवें और जन प्रतिनिधियो व सामान्य लोगो से मिलकर लोगो की समस्याओ का मौके पर ही निराकरण करें।

वन संवर्धन तथा वन्य जीव संरक्षण

राज्य के दक्षिणी-पूर्वी पठारी भाग मे सबसे अधिक वर्षा होने के कारण यहा घने वन पाये जाते है। बासवाडा, [illegible], चित्तौडगढ उदयपुर और झालावाड, जिलो में सागौन के घने वन पाये जाते हैं, जिससे फर्नीचर बनाया जाता है। यहा धोक की लकडी के भी वन हैं। धोक की लकडी के वन सवाई माधोपुर, अलवर, जयपुर मे पाये जाते है। चित्तौडगढ, बूदी मे औषधीय महत्व की वनस्पति भी पायी जाती है।

वन भूमि को खेती के काम, नदी घाटी परियोजनाओ, उद्योग लगाने तथा अन्य काम मे लाने के कारण वन क्षेत्र घट रहा है। ताजा आकडो के अनुसार राजस्थान मे पाये जाने वाले वनो का कुल क्षेत्रफल 3764 हैक्टेयर है जो कुल भौगोलिक क्षेत्र का मात्र 11 प्रतिशत है।

इस स्थिति को देखते हुए राज्य मे पर्यावरण सतुलन तथा वन और वन्य जीवो की रक्षा के लिए काफी प्रयास हुए। राष्ट्रीय वन नीति के अनुकूल प्रदेश मे वृक्षारोपण और वन सवर्धन कार्यक्रमो को तेजी से क्रियान्वित किया जा रहा है। प्रदेश मे वनो का प्रतिशतांक केवल 9 है। अधिकाश क्षेत्र परिभाषित वन, बजर भूमि तथा खुली पहाडियो के रूप मे है।

वृक्षारोपण कार्यक्रम को प्राथमिकता देते हुए राज्य मे विभिन्न योजनाए क्रियान्वित की जा रही हैं, जिनमे पौध वितरण योजना, अनुसूचित जाति व जन जाति कृषक पौध उगाओ योजना, विद्यालय पौध उगाओ योजना (पचायत अनुदान के माध्यम से), सामाजिक सुरक्षा योजना, मरुस्थल वृक्षारोपण कार्यक्रम, वृक्षो की खेती अनुदान योजना और ग्राम वन्य योजना आदि प्रमुख है। पौध वितरण के लिए राज्य मे वन विभाग की तीन सौ पौधशालाए कार्यरत है। वर्ष 82 की वर्षा ऋतु मे विभाग द्वारा 1 करोड 10 लाख पौधे वितरित किए गए। मार्च

राजस्थान में 'वन विकास निगम' का गठन

83 तक के वित्तीय वर्ष में राज्य में 4 करोड़ 32 लाख पौधे लगाये जा चुके हैं। वर्ष 83–84 में 4 करोड़ 50 लाख पेड़ लगाने का लक्ष्य है।

कृषि वानिकी हेतु राज्य में इस समय 6 सौ पौधशालाएं कार्यरत हैं। वर्ष 82 में करीब 435 लाख पौधे रोपित किये गये। वर्ष 83 में करीब 500 लाख पौधे रोपित किये जाने का लक्ष्य है।

राष्ट्रीय उद्यानों तथा अभ्यारण्यों का विकास भी प्रदेश में द्रुतगति से हुआ है। वर्ष 81 के बाद उनमें अभ्यारण्य तथा 7 नये आखेट क्षेत्र घोषित किये जा चुके हैं ताकि राज्य में वन्य जीवों तथा वन सम्पदा को पर्याप्त संरक्षण प्राप्त हो सके। अब राजस्थान देश के उन प्रमुख एक दो राज्यों में से है जहां पर भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त राष्ट्रीय महत्व के वन, उद्यान तथा अभ्यारण्य स्थित है। इस अवधि में वन्य जीवों के शिकार पर प्रायः पूर्ण प्रतिबन्ध रहा है। इन कार्यक्रमों के फलस्वरूप गत वर्षों में वन्य राज्य जीवों की संख्या में काफी वृद्धि हुई है।

सहकारी आंदोलन

राजस्थान में गरीब किसानों की पैदावार बढ़ाने और अन्य उपभोक्ता वस्तुएं उपलब्ध कराने के लिये सहकारी आन्दोलन को चलाया जा रहा है। उन्हें उचित मूल्य पर मोटा कपड़ा, अनाज, दवाईयां आदि सहकारी समितियों के मार्फत उपलब्ध कराई जाती है वहीं खेती करने के लिये अल्पकालीन, मध्यकालीन और दीर्घकालीन ऋण भी दिये जाते हैं। स्वतन्त्रता के बाद से ही सहकारी आन्दोलन ने गति पकड़ी है और अब राजस्थान में इसका निरन्तर विस्तार हो रहा है। सहकारी आन्दोलन की प्रगति के मुख्य बिन्दु इस प्रकार हैं—

(1) राज्य की 70 प्रतिशत ग्रामीण जनता को सहकारिता के अन्तर्गत लाया जा चुका है।

(2) 1980–81 के सहकारी वर्ष (जुलाई से जून) में 90 करोड़ रुपये के अल्पकालीन, 10 करोड़ रुपये के मध्यकालीन और 21 करोड़ 50 लाख रुपये के दीर्घकालीन कर्ज बांटे गये।

(3) राज्य में पिछड़े वर्ग के ग्रामीण परिवारों को कर्ज देने में प्राथमिकता दी जाती है।

(4) सहकारी समितियों के सदस्य बनाने में कमजोर तबके के लोगों को प्राथमिकता दी जाती है।

(5) सहकारी समितियों के गठन में संचालक मण्डल में पिछड़े वर्ग का प्रतिनिधित्व अनिवार्य है।

(6) आदिवासी क्षेत्रों के लिए सहकारी आंदोलन के तहत विशेष व्यवस्था की गयी है।

सहकारी आन्दोलन शुरू करने का मुख्य उद्देश्य गांवों में कमजोर वर्ग के

किसानो को सस्ती ब्याज की दर पर कर्ज देकर कृषि विकास के साधन उपलब्ध कराना तथा उन्हे सूदखोरों के चंगुल से मुक्त कराना रहा है।

राजस्थान मे सन् 1953 मे सहकारी कानून बना कर इसे लागू किया गया। उसके बाद धीरे-धीरे यह प्रभावी ढग से कार्य करता रहा। लेकिन पिछड़ी जातियो और आर्थिक दृष्टि से कमजोर वर्ग के लोगो को इस आदोलन का यथेष्ट लाभ नहीं मिल पाया। इसे ध्यान मे रखते हुए इस कानून मे सशोधन कर कमजोर तबके के लोगो को और अधिक सुविधाए उपलब्ध करायी गयी।

सहकारी क्षेत्र के आर्थिक कार्यक्रमो के तहत वर्ष 1981-82 मे 121.56 करोड़ रुपयो के तथा सहकारी वर्ष 1982-83 मे लगभग 133.95 करोड रुपयो के अल्पकालीन, मध्यकालीन, और दीर्घकालीन ऋण उपलब्ध कराये गये। इसी प्रकार वर्ष 1983-84 के लिए 173 करोड रुपये के ऋण उपलब्ध कराने का लक्ष्य है।

सहकारिता की कृषि सेवाओ के तहत पिछले दो वर्ष के दौरान राज्य मे 1120 अतिरिक्त उर्वरक वितरण केन्द्र कायम किये गये। ग्रामीण क्षेत्रो मे कृषि उपज के सुरक्षित भण्डारण के लिए 1 लाख 22 हजार मैट्रिक टन क्षमता वाले 1313 नये गोदामो का निर्माण कराया गया। इसके अलावा 639 अन्य गोदामों का निर्माण किया जा रहा है। इसी अवधि मे 14 53 करोड रुपये मूल्य की कृषि उपज की सहकारिता के माध्यम से विक्रय किया गया। राज्य सहकारिता क्षेत्र मे 7 चावल मिलें 5 दाल मिलें 3 तेल मिलें व 7 काटन जीनिंग एव प्रेसिंग इकाइयां कार्यरत हैं। अगले पाच वर्षों मे 10 और स्पिनिंग मिलें स्थापित करने की योजना है जिस पर सौ करोड रुपये खर्च होने का अनुमान है। कोटा मे सोयाबीन प्लाट तथा बीकानेर, सादुल शहर और भीलवाड़ा मे काटन सीड प्लाट लगाने की योजना विचाराधीन है।

आवासीय सुविधा हेतु अब तक 25 हजार 915 मकानो के लिए 1369 लाख रुपये के ऋण वितरित किये गये हैं। अनुसूचितजाति एव जनजाति के लोगो के लिए 13 हजार 730 मकान तैयार हो चुके हैं और 12 हजार 185 मकान निर्माणाधीन है।

पेयजल व्यवस्था

राजस्थान का बहुत बडा भाग थार मरुस्थल का भाग होने के कारण यहां पीने के पानी के सकट का अनुमान आसानी से लगाया जा सकता है। प्राचीन काल मे भी सभ्यताओ का विकास नदियो के किनारे ही हुआ करता था। राजस्थान के रेगिस्तानी क्षेत्र मे भी पहले सरस्वती नदी बहती थी जो अब लुप्त हो गयी है। रेगिस्तान मे जैसे-जैसे पानी कम होता गया, आबादी भी कम होती गयी और अब बहुत ही कम है। 38 हजार वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल वाले जैसलमेर जिले मे डेढ़ लाख लोग ही रहते हैं।

स्वतत्रता प्राप्ति के बाद पेयजल व्यवस्था की ओर भी ध्यान दिया गया और शहरो म यह व्यवस्था प्राथमिकता के साथ की गयी। वष 1972 के बाद स राज्य सरकार ने पेयजल आपूर्ति को सर्वोच्च प्राथमिकता दी। इसका मुख्य कारण यह भी है कि यहा 33 हजार गावो म स 24 हजार गाव पयजल की दृष्टि से समस्याग्रस्त थे अब भी रेगिस्तानी क्षेत्रो म ग्रामीणो को दस दस मील स जाकर पानी लाना पडता है। दूसरी तरफ सैकडा गावो म खारा कसैला पानी है जिसे पीकर लोग कुरूप हो जाते हैं। कुछ गावो म विशषकर सिरोही जिले के गावो म पानी पीने से कूबड निकल आता है। फ्लोराइड युक्त पानी भी खराबी करता है। पहाडी क्षेत्रो म पानी पीने से नाहरू निकल आता है जो बहुत कष्टदायक होता है।

प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमत्री जगन्नाथ पहाडिया न पाच वर्षो मे सभी समस्या ग्रस्त 24 हजार गावो म पीने का पानी पहुचाने का वायदा किया था। इससे पूव जनता सरकार के मुख्यमत्री भैरोसिंह शेखावत न भी पेयजल उपलब्ध कराने को सर्वोच्च प्राथमिकता दी थी। वतमान मुख्यमत्री शिवचरण माथुर भी इस समस्या क निराकरण के लिए प्रयत्नशील हैं इन प्रयासो स राज्य के सभी दो सौ कस्बो व शहरो मे पेयजल व्यवस्था कर दी गयी। कुछ शहरो व कस्बो म हालाकि अभी प्रति व्यक्ति पानी की सप्लाई कम है जिसे बढाने का प्रयास किया जा रहा है। वष 1981 तक जनस्वास्थ्य विभाग ने साढ सात हजार गावो म पीने के पानी की व्यवस्था कर दी थी। तब तक राज्य के एक करोड दो लाख लोगो को पेयजल सुलभ करा दिया गया था। वष 1981 82 मे 3890 गावो को पेयजल उपलब्ध कराया गया जबकि 1982 83 मे 4060 गावो को पयजल सुविधा प्रदान की गयी। मई, 1983 तक राज्य के कुल 15 हजार 844 गावो म पेयजल उपलब्ध कराया जा चुका था।

वष 1983–84 मे पेयजल सुविधाओ का विस्तार करने के लिये 40 करोड रुपये खच किये जायेंगे जबकि वष 1980 से 1983 तक की अवधि मे 126 करोड रुपये व्यय किये गये थे।

राज्य सरकार ने रेगिस्तानी तथा पहाडी क्षेत्रो म पेयजल सकट की गम्भीरता से केन्द्र सरकार को अवगत कराया तथा ऐसे क्षेत्रो मे पेयजल सुलभ कराने के लिये ए आर पी कायक्रम के तहत 41 करोड रुपये व्यय किये गये।

पिछले दो वर्षो म माथुर शासन के दौरान राज्य सरकार ने पेयजल क लिये पिछले पाच वर्षों म किये गये समस्त व्यय सम्मिलित राशि से अधिक राशि का प्रावधान किया। परिणामस्वरूप 8950 गावो मे पेयजल पहुचाने मे सफलता प्राप्त की गई जो निर्धारित लक्ष्यो से कहीं अधिक है।

इसी अवधि मे भूमिगत जल निकासी के कायक्रम के तहत कुओ को बोरिंग द्वारा गहरा करने तथा नये नलकूप लगाने के काय मे भी काफी प्रगति हुई। इस अवधि म कुल 3742 कुओ को गहरा किया गया तथा नये नलकूप

लगाये गये, जबकि इससे पहले के दो वर्षों मे केवल 1013 कुओं पर ही ऐसा कार्य हो पाया था। अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति के लोगो को गरीबी की रेखा से ऊपर उठाने की दृष्टि से 3047 कुओं को गहरा व नये कुओं का निर्माण कराया गया।

भूमिगत जल एवं सतह के जल के विकास की दृष्टि से राजस्थान नलकूप निगम के गठन का भी निर्णय लिया गया है, जो लगभग 2500 नलकूपों का निर्माण करेगा। उक्त निगम का मुख्य उद्देश्य भूमिगत व सतही जल को बिजली के पम्प, डीजल पम्प, पनचक्की, बायो गैस, सौर ऊर्जा आदि माध्यमों के जरिये किसानो को निश्चित सिंचाई की सुविधा प्रदान करना व उनकी माली हालत सुधारना है। ये नलकूप सामुदायिक सिंचाई योजना को ध्यान मे रखते हुए एक या एक से अधिक किसानों के लिए लगाये जायेंगे तथा उनके संचालन व रख-रखाव की जिम्मेदारी उन्ही की रहेगी। निगम उन्हें बैंको से ऋण की सुविधा दिलाने मे सहायता करेगा तथा नलकूप का निर्माण करके उन्ही को सौंप देगा।

मरु विकास

पश्चिमी राजस्थान के अधिकांश भाग मे रेगिस्तान फैला हुआ है। इस रेगिस्तान के बढने का खतरा बराबर बना हुआ है। पश्चिमी राजस्थान में लू और आंधियां चलती हैं जो अपने साथ बारीक और उपजाऊ मिट्टी को उडाकर ले जाती हैं और इधर-उधर फैला देती हैं। अतः उन स्थानो पर मोटी बालू बचती जाती है जो खेती के लिए उपयुक्त नही है। इसे रोकना जरूरी है।

भारत सरकार ने राजस्थान के मरू क्षेत्र के विकास के लिए तथा पश्चिमी राजस्थान मे मिट्टी के कटाव को रोकने के लिए पहली पंचवर्षीय योजना मे एक संरक्षण केन्द्र जोधपुर में स्थापित किया था। द्वितीय पंचवर्षीय योजना मे मरुस्थल वृक्षारोपण अनुसंधान केन्द्र तथा केन्द्रीय रेगिस्तान विकास बोर्ड की स्थापना की गई। इसके बाद प्रदेश मे भी केन्द्रीय रेगिस्तान विकास बोर्ड की स्थापना की गई। ये सभी संस्थाएं भूमि रक्षण की दिशा मे कार्य कर रही हैं।

राजस्थान मे ग्यारह जिलों मे रेगिस्तान के फैलाव को रोकने के लिए 1977-78 से मरु विकास कार्यक्रम हाथ मे लिया गया और 1980-81 तक इस कार्यक्रम पर 28 करोड रुपये खर्च किये गये। वर्ष 1981-82 मे 9 करोड 22 लाख रुपये व्यय हुए।

वर्ष 1981-82 मे विनियोजन से 3 हजार हैक्टेयर क्षेत्र मे भू संरक्षण कार्य किया गया, 20 सिंचाई कार्यों को पूरा कर 13 सौ हैक्टेयर क्षेत्र मे अतिरिक्त सिंचाई सुविधाएं उपलब्ध कराई गई, 5200 हैक्टेयर क्षेत्र मे वृक्षारोपण कार्य किया गया तथा 30 पशु चिकित्सा केन्द्र स्थापित किये गये। वर्ष 1982-83 मे पश्चिमी मरुस्थलीय जिलों मे इस कार्यक्रम के तहत 14 करोड 4 लाख रु० व्यय

किये गये जिसके फलस्वरूप 3हजार हैक्टेयर क्षेत्र मे भू-सरक्षण कार्य, 7665 हैक्टेयर क्षेत्र मे वन सवर्धन कार्य और 3809 हैक्टेयर क्षेत्र मे अतिरिक्त सिचाई कार्य सम्पन्न किये गये। वर्ष 1983-84 म इस कार्य के तहत 13 80 करोड़ रु० का प्रावधान रखा गया है, जिससे कृषि, सिचाई, चारागाह विकास आदि क्षेत्रो के अधूरे कार्य पूरे कर लिए जायेगे।

सूखा संभाव्य क्षेत्र कार्यक्रम

वर्ष 1974-75 मे 13 जिलो के 79 खण्डो म यह कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया था। इस कार्यक्रम पर वर्ष 1980-81 तक 59 करोड़ रु० खर्च किये गये जिससे भू-सरक्षण, सिचाई, भूतल-जल, लघु सिचाई, वन-सवर्धन आदि विकास कार्यों पर 9.60 करोड रुपये खर्च किया जाना था, इसके फलस्वरूप 7 हजार हैक्टेयर क्षेत्र म भू-सरक्षण कार्य और 16 खडीना का कार्य किया गया। 13 एनीकट बनाये गये, 27 लघु सिचाई कार्य पूरे किये गये, तीन हजार हैक्टेयर क्षेत्र म वृक्षारोपण किया गया तथा 189 नलकूप लगाये गये।

इसके बाद 1982-83 म इस कार्यक्रम को पहाडी और आदिवासी बहुल्य डूंगरपुर, बासवाडा, उदयपुर और अजमेर जिले के कुछ भागो तक सीमित कर दिया गया। गत वर्ष सिचाई भू-सरक्षण तथा कुएं गहरे कराने पर इस कार्यक्रम के तहत 2 करोड 20 लाख रूपये खर्च हुए, जिनस 713 हैक्टयर क्षेत्र म भू-सरक्षण कार्य 703 हैक्टेयर क्षेत्र मे सिचाई सुविधाओ का विस्तार कार्य किया गया। 77 लघु एव मध्यम क्षमता के नलकूप लगाये गये। वर्ष 1983-84 म इस कार्यक्रम के तहत 2 20 करोड रुपयो का प्रावधान किया गया है जिससे अधूरे कार्यों को पूर्ण किया जायेगा।

गोबरगैस सयत्र

ऊर्जा के वैकल्पिक स्रोत के रूप म राज्य मे गोबरगैस सयत्र विकसित किये जा रहे हैं। इन सयत्रो की स्थापना से न केवल जलाने के काम आने वाले परम्परागत साधनो की ही बचत होती है बल्कि इनसे खाद भी पैदा होती है और पर्यावरण भी शुद्ध बनता है।

राज्य मे वर्ष 1981-82 मे 1 हजार 222 गोबर गैस सयत्र स्थापित किये गये जबकि वर्ष 1982-83 म 2 हजार 783 सयत्र लगाये गये। इस वर्ष 5000 सयत्र स्थापित करने के लिए 17 लाख रु० का राज्य योजना से प्रावधान किया गया है।

इन सयत्रो से अधिकाधिक लोगो को लाभान्वित करने के उद्देश्य से सामुदायिक गोबर गैस सयत्र लगाने के भी प्रयास किये जा रहे है। राज्य म ऐसे तीन सामुदायिक गोबर गैस सयत्र निर्माणाधीन हैं। अन्य वैकल्पिक ऊर्जा श्रोतो पर आधारित परियोजनाए भी बनाई जा रही है।

नगरीय विकास

राज्य सरकार ने हाल ही नगरो के विकास के लिए भी काफी प्रयास किये है। जयपुर शहर म जयपुर विकास प्राधिकरण की स्थापना भी इसी सदर्भ म की

गई। शहर की आवासीय समस्या के निराकरण के लिए प्राधिकरण ने विद्याधर नगर, मुरलीपुरा, वैशाली, त्रिवेणी और अयोध्या आदि आवासीय योजनाओं की शुरूआत की। इसके अलावा बृहद वैशाली आवासीय योजना शुरू करने का भी प्रस्ताव है। इन सब प्रयासो का परिणाम यह हुआ कि जयपुर शहर मे जमीनो की बढती कीमतो पर अकुश लग गया।

इसके अलावा राज्य सरकार ने पिछले दो वर्षों में आवासीय भूखण्डो के नियमन की प्रक्रिया भी एक अभियान के रूप मे चलाई जिसके अन्तर्गत राज्य मे 38,299 आवासी भूखण्डो का नियमन कर दिया गया है। ये वे आवासीय भूखण्ड थे जिस पर 1 जनवरी 1981 को लोग रह रहे थे। राज्य सरकार ने यह भी निर्णय लिया कि अब राज्य में चार सौ वर्ग गजो तक के ही आवासीय भूखण्ड आवटित किये जायेगे। इस निर्णय के परिणाम स्वरूप राज्य के नगरीय क्षेत्रो मे आवासीय भूखण्डो की बढती हुई कीमतो मे पर्याप्त गिरावट आई।

इसी उद्देश्य से कृषि भूमि को आबादी एव व्यावसायिक भूमि मे परिवर्तन के लिए व्यापक कदम उठाये गये। इस कार्यक्रम के अतर्गत अनधिकृत निर्माण कार्यों का नियमन किया गया। कृषि भूमि के रूपातरण के सरकारी निर्णय को आम जनता ने काफी सराहा। इस कार्य के सरली करण के लिए सभी जिलो मे अतिरिक्त जिलाधीश (भूमि रूपातर) नियुक्त किये गये और लगभग 23 करोड रुपये का रूपांतरण शुल्क जमा हुआ।

पर्यावरण सुधार योजना के अतर्गत राज्य के 37 59 लाख जनसख्या के 15 नगरो को चुना गया। राज्य सरकार ने गत दो वर्षों मे गंदी बस्तियो मे रहने वाले 61 हजार लोगो को नागरिक सुविधायें सुलभ कराई और पर्यावरण सुधार योजना के अतर्गत लाभ पहुचाया। प्रधानमत्री के 20 सूत्री कार्यक्रम के अतर्गत आर्थिक रुप से कमजोर तबके के लोगो को बने बनाये मकान दिये जा रहे हैं। पिछले दो वर्षों मे 12,116 मकान दिये गये और वर्ष 1983-84 मे भी इतने ही लोगो को मकान देने की योजना है।

पर्यटन विकास

राजस्थान अब पर्यटन विकास की नई उपलब्धियो के साथ उभर कर आया है। पिछले तीन साल से इस प्रदेश को लगातार पर्यटन विकास के लिए अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार "पाटा अवार्ड" मिला है। यह अवार्ड अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन संस्था की ओर से पर्यटन सम्बन्धी उत्कृष्ट सेवाओं के लिए दिया जाता है।

पर्यटन विकास निगम द्वारा भारतीय रेल विभाग के सहयोग से वर्ष 1982 के गणतन्त्र दिवस से "पहियो पर राजमहल" (पैलेस ऑफ व्हील) नामक शाही रेलगाडी चलाई जिससे प्रदेश ने काफी विदेशी मुद्रा भी अर्जित की। पर्यटको के लिए स्तरानुकुल वाछित आवास और परिवहन आदि की व्यापक सुविधायें भी सुलभ कराई गई।

वर्ष 1981-82 मे 5 नये पर्यटक सूचना केन्द्र जैसलमेर, कोटा, अलवर एव बीकानेर मे तथा एक राज्य से बाहर मद्रास म खोले गये। वर्ष 1982-83 मे सवाई माधोपुर बाघ परियोजन क्षेत्र म एक नया पर्यटन सूचना केन्द्र खोला गया। इस तरह राज्य मे वर्तमान म 22 पर्यटक सूचना केन्द्र कार्यरत हैं जिनमे दिल्ली, बम्बई, कलकत्ता, मद्रास, अहमदाबाद और आगरा स्थित राजस्थान पर्यटक सूचना केन्द्र भी शामिल है। राज्य की पर्यटन सम्पदाओ और भावी सम्भावनाओ के प्रचार हेतु समय-समय पर पर्यटन प्रदर्शनियो, सास्कृतिक कार्यक्रमो एव फोटोग्राफी प्रतियोगिताओ आदि का भी आयोजन किया जाता है।

कानून और व्यवस्था

राज्य मे कानून और व्यवस्था की स्थिति राज्य के अन्य प्रदेशो के मुकाबले काफी सन्तोषप्रद कही जा सकती है। राजस्थान मे पुलिस ने अपराधो की रोकथाम और अपराधियो की गिरफ्तारी की दिशा मे सराहनीय कार्य किया है।

हालाकि वर्ष 1980 की अपेक्षा वर्ष 1981 म अपराधो मे 10 20 प्रतिशत की वृद्धि हुई पर राज्य सरकार ने अपराधो की रोकथाम के लिए जो कारगर एव कठोर कदम उठाये उनके फलस्वरूप वर्ष 1982 मे अपराधो की यह बढोतरी घटकर 9 73 प्रतिशत रह गई। डकैती, लूट, हत्या और नकबजनी जैसे जघन्य अपराधा मे तो काफी गिरावट आई है।

गत वर्षों मे डकैती उन्मूलन कार्यों मे राज्य की उल्लेखनीय उपलब्धि रही। जुलाई, 81 से मई, 83 तक के दौरान 35 डाकू मुठभेडो मे मारे गये, 533 डाकू गिरफ्तार किये गये और दो डाकुओ ने आत्म-समर्पण किया। डाकुओ से हुई मुठभेडो मे पुलिस ने 170 हथियार बरामद किये। अब राज्य मे कोई अन्तर्राज्यीय सगठित डाकू दल सक्रिय नही है। डकैती की जो भी वारदातें राज्य मे होती हैं, वे राजस्थान के पूर्वी और दक्षिणी सीमा से लगे उत्तरप्रदेश और मध्यप्रदेश के कुछ डाकू दलो द्वारा की जाती है। राज्य सरकार ने उत्तरप्रदेश और मध्यप्रदेश सरकारों के साथ मिलकर और समन्वय स्थापित कर डकैती उन्मूलन के संयुक्त अभियान चलाये हैं जिसके अच्छे परिणाम निकले है। वर्ष 1983 को पहले पाच महिनो मे पुलिस की डाकुओ से हुई 12 मुठभेडो मे तीन डाकू मार गिराये गये और 32 हथियार बरामद किये जा चुके हैं।

राज्य सरकार का यह तत्पर प्रयत्न रहा है कि हरिजनो पर होने वाले अत्याचार को प्रभावी ढग से समाप्त किया जाये ताकि ये लोग अपनी जमीन को निर्बाध रूप से जोतकर शान्तिपूर्वक जीवन-निर्वाह कर सकें। राज्य सरकार ने इन लोगो पर होने वाले अत्याचारो एव इनसे सम्बन्धित समस्याओ को सुलझाने के लिए विभिन्न स्तरो पर विशेष प्रकोष्ठ स्थापित किये हैं।

प्रशासन गांवों की ओर

पिछले अभियानों से हटकर समाज के कमजोर तबके के लोगों का कल्याण करने के लिए राज्य सरकार ने डेढ़ माह की अवधि का एक व्यापक अभियान समस्त राज्य में 1 जनवरी, 1983 से प्रारम्भ किया था। इस अभियान में न केवल राजस्व अभिलेखों को आदिनांक संशोधित किया गया, बल्कि विकास के अन्य बिंदुओं को भी हाथ में लिया गया। इस अभियान के प्रमुख अंग निम्न प्रकार थे—

(i) एकीकृत ग्रामीण विकास कार्यक्रम के अन्तर्गत परिवारों के चयन एवं उन्हें लाभान्वित करना।

(ii) अभाव अभियोगों का निपटारा।

(iii) एकीकृत ग्रामीण विकास कार्यक्रम एवं सहकारिता कार्यक्रम के अन्तर्गत लोगों से प्रार्थना-पत्र लेकर मौके पर ही ऋण मंजूर करना और उनका भुगतान करना।

(iv) उचित मूल्य की दुकानों पर आवश्यक सामग्री उपलब्ध कराना।

(v) ग्रामीण विद्यालयों के बालकों की शाला छोड़ने की प्रवृत्ति का पता लगाना तथा उसको दूर करना।

1 जनवरी से 15 फरवरी, 1983 तक प्रत्येक जिले का सम्पूर्ण प्रशासन ग्रामीणों की समस्याओं को हल करने के लिए कचहरी से हट कर काश्तकार की चौखट पर पहुंच गया।

इस दौरान गावों में प्रशासन की तरफ से ग्रामीणों की समस्या निवारण के लिए शिविर लगाये गये। इन शिविरों का मूल उद्देश्य आर्थिक दृष्टि से कमजोर वर्ग के लोगों को लाभान्वित करना था। इन शिविरों में करीब एक लाख से अधिक आवंटियों को खातेदारी अधिकार दिये गये और लगभग 4.78 लाख व्यक्तियों के नामान्तरण तस्दीक किये गये। कुल मिलाकर 1,47,843 एकड़ भूमि 83,348 व्यक्तियों को आवंटित की गई जिनमें 15,944 अनुसूचित जाति एवं 21,179 व्यक्ति अनुसूचित जनजाति के थे।

इसके अलावा लगभग 1.90 लाख भू-निर्धारण के मामले निपटाये गये और अनुमानत 47,740 भू-आवंटियों को सहकारी समितियों का सदस्य बनाया गया ग्रामीण क्षेत्रों में करीब 28,000 आवासीय भूखण्ड आवंटित किये गये। 4,238 ग्रामीण कारीगरों को 59 लाख रु० का ऋण स्वीकृत करने के साथ ही सहकारिता के क्षेत्र में लघु, मध्यम और दीर्घ अवधि के ऋण क्रमशः 459.33 लाख रुपये, 272.88 लाख रु० एवं 164.30 लाख रु० करीब 27,821 व्यक्तियों को स्वीकृत किये गये।

एकीकृत ग्रामीण विकास कार्यक्रम के अन्तर्गत करीब 1,52,700 नये परिवारों को चिह्नित किया गया और 15,508 मामलों में उत्पादन, सामान और

साधन दिलाये गये। 22,000 प्रार्थना पत्र तैयार करवाये गये और करीब साढ़े तीन करोड रु० का ऋण अनुदान वितरित किया गया। विद्यालयों, पंचायतघरों एवं औषधालयों जैसी सार्वजनिक संस्थाओं के लिए भूमि का मौके पर आवंटन किया गया।

सरकार ने अभियान को चुनौती के रूप में स्वीकार किया और इस चुनौती का उत्तर झौपड़ी में रहने वाले उस ग्रामीण की संतुष्टी से देने का प्रयास किया गया जिसे इस कार्यों के लिए तहसील, पंचायत समिति, उप खण्ड एवं जिला मुख्यालय तक कई बार जाना पड़ता था।

इस अभियान से जहां वर्षों पुराने राजस्व संबंधी विवादों का निपटारा हुआ है वहीं जन सामान्य की दृष्टि में प्रशासन की एक नई साख पैदा हुई है।

वित्तीय अनुशासन

निरन्तर पड़ने वाले अकाल प्राकृतिक विपदाएं और राज्य कर्मचारियों के बढ़ते हुए महंगाई भत्ता के भुगतान के कारण राज्य की वित्तीय स्थिति एक नाजुक दौर से गुजर रही थी।

राज्य की इस दुर्बल अर्थव्यवस्था के निवारण के लिए वित्तीय अनुशासन पहली आवश्यकता थी जिसे सुनिश्चित करने के लिए वित्तीय नीतियों को अधिक व्यवहारिक बनाने और प्रशासनिक तथा अन्य खर्चों पर नियन्त्रण रखने का गुणात्मक कार्यक्रम अपनाया गया। वर्ष 1982–83 में इस हेतु करारोपण करना पड़ा जिसमें मद्य निषेध को समाप्त कर आबकारी से आय बढ़ाने, सिंचाई और बिजली की दरें बढ़ाने और परिवहन कर तथा शुल्क की परिवर्तित दरें लागू करने के साहसिक वित्तीय निर्णय लिए गए। अकाल की विभिषिका और विषम आर्थिक स्थिति के रहते भी आवश्यक सामाजिक सेवाओं के प्रसार एवं अन्य विकास कार्यों की गति बनाये रखने की आवश्यकताओं की दृष्टि से यह जरूरी था।

इस आर्थिक अनुशासन में पूर्ण क्षमता से आय के श्रोतों का दोहन करके संसाधन जुटाये गये। कृषि भूमि के रूपांतरण संबंधी राज्य सरकार के नीतिगत निर्णय से 23 करोड रुपये की आमदनी हुई। छठी पंचवर्षीय योजना के दौरान अतिरिक्त आर्थिक संसाधन जुटाने का लक्ष्य 750 करोड रु रखा गया था। अब तक किये गये प्रयत्नों से 687 करोड रुपये उपलब्ध हो सकेंगे।

यद्यपि वित्तीय संसाधनों की कमी के कारण 1981–82 की 340 करोड रुपये की वार्षिक योजना की तुलना में 1982–83 की वार्षिक योजना में कोई वृद्धि करना संभव नहीं हो पाया तथापि राज्य सरकार संसाधनों की स्थिति सुधारने के लिए निरंतर प्रयत्नशील रही है। फलस्वरूप वित्तीय वर्ष 1983–84 के लिए 416 करोड रुपये की वार्षिक योजना को योजना आयोग ने अपनी मंजूरी

दे दी है। इसमे से लगभग 292 करोड र विद्युत, सिंचाई, कृषि तथा अन्य सबधित क्षेत्रों के लिए आवटित किये गये हैं तथा 70 प्रतिशत भाग बीस सूत्री कार्यक्रम से सबधित योजना पर व्यय किया जाना प्रस्तावित है।

प्रशासन शहरों की ओर

जिस प्रकार राज्य सरकार ने दूरदराज गाँवो मे रहने वाले लोगो की समस्याओ को वही जाकर निपटाने के लिए "प्रशासन गावो की ओर' अभियान चलाया, उसी प्रकार 15 सितम्बर से 31 अक्टूबर, 1983 तक शहरी समस्याओ के निवारण के लिए "प्रशासन शहरा की ओर" अभियान चलाने का भी निर्णय लिया।

इस अभियान का उद्देश्य शहरो मे रहने वाले लोगो की समस्याए मुस्तैदी से निपटाना था। यह निर्णय लिया गया कि इस अभियान मे पर्यावरण सुधार पर विशेष जोर दिया जाये और कच्ची बस्तियो मे बिजली पानी सडक आदि प्राथमिकता से उपलब्ध कराई जाये। इसके अलावा इस अभियान के दौरान जमीन आवटन नक्शे पास करने और मकानो के नियमन के काम को प्राथमिकता देने, शहरी क्षेत्रों मे बेकारो का पता लगा कर उन्हे रोजगार उपलब्ध कराने का भी निर्णय लिया गया तथा इस अवधि के दौरान राज्य मे पाच हजार लोगो को स्व-रोजगार उपलब्ध कराने का लक्ष्य रखा गया।

इसके अलावा अभियान के दौरान पुराने बने मकानों का नियमन कर उन्हे पट्टे देने तथा शहरी इलाको मे रह, रहे अनुसूचित जाति व जन जाति के परिवारो की कठिनाइया दूर करने का भी निर्णय लिया गया।

राज्य सरकार ने यह भी फैसला किया कि इस अभियान के दौरान शहरो मे सार्वजनिक शौचालयो की सफाई की जाये। इसके लिए सुलभ इटरनेशनल एजेन्सी की सहायता से एक अभियान चलाने का निर्णय लिया गया जिसमे एजेन्सी के कार्यकर्ता दस पैसे लेकर किसी व्यक्ति को सार्वजनिक शौचालयों मे शौच करने देंगे तथा शौचालयो की सफाई रखेंगे।

सरकारी तंत्र प्रशासन

भारत की जनतान्त्रिक प्रणाली के अनुरूप राजस्थान में भी शासन की बागडोर निर्वाचित सरकार के हाथो मे है। राज्यपाल उसका अध्यक्ष है जो मन्त्रि-परिषद की सलाह पर कार्य करता है।

लोकतान्त्रिक पद्धति म सरकार के तीन भग कार्यपालिका, विधायिका और न्यायपालिका के रूप मे होते हैं जो प्रशासन को सुचारु रूप से चलाने के साथ ही उसे दिशा निर्देश भी देते है।

छोटी बडी रियासतो को मिलाकर राजस्थान का पूर्ण गठन एक नवम्बर 1956 को पूरा हुआ था जबकि अजमेर राज्य का भी इसमे विलय हो गया था।

अब राजस्थान पाच सभागो (Division) व 27 जिलो मे बटा हुआ है। 27 जिलो मे 200 तहसीलें है। कानून व्यवस्था बनाये रखने के लिए सात पुलिस रेंज सभाग मुख्यालय जयपुर, कोटा, उदयपुर जोधपुर, बीकानेर, अजमेर और भरतपुर मे हैं।

रियासतो के विलीनीकरण के बाद जब 30 मार्च 1949 को राजस्थान का प्रादुर्भाव हुआ तो यहा राज्यपाल की जगह महाराज प्रमुख और राज प्रमुख की नियुक्ति की गयी। राज्य के सबसे पहले महाराज प्रमुख महाराणा भोपालसिंह थे। राज प्रमुख महाराजा सवाई मानसिंह को बनाया गया था और कोटा के महाराज भीमसिंह उप राज प्रमुख थे। 1956 मे अजमेर राज्य को मिलाने के बाद राजस्थान के गठन की प्रक्रिया पूरी हुई और राजस्थान मे 1957 मे पहली बार राज्यपाल की नियुक्ति की गयी। पहले राज्यपाल गुरुमुख निहाल सिह थे।

राजस्थान मे 1957 मे विधानसभा के सदस्यो की कुल सख्या 176 थी जो 1967 मे बढ़कर 184 और 1977 मे दो सौ हो गयी। जून 1980 मे हुए चुनावो मे भी यह सख्या 200 ही थी।

दो सौ विधान सभा क्षेत्रो मे से 33 अनुसूचित जाति व 24 अनुसूचित जन जाति के लोगो के लिए सुरक्षित है पर जून 1980 मे हुए चुनावो में अनुसूचित जाति के 34 तथा जनजाति के 26 विधायक चुनकर आये थे। राज्य से लोकसभा के लिए 25 और राज्यसभा के लिए 10 सदस्य चुने जाते है।

कार्यपालिका

कार्यपालिका मे राज्यपाल, मत्रिपरिषद शामिल है। इनका सक्षिप्त वर्णन निम्न है—

(1) राज्यपाल—

राज्यपाल प्रदेश का शासक होता है पर वह सारा कार्य मत्रिपरिषद की सलाह से करता है। मत्रिपरिषद का गठन जनता द्वारा निर्वाचित विधायको मे से होता है जो विधानसभा के प्रति उत्तरदायी है।

राज्यपाल को निम्न अधिकार सविधान द्वारा प्रदत्त हैं—

(1) **कार्यपालिका संबधी शक्तियां**—राज्यपाल ही मुख्यमन्त्री को नियुक्त करता है। परन्तु ऐसा वह विधान मण्डल मे सबसे बडे दल के नेता को बुलाकर करता है। मुख्यमन्त्री की सलाह से मत्रिपरिषद के अन्य मन्त्रियो को नियुक्त करता है। वह महाधिवक्ता लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष तथा उसके सदस्यो एव प्रतेक अन्य अधिकारियो को भी नियुक्त करता है। यदि राज्य की निर्वाचित और सवैधानिक सरकार प्रशासन के सचालन म अक्षम साबित होती है तो राज्यपाल के परामर्श से राष्ट्रपति उस राज्य मे राष्ट्रपति शासन लागू कर देता है। राष्ट्रपति शासन मे राज्य का प्रशासन राज्यपाल के निर्देशन मे केन्द्र द्वारा नियुक्त किये गये

अधिकारियो द्वारा चलाया जाता है, राज्य के मुख्यमन्त्री का यह कर्त्तव्य होता है कि वह मंत्रिमण्डल के सभी निर्णयो से राज्यपाल को अवगत कराये।

(ii) **व्यवस्थापिका संबंधी शक्तियां**—राज्यपाल राज्य की व्यवस्थापिका का एक अभिन्न अंग होता है। उसे व्यवस्थापिका के अधिवेशन बुलाने, स्थगित करने और निम्न सदन को भंग करने का अधिकार होता है। राज्य की व्यवस्थापिका द्वारा पारित विधेयक के समान ही होता है। यह साहित्य, कला, विज्ञान आदि क्षेत्रो मे ख्याति प्राप्त व्यक्तियो को विधान परिषद का सदस्य नामजद करता है। यदि उस राज्य मे विधान परिषद भी हों तो।

(iii) **वित्त संबंधी शक्तियां**—राज्यपाल की स्वीकृति से ही विधानसभा मे धन विधेयक प्रस्तुत किया जाता है। वह व्यवस्थापिका के सम्मुख प्रतिवर्ष बजट प्रस्तुत कराता है। राज्य की संचित निधि पर राज्यपाल का ही अधिकार होता है।

(iv) **न्याय संबंधी शक्तियां**—राज्य की कार्यपालिका का सर्वोच्च पदाधिकारी होने के कारण राज्य सूची मे दिए गए विषयों संबंधी किसी विधि के विरुद्ध अपराध करने वाले व्यक्तियो के दण्ड को वह कम कर सकता है, स्थगित कर सकता है तथा क्षमा भी कर सकता है।

मुख्यमन्त्री—राज्यपाल विधानसभा में बहुमत प्राप्त राजनीतिक दल के नेता को मुख्यमन्त्री नियुक्त करता है। मुख्यमन्त्री मन्त्रिमण्डल की बैठकों का सभापतित्व करता है।

मुख्यमन्त्री का विधानसभा सदस्य होना आवश्यक है। यदि मुख्यमन्त्री ऐसे व्यक्ति को बना दिया जाये जो विधानसभा का निर्वाचित सदस्य नही है तो उसे छह माह के भीतर विधानसभा का निर्वाचित सदस्य बनना पड़ता है।

मंत्रि परिषद— मुख्य मन्त्री की सलाह पर राज्यपाल मन्त्रिपरिषद के सदस्यों की नियुक्ति करता है। सभी मन्त्रियो का भी विधान मण्डल का सदस्य होना आवश्यक है अथवा उन्हें नियुक्ति के छह माह के भीतर विधान मण्डल का सदस्य बन जाना चाहिए। यद्यपि राज्य का प्रशासन राज्यपाल के नाम से होता है लेकिन अधिकांश प्रशासनिक निर्णय मन्त्रिपरिषद द्वारा ही लिए जाते हैं। संसदीय व्यवस्था के कारण मन्त्रिपरिषद विधान मण्डल के निम्न सदन विधान सभा के प्रति उत्तरदायी होती है। यदि निम्न सदन मे मन्त्रिपरिषद के विरुद्ध अविश्वास का प्रस्ताव पारित हो जाए तो मुख्य मन्त्री सहित सम्पूर्ण मन्त्रिपरिषद को त्यागपत्र देना पड़ता है। इसके अतिरिक्त विधान मण्डल के सदस्य प्रश्न पूछ कर, कार्यस्थगन प्रस्ताव आदि द्वारा मन्त्रिपरिषद पर नियन्त्रण बनाए रखते हैं। यदि कोई मत्री मन्त्रिपरिषद के निर्णय से सहमत नही होता या मुख्य मन्त्री से किसी प्रश्न पर मतभेद हो जाता है तो उसे त्यागपत्र देना होता है।

राज्य विधान मण्डल—भारत में प्रत्येक राज्य में एक विधान मंडल की व्यवस्था की गयी है जिसमे एक या दो सदन होते हैं। वयस्क मताधिकार के आधार पर प्रत्यक्ष रूप से निर्वाचित प्रतिनिधियों का एक सदन होता है जिसे विधानसभा कहते है। किन्तु कुछ राज्यो मे विधान मण्डल का दूसरा सदन भी है, उसे विधान परिषद कहा जाता है। राजस्थान में केवल विधानसभा ही है जबकि आंध्रप्रदेश, महाराष्ट्र, बिहार, तमिलनाडु, उत्तरप्रदेश, कर्नाटक तथा जम्मू एव कश्मीर राज्यो में द्विसदनीय विधान मण्डल है।

(1) **विधान सभा**—विधान सभा का प्रत्येक सदस्य निर्वाचित क्षेत्र की कम से कम 75 हजार जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करता है। संविधान के अनुसार राज्य की विधान सभा के सदस्यो की अधिकतम सख्या 500 और न्यूनतम 60 निश्चित की गयी है। कुछ स्थान अनुसूचित जाति व जन जाति के लिए सुरक्षित रखे गये हैं जो 1990 की अवधि तक बढ़ा दिये गये हैं। साधारणतया विधान सभा का कार्यकाल 5 वर्ष का है किन्तु आपात स्थिति मे ससद इसका कार्यकाल एक साल तक बढ़ा सकती है। विधान सभा का सदस्य होने के लिए भारत का नागरिक होना 25 वर्ष की आयु तथा ससद द्वारा निर्धारित शर्तों को पूरा करना आवश्यक है।

राजस्थान मे विधान सभा को राज्य सूची तथा समवर्ती सूची मे दिये गये विषयो पर कानून बनाने की शक्ति राज्य के वार्षिक बजट तथा विनियोग विधेयक को पारित करना, मत्रिमण्डल पर विभिन्न तरीको से नियन्त्रण रखना तथा संविधान की कुछ धाराओं मे सशोधन के प्रस्ताव को अनुसमर्थन देने का अधिकार प्राप्त है। राष्ट्रपति चुनाव

राज्य विधानसभा मे दो सौ सदस्य हैं जो अपने मे से ही एक को अध्यक्ष चुनते हैं। अध्यक्ष को सदन की कार्यवाही चलाने मे सहयोग देने के लिए एक उपाध्यक्ष,सरकारी मुख्य सचेतक होता है। अध्यक्ष का दर्जा मत्री स्तर का होता है तथा उपाध्यक्ष और मुख्य सचेतक को राज्य मत्री की हैसियत की सुविधाएं मिलती है। अध्यक्ष हर साल विधायकों मे से ही चार सभापति चुनता है जो अध्यक्ष व उपाध्यक्ष की अनुपस्थिति मे सदन की कार्रवाई का सचालन करते हैं।

वर्तमान मे विधानसभा के अध्यक्ष पूनमचन्द विश्नोई है। अब तक रहे अन्य अध्यक्ष इस प्रकार हैं—(1) नरोत्तमलाल जोशी (2) रामनिवास मिर्धा (3) स्व निरजननाथ आचार्य (4) स्व० रामकिशोर व्यास (5) महारावल लक्ष्मण सिंह (6) गोपाल सिंह आहोर।

न्यायपालिका

प्रशासन का तीसरा महत्वपूर्ण अग न्यायपालिका होती है।
राजस्थान उच्च न्यायालय का मुख्यालय जोधपुर मे है। जनवरी 1977 मे

उच्च न्यायालय की खण्डपीठ जयपुर म भी स्थापित कर दी ग
ई राज्य की न्याय व्यवस्था का सचालन करता है।

उच्च न्यायालय के अधीनस्थ न्यायालय तीन
(1) दीवानी, (2) फौजदारी और (3) राजस्व न्यायालय
मावकारी व नगर पालिका के मामलो को फैसला करने के लिय भी न्या...
नायक होते हैं जो जिला एव सत्र न्यायाधीश के नियन्त्रण मे रहकर कार्य करते हैं।

राजस्थान उच्च न्यायालय

जिला एव सत्र न्यायालय		राजस्व मण्डल
		राजस्व अपील अधिकारी
दीवानी न्यायालय	फौजदारी न्यायालय	जिलाधीश न्यायालय
सिविल न्यायालय	प्रथम श्रेणी दडनायक	उप जिलाधीश न्यायालय
लघुवाद न्यायालय	द्वितीय श्रेणी दडनायक	तहसीलदार न्यायालय
मुन्सिफ न्यायालय	तृतीय श्रेणी दडनायक	नायब तहसीलदार न्यायालय
न्याय पचायत	न्याय पचायत	
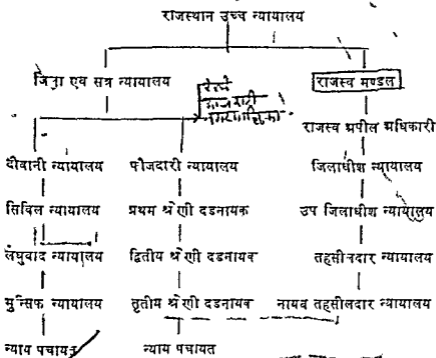
प्रशासन के इन तीन मुख्य अगो के अलावा 1959 मे दो अक्टूबर से राज्य म प्रशासनिक व्यवस्थाओ का विकेन्द्रीकरण पचायत राज सस्थाओ के गठन के साथ किया गया। पचायतराज सस्थाओ का गठन तीन स्तरो पर हुआ।

(1) **ग्राम पंचायतें** —ग्राम स्तर पर।
(2) **पचायत समितिया**—विकास खण्ड स्तर पर।
(3) **जिला परिषद** —जिला स्तर पर।

पचायतराज सस्थाओ के गठन का मुख्य उद्देश्य गावो के प्रशासन और उनके विकास म वहा के लोगो को भागीदार बनाने का प्रमुख था। 1965 तक पचायत सुचारु रूप से कार्य करती रही पर उसके बाद 13 वर्षों तक उनके चुनाव किसी न किसी कारण से टलते रहे। 1978 मे उनके चुनाव फिर कराये गये पर

- , ा समितियों और जिला परिषदों के चुनाव नहीं हो सके। पर वर्ष 1981-82 में इनके चुनाव कराये गये।

ग्राम पंचायतों का गठन व कार्य—राज्य में इस समय 7 हजार 292 ग्राम पंचायतें हैं। एक ग्राम पंचायत 2 हजार तक की आबादी पर बनती है। कम आबादी के दो-तीन गांवों को मिला कर भी एक पंचायत बनाई जाती है। एक गांव में पंचों की संख्या आबादी के हिसाब से होती है उनमें एक पिछड़ी जाति के और एक महिला पंच को सहवृत किया जाता है। सरपंच का चुनाव अब सीधे ही होता है।

ग्राम पंचायतों को गांव की प्राथमिक शिक्षा का प्रबन्ध करना पड़ता है वहीं सार्वजनिक स्थानों की सफाई, रोशनी व पेयजल की भी व्यवस्था करनी पड़ती है। गांवों में पशु मेलों का आयोजन भी पंचायत ही करती है। प्रौढ़ शिक्षा, कुओं की मरम्मत, पशु धन की देखभाल आदि के कार्य भी पंचायत ही कराती है।

पिछले वर्षों में पंचायतों ने जो सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य किये वे काम के बदले अनाज कार्यक्रम के तहत गांवों में पंचायत घर, अस्पताल, स्कूल भवनों का निर्माण, सड़क बनाना, तालाब खोदना आदि थे। इससे बहुत बड़ी संख्या में काम हुए जो पुख्ता थे।

न्याय पंचायतें—ग्राम पंचायतों की तरह ही न्याय पंचायतों का गठन गांवों के छोटे विवाद निपटाने के लिये किया गया। राज्य में करीब डेढ़ हजार न्याय पंचायतें हैं। ये न्याय पंचायतें, पंचायत स्तर पर दीवानी, फौजदारी और राजस्व सम्बन्धी छोटे-छोटे मामलों की सुनवाई करती हैं।

न्याय पंचायतें 50 रुपये तक की माल की चोरी, जानवरों की हत्या, शराब पीकर दुराचरण करना, तालाबों को गन्दा करना आदि मामलों की सुनवाई कर सकती हैं। ये 50 रुपये तक का जुर्माना कर सकती हैं। इनमें वकील पैरवी नहीं कर सकते और इनके निर्णयों की अपील ऊंची अदालतों में की जा सकती है। एक सौ रुपये तक के दीवानी मामलों की भी न्याय पंचायतें सुनवाई कर सकती हैं।

पंचायत समितियां—खण्ड स्तर पर पंचायतीराज की संस्था पंचायत समिति होती है। इस समय राज्य में 236 पंचायत समितियां हैं। खण्ड में आने वाली सभी पंचायतों के सरपंच इसके सदस्य होते हैं। सरपंचों के अलावा दो महिलाएं, दो अनुसूचित जाति व जनजाति के सदस्य लिये जाते हैं। एक कृषि विशेषज्ञ एक सहकारी समिति का सदस्य तथा दो विकास कार्य के लिये जिम्मेदार सदस्य सहवृत किये जाते है। ये सब मिल कर पंचायत समिति के प्रधान व उप प्रधान का चुनाव करते हैं। खण्ड के विधायक और उप जिलाधीश भी पंचायत समिति के सदस्य होते हैं।

पचायत समिति क्षेत्र के विकास की योजनाए
करती है। कृषि, पशुपालन, शिक्षा, स्वास्थ्य, ग्रामीण
क्रियान्वित करती है। समिति अपने क्षेत्र में रोजगार के
काम करती है। समिति मे सरकार का प्रतिनिधि खण्ड
डी० ओ०) होता है।

जिला परिषद—जिला स्तर पर पचायत राज
के लिये जिला परिषदो का गठन किया जाता है। परिषद के सदस्य सभी पचायत समितियो के प्रधान, विधायक, सांसद, विकास अधिकारी होते हैं। पिछड़ी जातियो के सदस्यो व महिला सदस्यो को सहवृत्त किया जाता है। जिला परिषद का अध्यक्ष जिला प्रमुख कहलाता है। जिला परिषद के सचिव अतिरिक्त जिला विकास अधिकारी या अतिरिक्त जिलाधीश (विकास) होते हैं। वर्तमान मे जिला परिषदो का गठन नही हो पाया है।

प्रमुख स्वतन्त्रता सेनानी

1. विजयसिंह पथिक—इनका वास्तविक नाम भूपसिंह था और वे क्रांतिकारी विचारधारा के व्यक्ति थे। पहले विश्व युद्ध के समय मे भूमिगत हो गये थे और फिर 1915 मे एक साल बाद विजयसिंह पथिक के रूप मे प्रगट हुए। भीलवाड़ा के बिजौलिया क्षेत्र मे पथिक ने किसान सत्याग्रह चलाया और कई बार जेल गये।

2 अर्जुनलाल सेठी—अर्जुनलाल सेठी का जन्म जयपुर मे 1880 मे हुआ था। सेठी ने 1905 से 1912 तक क्रातिकारी आदोलन मे भाग लिया था लार्ड हार्डिंग पर बम फेंकने के मामले मे अग्रेजो ने इन्हे भी जिम्मेदार ठहराया था। स्वाधीनता आन्दोलन के दौरान भी सेठी कई बार जेल गये। वे क्रातिकारी व दार्शनिक प्रवृत्ति के थे।

3. हरिभाऊ उपाध्याय—महात्मा गाधी के सानिध्य मे पाँच वर्ष (1920-25) तक रहने वाले हरिभाऊ उपाध्याय बहुत बड़े स्वतन्त्रता सेनानी हुए है। उपाध्याय कितनी ही बार जेलो मे गये। 1927 मे उन्होने अजमेर के पास हटूडी में गाधी आश्रम की स्थापना की थी जहां आज लडकियो का बी एड स्कूल खुला हुआ है।

हरिभाऊ उपाध्याय स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद अजमेर राज्य के मुख्यमन्त्री बने। उसके बाद राजस्थान मे भी वे मन्त्री रहे। भारत सरकार ने उन्हे पदम विभूषण की उपाधि से अलकृत किया था।

4 भोगीलाल पाड्या—पाड्या भी बड़े स्वतन्त्रता सेनानी रहे है। वे आदिवासी क्षेत्रो मे बागड गाधी के नाम से जाने जाते है। इन्हे भी पदम विभूषण से अलकृत किया गया है।

प्रमुख राजनेता

(1) हीरालाल शास्त्री—हीरालाल शास्त्री वृहत्तर राज 1949 से 1951 तक पहले मुख्यमन्त्री थे। उसके बाद वे लोकसभा के

। उन्होंने अपनी पुत्री की स्मृति में वनस्थली विद्यापीठ खोला था जो आज भी इनके बालिकाओं की शिक्षा का अग्रणी संस्थान है। उन्होंने अपना जीवन इस संस्था की सेवा में ही लगाया।

(2) **जयनारायण व्यास**—लोकनायक जयनारायण व्यास दो बार राजस्थान के मुख्यमन्त्री रहे। पहली बार अप्रैल 1951 से फरवरी 1952 तक रहे उसके बाद वे आम चुनाव में हार गये। उसी साल किशनगढ से उप चुनाव में जीते और नवम्बर 1952 से जनवरी 1954 तक मुख्यमन्त्री रहे। व्यास ने स्वाधीनता संग्राम में भी हिस्सा लिया था और जेल गये थे। वे गांधीवादी विचारधारा के समर्थक थे।

(3) **बरकतुल्ला खां**—सुखाडिया के बाद जुलाई 1971 में बरकतुल्ला खा राजस्थान के मुख्यमन्त्री बने थे। उन्होंने प्रशासन को बहुत अच्छी तरह चलाया। वे सुखाडिया मन्त्रिमण्डल में मन्त्री भी रहे थे। कृषि भूमि की सीलिंग उन्होंने अपने शासन काल में ही 30 एकड़ से कम करके 22 एकड़ निर्धारित की। नवम्बर 1973 में उनका देहान्त हो गया।

(4) **मोहन लाल सुखाडिया**—स्व मोहन लाल सुखाडिया को आधुनिक राजस्थान का निर्माता भी कहा जाता है। जयनारायण व्यास के बाद वे राजस्थान के मुख्य मन्त्री बने। देश भर में वे अकेले ऐसे व्यक्ति थे जो सत्रह वर्ष तक लगातार किसी राज्य के मुख्य मन्त्री रहे हों। वे सन् 1972 से 1977 तक कर्नाटक आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु के राज्यपाल रहे। सन् 1980 में वे उदयपुर से लोकसभा के सदस्य बने। उनके शासनकाल में ही राजस्थान में पंचायतीराज की स्थापना हुई थी। सन् 1981 में पंचायतीराज की पुनर्स्थापना के बाद बीकानेर में हुए सरपंचों के सम्मेलन में उनको दिल का दौरा पड़ा। 31 जुलाई को बीकानेर में ही उनका निधन हो गया।

(5) **हरिदेव जोशी**—बरकतुल्ला खा के निधन के बाद हरिदेव जोशी राजस्थान के नये मुख्यमन्त्री बने और मई 1977 में विधान सभा भंग होने तक शासन करते रहे। जोशी उन विधायकों में से हैं जो 1952 से अब तक विधान सभा के सभी चुनावों में विजयी रहे हैं।

(6) **भैरोंसिंह शेखावत**—जनता पार्टी की सरकार के भैरोंसिंह शेखावत पहले व एक मात्र मुख्यमन्त्री रहे हैं। शेखावत भी 1972 को छोड़ कर विधान सभा के अब तक हुए सभी चुनावों में जीते हैं। शेखावत ने ही अपने शासनकाल में गरीबों की दशा सुधारने के लिये 'अन्त्योदय' योजना लागू की थी जिसे बाद में दूसरे राज्यों ने भी अपनाया। वर्तमान में वे विधान-सभा में विपक्ष के नेता हैं।

(7) **जगन्नाथ पहाडिया**—15 वर्षों तक लोकसभा के सदस्य रहे जगन्नाथ पहाडिया राजस्थान में पिछड़े वर्ग के पहले मुख्य मन्त्री थे। केन्द्र में वे 10 वर्षों तक उपमन्त्री भी छह महिने वित्त राज्य मन्त्री रहे।

(8) शिवचरण माथुर—ये राजस्थान के वर्तमान मुख्य मन्त्री हैं।

इन मुख्य मन्त्रियों के अलावा टीकाराम पालीवाल भी कुछ महिनों के लिये राजस्थान के मुख्य मन्त्री रहे हैं। राज्य के कुछ अन्य राजनीतिक नेता इस प्रकार रहे हैं—

राजबहादुर—वयोवृद्ध कांग्रेस के पुराने नेता राजबहादुर लम्बे अर्से तक केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल के सदस्य रहे। स्वतन्त्रता संग्राम में भी उनका योगदान रहा है। 1980 में पहली बार वे विधान सभा के सदस्य बने। राजबहादुर नेपाल में भारत के राजदूत भी रह चुके हैं।

दामोदरलाल व्यास—व्यास लम्बे अर्से तक सुखाड़िया मन्त्रिमण्डल के सदस्य रहे। उन्हें राजस्थान के लौह पुरुष के रूप में भी जाना जाता है।

महारावल लक्ष्मणसिंह—राजस्थान में स्वतन्त्र पार्टी के उदय के साथ ही महारावल लक्ष्मणसिंह भी राजनीति में आये। 15 वर्षों तक विधान सभा में विपक्ष के नेता और 1977 में विधान सभा के अध्यक्ष बने। इस पद पर वे दो साल रहे।

श्रीमती गायत्री देवी—जयपुर के महाराजा स्व० सवाई मानसिंह की पत्नी श्रीमती गायत्री देवी राजस्थान में स्वतन्त्र पार्टी की नेता रही हैं। वे 15 साल तक लोकसभा में जयपुर का प्रतिनिधित्व करती रहीं। आपातकाल में उन्हें भी गिरफ्तार किया गया था। जनता पार्टी के शासन में वे राजस्थान पर्यटन विकास निगम की अध्यक्ष रहीं।

सवाई मानसिंह—वे जयपुर राज्य के शासक थे। 27 वर्षों तक महाराजा रहने के बाद वे 1949 से 1956 तक वृहत्तर राजस्थान के राजप्रमुख रहे। स्पेन में भारत के राजदूत के रूप में भी उन्होंने कार्य किया। जून 1970 में इंगलैंड में पोलो खेलते हुए उनका निधन हो गया।

भवानीसिंह—सवाई मानसिंह के पुत्र भवानीसिंह सेना में लेफ्टिनेन्ट कर्नल के पद पर रहे। 1971 के भारत पाक युद्ध में इन्होंने अपनी पैराशूट टुकड़ी को दुश्मन के क्षेत्र में उतार कर विजय प्राप्त की थी। इन्हें भी आपातकाल में गिरफ्तार किया गया था।

डा० नगेन्द्रसिंह—महारावल लक्ष्मणसिंह के भाई डा० नगेन्द्रसिंह आई० सी० एस० अधिकारी रहे हैं। अपनी योग्यता के बल पर वे इस समय हेग में विश्व न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश हैं।

अमीनुद्दीन अहमद—अहमद कई वर्षों तक सुखाड़िया मन्त्रिमण्डल के सदस्य रहे। बाद में वे हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल भी बने। उन्हें लुहारू के नवाब के रूप में भी जाना जाता है। वर्ष 1983 में उनका निधन हो गया।

डा० के. एल. श्रीमाली—डा० कालूलाल श्रीमाली बहुत बड़े शिक्षा शास्त्री हैं। उन्हें सरकार ने पद्म विभूषण से अलंकृत किया है। डा० श्रीमाली

केन्द्र मे शिक्षा मन्त्री और बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के कुलपति भी रह चुके है।

प्रो० एम. वी. माथर—माथुर राजस्थान के प्रमुख अर्थ शास्त्री रहे हैं। वे राजस्थान विश्वविद्यालय के उपकुलपति रहे है। नेशनल कौंसिल ऑफ एप्लाईड इकोनोमिक रिसर्च के महानिदेशक रहे हैं। NCAER

घनश्यामदास बिडला—ये देश के जाने-माने उद्योग पति थे। पिलानी मे बिडला इस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी की स्थापना का श्रेय इन्ही को है। इसके अलावा इन्होने राज्य मे अनेक उद्योगो की स्थापना भी की। वर्ष 1983 मे इनका निधन हो गया।

प्रमोद करण सेठी—ये जयपुर के मेडिकल कालेज मे हड्डी रोग विशेषज्ञ हैं। इन्होने विकलागो की सहायता के लिए कृत्रिम पैरो का निर्माण किया जो 'जयपुर फुट' के नाम से विश्व विख्यात हो गये। उनके इस कार्य के लिए इन्हें सन् 1981 मे मेगसेसे पुरस्कार से सम्मानित किया गया। सन् 1981 मे ही उन्ह भारत सरकार ने पद्म श्री की उपाधि से विभूषित किया।

राजस्थान एक नजर मे

1 आबादी (1981)	3,41,08,292
शहरी	71,40,421
ग्रामीण	2,69,67,871
2. शहर व कस्बे	201
3. गाव	35,795
4 बुवाई योग्य क्षेत्र	1,52,68,000 हैक्टर
5 सिंचित क्षेत्र	37,49,000 हैक्टर
6. पशुधन व मुर्गे-मुर्गी	4,29,49,000
7. सहकारी समितिया	18,122
8. सहकारी समितियो के सदस्य	47,72,493
9. छोटे उद्योग	40,692
10 सडकें	41,194 कि मी.
11. ग्राम पचायतें	7,292
12. पचायत समितिया	236
13. टेलीफोन एक्सचेज	306
14. डाकघर	9180
15 मेडिकल कालेज	5
16. विश्वविद्यालय	3
17 शिक्षा संस्थाए	30,661
18. विद्यार्थी	431 लाख

विविध

1. राजस्थान की बोलियां

राजस्थान की राजभाषा तो हिन्दी ही है लेकिन वैसे बोलचाल में खासकर देहाती क्षेत्रो मे राजस्थानी भाषा का ही प्रचलन है। पूरे राजस्थान में इस भाषा के भी विभिन्न रूप देखने को मिलते है।

राजस्थानी भाषा के निम्नलिखित उपरूप है—

(i) पश्चिमी राजस्थानी (मारवाड़ी)
(ii) उत्तरी राजस्थानी (मेवाडी)
(iii) पूर्वी राजस्थानी (जयपुरी या ढूंढाडी)
(iv) दक्षिणी राजस्थानी (मालवी)
(v) पहाडी राजस्थानी (भीली)

राजस्थान मे वैसे मारवाड़ी का ही अधिक प्रसार है। जोधपुर, जैसलमेर, बीकानेर, शेखावाटी और अजमेर मे कमोवेश मारवाडी ही बोली जाती है। किशनगढ़ और जयपुर मे जयपुरी अर्थात् ढूंढाडी बोली का प्रचलन है। डूंगरपुर, शाहपुरा, बाँसवाडा आदि क्षेत्रो मे बागडी बोली जाती है। वही पूरे मेवाड क्षेत्र मे मेवाड़ी का प्रचलन है। बूंदी, कोटा और झालावाड मे राजस्थानी भाषा का उपरूप हाड़ौती का प्रचलन है वही अलवर और उसके देहाती क्षेत्र मे मेवाती बोली जाती है।

भरतपुर, धौलपुर, करौली, आदि क्षेत्रों मे ब्रजभाषा बोली जाती है।

राजस्थान मे विभिन्न भाषाएं बोलने वालों की सख्या व प्रतिशत निम्न प्रकार है—

भाषा व वोली	सख्या (हजारों में)	प्रतिशत
1	2	3
सभी भाषाएं	25,766	100·00
हिन्दी	15,666	60·80
मारवाड़ी	4,192	16·27
राजस्थानी	1,979	7·68
बागड़ी राजस्थानी	974	3·78
मेवाड़ी	812	3·15
उर्दू	651	2·53
पंजाबी	467	1·81

हाडोती	334	1 30
सिंधी	240	0 93
ढू ढाडी	155	0 60
खडी बोली	1	0 01
वाग्डी	1	नगण्य
अन्य	294	1 14

2 औद्योगिक विकास व विनियोजन निगम

राज्य मे 1969 मे औद्योगिक व खनिज विकास निगम का गठन होने तक 27 औद्योगिक क्षेत्र विकसित किये गये थे ।

औद्योगिक विकास एव विनियोजन निगम ने अब तक 134 औद्योगिक क्षेत्रो को विकसित करने का काम अपने हाथ मे लिया है अब तक 22 68 उद्योग उत्पादन शुरु करने लगे है । निगम इन औद्योगिक क्षेत्रो मे भूखण्ड आवटन के साथ ही उद्योगो के लिए मूलभूत जरूरत की चीजे बैंक, डाकघर, टेलीफोन एक्सचेन्ज, अस्पताल, पैट्रोलपम्प, कांटा, बाजार आदि भी उपलब्ध कराता है । निगम इन औद्योगिक इकाइयो को अब कर्ज भी देने लगा है ।

3. राजस्थान वित्त निगम—

राज्य मे उद्यमियो को कर्ज देने म राज्य वित्त निगम ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है । इस निगम की स्थापना 1955 मे की गयी थी । यह निगम 20 लाख रुपय तक के कर्ज उद्यमी को देता है । निगम पुराने उद्योगा के आधुनिकीकरण के लिए भी कर्ज देता है वही नये उद्योग लगाने और उनके विस्तार म भी मदद करता है । निगम अब तक राज्य म 2937 उद्योगो का 3738 79 लाख रुपये का ऋण स्वीकृत कर चुका है जिसमे से 2066 इकाइयो को 2610 38 लाख रुपये का ऋण बाटा जा चुका है ।

4. राजस्थान लघु उद्योग निगम—

इस निगम की स्थापना 1961 म की गयी थी । यह निगम छोटे उद्योगा की कच्चे माल की जरूरत पूरी करता है । वही उन्ह उत्पादन बढाने के लिए आर्थिक व तकनीकी सहायता भी उपलब्ध कराता है । निगम के देश मे बडे-बडे शहरो मे अपने हस्तकला एम्पोरियम हैं जिसम यहा के कारीगरो की वस्तुओ का विक्रय होता है । राजस्थान की हस्तकला वस्तुओ की देश म ही नही विदेश म भी काफी माग है ।

निगम ने अब तक 1883 छोट उद्योगा को 2544 80 हजार रुपय का ऋण उपलब्ध कराया है ।

5 अनुसूचित जाति निगम—

अनुसूचित जाति के लोगो की स्थिति म तीव्र गति स विकास करन के लिए प्रदेश म अनुसूचित जाति सहकारी विकास निगम की स्थापना की गयी है । यह

निगम न केवल अनुसूचित जाति के लोगों को उद्योग लगाने के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करता है बल्कि माग के अनुसार उनके प्रशिक्षण की व्यवस्था भी करता है। निगम ने गत दो वर्षों म अनुसूचित जाति के 1 लाख 39 हजार 793 परिवारो को ग्रामीण क्षेत्रों में विभिन्न उद्योग धन्धे और अन्य व्यवसाय लगाने के लिए 10 40 करोड रुपये का अनुदान दिया है।

शहरी क्षेत्रों मे 3 हजार 948 लोगो के लिए स्व रोजगार कार्यक्रम के अन्तर्गत 21 लाख 79 हजार रुपये व्यय किये गये हैं। इस राशि का उपयोग युवकों को रोजगार उपलब्ध कराने तथा आवश्यक प्रशिक्षण और औजार उपलब्ध कराने पर किया गया।

इसी प्रकार गत दो वर्षों मे निगम ने राज्य के शहरी क्षेत्रों म उद्योग लगाने तथा व्यापार करने के लिए 4 हजार 667 परिवारो को 32 लाख 26 हजार रुपये का अनुदान उपलब्ध कराया।

निगम वर्ष 1983-84 मे अनुसूचित जाति के 200 प्रशिक्षित ड्राइवरों को आटोरिक्शा खरीदने के लिए बैंको से ऋण व निगम से अनुदान भी देगा। इस के अलावा अनुसूचित जाति के लोगों को इस वर्ष 2000 हजार दुकानें तथा केबिनें भी उपलब्ध कराई जायेगी।

6. रोजगार की समस्या—

राजस्थान प्रदेश के आर्थिक दृष्टि से पिछडे होने के कारण तथा यहा के लोगो मे शिक्षा का अधिक प्रसार नही होने के कारण बेरोजगारी की समस्या काफी गभीर है। पश्चिमी राजस्थान मे तो प्राकृतिक स्थितिया ऐसी हैं कि लोग सूखे अकाल से ही पीडित रहते हैं। वहा रोजगार के प्रचुर साधन भी नही है। पशुपालन से ही लोगो का जीवन गुजरता है।

फिर भी प्रदेश मे बेरोजगार कितने हैं इसका सही-सही अनुमान नही लगाया जा सकता। राजस्थान मे विभिन्न रोजगार केन्द्रो मे पजीकृत लोगो की कुल सख्या 3,61,710 है लेकिन यह आंकडे पूरी तरह सही नहीं कहे जा सकते। दूरदराज इलाकों मे रहने वाले तथा अधिक पढे लिखे न होने के कारण हजारो लोग इन रोजगार केन्द्रो मे अपना नाम दर्ज नही कराते।

राजस्थान में बिजली का सकट रहने तथा उद्योगो के लिए ससाधनो का समुचित उपयोग नहीं होने के कारण निजी क्षेत्र म भी रोजगार के अधिक अवसर उपलब्ध नही हो पाते। राज्य की श्रम शक्ति का समुचित उपयोग नही हो पाने के कारण धीरे-धीरे प्रदेश मे बेरोजगारी की समस्या गभीर रूप ले रही है जिसकी तरफ राज्य सरकार का ध्यान देना अपेक्षित है।

7. गरीबी की समस्या—

प्रदेश मे गरीबी की समस्या काफी गभीर है। राज्य सरकार ने समय-समय

पर गरीबो के आर्थिक उत्थान के लिए कई प्रयास किये हैं लेकिन अब भी प्रदेश इस समस्या से उबर नहीं पाया है।

राज्य मे गरीबी की खास वजह जहा एक ओर भौगोलिक परिस्थितियां हैं वही दूसरी ओर आर्थिक पिछडापन, शिक्षा के प्रसार की धीमी गति तथा आदिवासी व ग्रामीण तबको मे जागरूकता का अभाव रहा है।

जनता सरकार के समय प्रदेश मे गरीबो के उत्थान के लिए अन्त्योदय योजना चलायी गयी थी। इस योजना के तहत पहले चरण मे 1,62,688 परिवारो का तथा दूसरे चरण मे 1,12,733 परिवारो का चयन किया गया था। इनमे से पहले चरण मे 1,41,800 परिवारो को तथा दूसरे चरण में 95,994 परिवारो को लाभान्वित किया गया था।

सन् 1980 मे कांग्रेस ही की सरकार के गठन के बाद तथा बीस सूत्री कार्यक्रम के क्रियान्वयन के दौरान राज्य सरकार ने गरीबी उन्मूलन कार्यक्रमो पर बहुत जोर दिया। हालांकि राज्य के 33 हजार से अधिक गांवो मे 1 लाख 83 हजार परिवारो तक पहुचना असाधारण और कठिन कार्य है। फिर भी सरकार उनके द्वार तक पहुंची और उनसे अपने रोजगार के साधन चुनने के लिए आग्रह किया। इस दिशा मे जो कर्म हुआ उनकी सराहना योजना आयोग ने भी उदारतापूर्वक की।

यह उल्लेखनीय है कि राज्य सरकार ने भीषण अकाल के बावजूद लक्ष्यो से अधिक उपलब्धिया अर्जित की गयी हैं।

8. बीस सूत्री कार्यक्रम

सामाजिक न्याय के पवित्र लक्ष्य से प्रेरित बीस सूत्री कार्यक्रम की सफल क्रियान्विति के लिए राज्य सरकार ने अनेक ठोस एव प्रभावी कदम उठाये हैं। राज्य स्तर से लेकर विकास खण्ड स्तर तक समितिया गठित की गई हैं। मुख्य मन्त्री जी की अध्यक्षता मे गठित राज्य स्तरीय समिति लक्ष्यो का निर्धारण, क्रियान्वयन के लिए दिशा निर्देश एव क्रियान्विति का पर्यवेक्षण करती है। इस समिति मे सांसदों और विधायको के अतिरिक्त अनुसूचित जाति, जनजाति, महिला एवं श्रमिक तथा पचायतीराज संस्थाओ के प्रतिनिधि भी सदस्य हैं। इस राज्यस्तरीय समिति के अन्तर्गत चार उप समितियां भी गठित हैं जो कार्यक्रमो के क्रियान्वयन की देख-रेख करती हैं व आवश्यक हिदायतें देती हैं। इन उप समितियो की अध्यक्षता मुख्य मन्त्री अथवा प्रभारी मत्रीगण करते हैं। जिला स्तर पर जिला प्रमुख की अध्यक्षता मे जिला समिति गठित की गई है जो जिले मे कार्यक्रम की क्रियान्विति की समीक्षा करती है तथा पचायत समिति स्तर के लिए लक्ष्यो का निर्धारण एव क्रियान्वयन की परिवीक्षा करती है। पचायत समिति स्तर पर प्रधान की अध्यक्षता मे गठित समिति पचायत समिति मे क्रियान्वयन का परिवीक्षण करती है। सभी समितियो मे जन प्रतिनिधियो को शामिल किये जाने से इस कार्यक्रम का क्रियान्वयन जन आकाक्षाओ के अनुरूप एव जनता के लिये अधिक लाभप्रद सम्भव हुआ है।

अखिल भारतीय स्तर पर बीस सूत्री कार्यक्रम के क्रियान्वयन के लिए योजना आयोग द्वारा राजस्थान को समस्त राज्यो मे दूसरा स्थान दिया गया किन्तु राजस्थान जैसे पिछडे प्रदेश मे बहुत कुछ करना बाकी है। अत भविष्य की आवश्यकताओ को ध्यान मे रखते हुए वर्ष 1983–84 के लिये और महत्वाकाक्षी लक्ष्य निर्धारित किये गये हैं। इनका सक्षिप्त वर्णन निम्न तालिकाओ मे दिया गया है—

परिशिष्ट–1

राजस्थान में बीस सूत्री कार्यक्रम
1982–83

सूत्र	इकाई	लक्ष्य	उपलब्धिया	उपलब्धियो का प्रतिशत
1. अधिक सिंचाई-अधिक उपज				
अ–राजस्थान नहर	हजार हैक्ट	35 0	46 0	131 43
ब–प्रवाही सिंचाई, सिंचाई विभाग द्वारा	,,	28 0	29 97	107 03
स–कुओ द्वारा	,,	25 0	22 41	89 88
2. दलहन दुगुनी-तिलहन तिगुनी				
अ–दलहन	लाख टन	22 20	22 97	103 46
ब–तिलहन	,,	7 15	7 63	107 27
3. पिछड़े को पहले				
अ–एकीकृत ग्रामीण विकास कार्यक्रम से लाभान्वित व्यक्ति	लाख सख्या	1 42	1 83	128 87
ब–अनुसूचित जाति	,,	0 50	0 73	146 00
स–अनुसूचित जनजाति	,,	0 28	0 32	114 29
द–राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार	लाख मानव कार्य-दिवस	31 20	48 13	154 26
4. भूमिहीनो को भूमि				
भू-आवटन	हजार एकड़	10 00	17 82	174 16
5. कृषि मजदूरी पूरी-पूरी				

सूत्र	इकाई	लक्ष्य	उपलब्धियां	उपलब्धियां का प्रतिशत
		न्यूनतम वेतन 7 रु० से बढ़ाकर 9 रु० प्रतिदिन (1–4–82 से)		
6. बंधक मुक्ति	संख्या	200	114	57 00
7 हरिजन गिरिजन विकास				
अ–अनुसूचित जाति परिवार	,,	52,500	64,310	122 50
ब–अनुसूचित जनजाति ,,	,,	22,000	25,629	116 50
8 पीने का पानी				
	गांवों की संख्या	2,700	4,060	150 37
9 गरीब को छप्पर				
अ–भू खण्ड आवंटन	संख्या	50,000	1,15,160	230 32
ब–भवन निर्माण	,,	30,000	11,093	36 98
10 गन्दी बस्ती सुधार				
अ–पर्यावरण सुधार लाभान्वित व्यक्ति	संख्या	31,500	48,631	154 38
ब–आर्थिक रूप से पिछड़े व्यक्तियों को आवासन सुविधा	,,	7,000	1,692 नगर विकास न्यास 6 403 आवासन मण्डल 4,021 जयपुर विकास प्रा 173 08 12116	
11. गावों मे उजाला				
अ–ग्रामीण विद्युतीकरण	संख्या	1,000	1,070	107 00
ब–कुआ का ऊर्जीकरण	,,	10,000	10,485	104 85
12 जगल मे मगल				
अ–वृक्षारोपण	करोड	3 50	4 32	123 43
ब–गोबर गैस सयत्र	संख्या	5,000	2,404 सयत्र स्थापित 1 468 सयत्र निर्माणाधीन	48 08 29 36
13 छोटा परिवार				
नसबन्दी आपरेशन	लाख	2 15	1 66	77 21

सूत्र	इकाई	लक्ष्य	उपलब्धिया	उपलब्धियो का प्रतिशत
14. सब स्वस्थ				
अ–प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रो का अपग्रेडेशन	सख्या	7	7	100 00
ब–नये प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र	,,	2	2	100 00
स–नये उप केन्द्र	,,	250	250	100 00
द–टी०बी० केसेज	,,	14,000	29,461	210 43
य–कुष्ठ रोग	,,	3,000	2,296	76 53
र–नेत्र रोग	,,	17,000	33,544	197 31
15. मातृ शिशु कल्याण				
आई०सी०डी०एस० खड प्रारम्भ करना	,,	13	13	100 00
16. सब साक्षर				
अ–6 से 11 वर्ष की आयु के बालको का नामाकन	लाख	36 00	34 06	94 61
ब–11 से 14 वर्ष की आयु के बालको का नामाकन	,,	9 20	9 35	101 63
स–प्रौढ शिक्षा केन्द्र	सख्या	7 000	6 941	99 15
द–प्रौढ नामाकन	लाख	2 10	2 50	119 05
17. घर-घर राशन				
अ–उचित मूल्य की दुकानें शहरी व ग्रामीण क्षेत्रो मे	सख्या	1,950	1,879	96 36
ब–चल दुकानें	,,	50	42	84 00
18. ग्रामीण उद्योग धन्धे				
अ–लघु उद्योग इकाइया	सख्या	5,000	5,513	110 26
ब–ग्रामीण उद्योग इकाइया	,,	10,000	12,553	125 53
स–हाथ करघे	,,	1,900	1,826	96 10
द–कारीगरो को रोजगार	,,	10,000	14,757	147 57

परिशिष्ट–2

वर्ष 1983–84 के भौतिक लक्ष्य

सूत्र सख्या	कार्यक्रम	इकाई	भौतिक लक्ष्य 1983–84
1. अधिक सिचाई			
	सिचाई क्षमता मे वृद्धि		
	(क) नहरो द्वारा		

(1) राजस्थान नहर	हजार हैक्ट०	100 00
(2) अन्य	,,	54 90
(ख) कुओं द्वारा	,,	25 00

2. दलहन दुगुनी
तिलहन तिगुनी

(1) तिलहन—		
(क) क्षेत्रफल		
(1) खरीफ	लाख हैक्ट०	7 31
(2) रबी	,,	7 08
(ख) उपज—		
(क) क्षेत्रफल		
(1) खरीफ	लाख टन	2 81
(2) रबी	,,	5 46
(2) दलहन—		
(क) क्षेत्रफल		
(1) खरीफ	लाख हैक्ट०	20 50
(2) रबी	,,	18 88
(ख) उपज—		
(क) क्षेत्रफल		
(1) खरीफ	लाख टन	4 30
(2) रबी	,,	18 68

3 पिछड़े को पहले

(क) एकीकृत ग्रामीण विकास कार्यक्रम	लाख परिवार	1 416
(ख) राष्ट्रीय ग्रामीण विकास कार्यक्रम	लाख श्रम दिवस	62 40

4. भूमिहीनों को भूमि

सीलिंग भूमि का आवटन	हजार एकड	10 00

7. अनुसूचित जाति एव जन जाति कल्याण

(क) अनुसूचित जाति परिवार लाख परिवार
(1) एकीकृत ग्रामीण विकास

सूत्र संख्या	कार्यक्रम	इकाई	1983–84 भौतिक लक्ष्य
	कार्यक्रम से	,,	.0.50
	(2) अन्य	,,	0.62
	(ख) अनुसूचित जनजाति परिवार		
	(1) एकीकृत ग्रामीण विकास कार्यक्रम	लाख परिवार	0.28
	(2) अन्य	,,	0.28
8. पीने का पानी			
	ग्राम लाभान्वित	संख्या	2,700
9. गरीब को छप्पर			
	भू-खण्ड आवंटन एवं आवासीय सहायता		
	(क) भू-खण्ड आवंटन	हजार संख्या	50.00
	(ख) भवन निर्माण सहायता		
	(1) अनुदान	,,	13.33
	(2) हुडको सहायता प्राप्त	,,	18.64
10. गन्दी बस्ती सुधार			
	(1) गन्दी बस्ती की लाभान्वित जनसंख्या	,,	45.00
	(2) आर्थिक दृष्टि से कमजोर वर्ग को आवासन	,,	12.00
11. गांवों में उजाला			
	(1) विद्युतीकरण ग्राम	हजार संख्या	1,155
	(2) ऊर्जीकृत पम्प सैट्स	,,	11,000
12. जंगल में मंगल			
	(क) वृक्षारोपण	लाख संख्या	460
	(ख) बायोगैस सयंत्र	—	3,000
13. छोटा परिवार			
	स्टरलाइजेशन	लाख व्यक्ति	2.94
14. सब स्वस्थ			
	(1) प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों का उच्चीकरण	सख्या	7

(2) ग्रामीण स्वास्थ्य केन्द्रों की स्थापना	"	12
(3) उप केन्द्र	"	500
15. मातृ शिशु कल्याण		
आई०सी०डी०एस० ब्लाक	संख्या	8
16. सब साक्षर		
(क) नामांकन	लाखों में	
(1) 6–11 आयु वर्ग		39.60
(2) 11–14 आयु वर्ग	"	10.00
(ख) प्रौढ़ शिक्षा		
(1) केन्द्र	संख्या	10,000
(2) लाभान्वित व्यक्ति	लाखों में	3.00
17. घर-घर राशन		
राशन की दुकानें	संख्या	
(1) ग्रामीण क्षेत्र में		430
(2) शहरी क्षेत्र में	"	530
(3) चल दुकानें	"	10
18. ग्रामीण उद्योग धन्धे		
(1) छोटे उद्योगों का पंजीकरण	संख्या	5,000
(2) ग्रामीण उद्योगों का पंजीकरण	"	5,000
(3) हाथ करघे	"	1,600
(4) कारीगरों को रोजगार	"	10,000

योजना आयोग ने इस वर्ष पुनः बीस सूत्री कार्यक्रम की बेहतर क्रियान्विति के लिए राजस्थान की सराहना की है। उल्लेखनीय है कि गत वर्ष भी राज्य इस कार्यक्रम की क्रियान्विति में अन्य राज्यों से आगे रहा था।

योजना आयोग की जुलाई 1983 की रिपोर्ट के अनुसार बीस सूत्री कार्यक्रम के आठ सूत्रों की क्रियान्विति में राजस्थान को "बहुत अच्छे" वर्ग में रखा गया है जबकि अन्य तीन सूत्रों में राज्य सरकार के कार्य को 'अच्छा' बताया गया है।

जुलाई, 1983 की रिपोर्ट के अनुसार भूमिहीनों को भूमि, पेयजल, गन्दी बस्ती सुधार कार्यक्रम, आर्थिक दृष्टि से कमजोर वर्ग के लिए आवास, वृक्षारोपण कार्यक्रम, बायो गैस कार्यक्रम, मातृ शिशु कल्याण एवं ग्रामीण उद्योग सूत्रों में राज्य सरकार के कार्य को 'बहुत अच्छा' बताया गया है।

3

इसी प्रकार राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार कार्यक्रम, अनुसूचित जनजाति परिवार को सहायता एवं उचित मूल्य की दुकानें खोलने मे राज्य सरकार के कार्य को "अच्छा" बताया गया है।

राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार कार्यक्रम के तहत अप्रेल से जुलाई, 1983 तक ग्रामीणो को 10 लाख 85 हजार मानव दिवस का रोजगार सुलभ कराया गया है जबकि 5 हजार 136 एकड़ भूमि गरीबों में वितरित की गयी है।

इसी प्रकार अनुसूचित जाति एवं जनजाति के 14 हजार 932 परिवारो को लाभान्वित किया गया है। गन्दी बस्ती सुधार कार्यक्रम के तहत 11 हजार 705 लोगों को लाभान्वित करने के अतिरिक्त आर्थिक दृष्टि से कमजोर वर्गों को 2 हजार 697 मकान सुलभ कराये गए हैं।

वृक्षारोपण कार्यक्रम के तहत 2.64 करोड़ पेड़ लगाए गए हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में 729 गोबर गैस सयन्त्र लगाए गए हैं।

लोगो को आवश्यक वस्तुए उचित मूल्य मे सुलभ कराने के लिए राज्य मे जुलाई, 83 तक 151 उचित मूल्य की दुकानें खोली गयी हैं। राज्य के ग्रामीण इलाको मे 2 हजार 600 लघु व ग्रामीण उद्योग लगाए गए हैं।

कार्यक्रम के क्रियान्वयन में इस वर्ष राजस्थान प्रथम रहा। ... जिला
पहले प्रत्येक सूत्र के लक्ष्य निर्धारित कर तहसील स्तर तक बंटवारा कर दिया जाता है और लक्ष्यों की प्राप्ति के लिये अधिकारियों की जिम्मेदारी तय कर दी जाती है। हर स्तर पर जनप्रतिनिधियों, जिला परिषदों और पंचायत समितियों को बड़े पैमाने पर इस कार्यक्रम से जोड़ा गया।

हर माह राज्य-स्तर पर सघन मानिटरिंग कर कमियों को देखा जाता है और दूर किया जाता है।

राज्य विधानसभा के सदस्य

जिला	विधानसभा क्षेत्र	सदस्य का नाम	पार्टी
1	2	3	4
गंगानगर	भादरा	ज्ञानसिंह चौधरी	का (इ)
	नोहर	लक्ष्मीनारायण	,,
	टींबी	पीरूमल	,,
	गंगानगर	राधेश्याम	,,
	हनुमानगढ	आत्माराम	,,
	केसरीसिंहपुर	मनफूलाराम	,,
	करणपुर	जगतारसिंह	,,
	पीलीबंगा	जीवराजसिंह	,,
	सूरतगढ	सुनील विश्नोई	,,
	संगरिया	महेन्द्रसिंह	,,
	रायसिंहनगर	दूलाराम	,,
बीकानेर	लूणकरणसर	मालूराम	,,
	बीकानेर	बी डी कल्ला	,,
	नोखा	सुरजाराम	,,
	कोलायत	देवीसिंह भाटी	जनता (जेपी)
चूरू	चूरू	भालूखां	का (इ)
	सरदार शहर	केसरीचन्द बोहरा	(भाजपा)
	तारानगर	चन्दनमल बैद	का (इ)
	डूंगरगढ़	रेवतराम	,,
	रतनगढ	जयदेवप्रसाद इन्दौरिया	,,
	सुजानगढ	भवरलाल	,,
	सादुलपुर	दीपसिंह	,,
झुंझुनू	पिलानी	हजारीलाल शर्मा	(नि)
	झुंझुनू	शीशराम ओला	का (इ)
	सूरजगढ	सुन्दरलाल	,,

	गुढा	वीरेन्द्र प्रतापसिंह	(जपा)
	मण्डावा	रिक्त	
	नवलगढ़	भवरसिंह	का (इ)
	खेतड़ी	मालाराम	भाजपा
सीकर	फतेहपुर	त्रिलोकसिंह	भाकपा
	धोद	रामदेवसिंह	कां (इ)
	सीकर	घनश्यामसिंह तिवाड़ी	भाजपा
	नीम का थाना	मोहनलाल मोदी	का (इ)
	खण्डेला	महादेवसिंह	,,
	श्रीमाधोपुर	दीपेन्द्रसिंह	,,
	दाता रामगढ	नारायणसिंह	,,
	लक्ष्मणगढ	परसराम	,,
जयपुर	चौमू	तेजपाल यादव	,,
	जौहरी बाजार	तकीउद्दीन	,,
	किशनपोल	श्रीराम गोटेवाला	,
	बनीपार्क	शिवराम शर्मा	,,
	बस्सी	जगदीश तिवाड़ी	,,
	जमुवारामगढ़	भैरूलाल भारद्वाज	,,
	बैराठ	श्रीमती कमला	,,
	दूदू	छोगालाल कवरिया	,,
	फुलेरा	डॉ० हरिसिंह	,,
	लालसोट	रामसहाय मीणा	,,
	कोटपूतली	श्रीराम गुर्जर	,,
	जयपुर ग्रामीण	श्रीमती उजला अरोडा	भाजपा
	आमेर	कुमारी पुष्पा जैन	,,
	सागानेर	श्रीमती विद्या पाठक	,,
	सिकराय	रामकिशोर मीणा	,,
	बांदीकुई	नाथुसिंह	,,
	दौसा	राधेश्याम बशीवान	,,
	हवामहल	भवरलाल शर्मा	,,
	फागी	रामकवार बैरवा	जनता (जेपी)
अलवर	अलवर	जीतमल जैन	भाजपा
	राजगढ	समरथमल	,,
	बहरोड	सुजानसिंह	का (इ)
	बानसूर	बद्रीप्रसाद गुप्ता	,,

	तिजारा	दीन मोहम्मद	,,
	रामगढ	जयकृष्ण शर्मा	,,
	लछमणगढ	ईश्वरीलाल सैनी	,,
	थानागाजी	शोभाराम	,,
	खैरथल	सम्पतराम	का (अ)
	कठूमर	वाबूलाल	का. (इ)
	मुडावर	घासीराम यादव	,,
भरतपुर	नगर	मुराद खा	,,
	कुम्हेर	हरिसिंह	,,
	वैर	जगन्नाथ पहाडिया	,,
	राजाखेडा	प्रदुम्नसिंह	,,
	रूपवास	रामप्रसाद लड्ढा	,,
	बयाना	जगनाथसिंह	,,
	कामा	चाव खा	(लोद)
	नदबई	यदुनाथसिंह	,,
	डीग	राजा मानसिंह	(नि)
	भरतपुर	राजबहादुर	का अर्स
धौलपुर	वाडी	शिवसिंह	का (इ)
	धौलपुर	बनवारीलाल शर्मा	,,
सवाईमाधोपुर	महुआ	हरिसिंह गूर्जर	,,
	टोडाभीम	चेतराम मीणा	,,
	करौली	जनार्दनसिंह गहलोत	,,
	सवाई माधोपुर	हसराज शर्मा	भाजपा
	खडार	चुन्नीलाल	,,
	हिण्डौन	भरोसीलाल	लोकदल
	गगापुर	भरतलाल मीणा	का (इ)
	बामनवास	कुजीलाल मीणा	भाजपा
	सपोटरा	रगजी मीणा	,,
अजमेर	केकडी	तुलसीराम	का (इ)
	मसूदा	अयाज महाराज	,,
	ब्यावर	विष्णु प्रकाश वाजारी	,,
	किशनगढ	केसरीचन्द चौधरी	,,
	पुष्कर	श्रीमती सूरज मल्होत्रा	,,
	भिनाय	श्रीमती भगवतीदेवी	,,
	नसीराबाद	गोविन्दसिंह	,,

	अजमेर पूर्व	कैलाश मेघवाल	भाजपा
	अजमेर पश्चिम	भगवानदास शास्त्री	"
टोंक	निवाई	द्वारका प्रसाद	कां (इ)
	टोडारायसिंह	चतुर्भुज	"
	मालपुरा	सुरेन्द्रप्रसाद व्यास	"
	उणियारा	रामलाल	"
	टोंक	महावीरप्रसाद	भाजपा
बूंदी	बूंदी	बृजसुन्दर शर्मा	कां (इ)
	हिण्डोली	प्रभुलाल	"
	नैनवा	सूर्यकुमार	"
	पाटन	गोपाल पचेरवाल	जपा
कोटा	लाडपुरा	रामकिशन	कां (इ)
	कोटा	ललितकुमार चतुर्वेदी	भाजपा
	छबडा	भैरोंसिंह शेखावत	"
	दीगोद	दाऊदयाल जोशी	"
	अटरू	छीतरमल	"
	रामगंज मण्डी	हरीशकुमार	"
	बारां	रघुवीरसिंह कौशल	"
	किशनगंज	हरसहाय मीणा	कां (इ)
	पीपलदा	हीरालाल	भाजपा
झालावाड	झालरापाटन	अनंगकुमार	"
	खानपुर	पृथ्वीसिंह	कां (इ)
	पिडावा	श्योदानसिंह	"
	मनोहर थाना	भैरूलाल	"
	डग	बालचन्द	भाजपा
चित्तौडगढ	बेगूं	घनश्याम जैन	कां (इ)
	चित्तौडगढ	शोभराजमल	"
	प्रतापगढ	नन्दलाल मीणा	भाजपा
	गंगरार	अमरचन्द	कां (इ)
	कपासन	मोहनलाल जाट	"
	बडी सादडी	उदयलाल धाकड	"
	निम्बाहेडा	भूपालसिंह	भाजपा
बांसवाडा	कुशलगढ़	फतहसिंह	जपा
	दानपुर	बहादुरसिंह	,
	घाटोल	पूंजीलाल	कां (इ)

	बासवाड़ा	हरिदेव जोशी	„
	बागीडोरा	नाथूराम	„
डूंगरपुर	सागवाडा	श्रीमती कमला भील	„
	डूंगरपुर	हीरालाल डोडा	„
	चौरासी	गोविन्द ग्रामलिया	„
	श्रासपुर	महेन्द्र परमार	„
उदयपुर	लसाडिया	कमला भाई	„
	वल्लभ नगर	कमलेन्द्रसिंह	जपा
	मावली	हनुमानप्रसाद प्रभाकर	का (इ)
	राजसमन्द	नानालाल	„
	नाथद्वारा	सी पी जोशी	„
	उदयपुर	गुलाबचन्द कटारिया	भाजपा
	उदयपुर ग्रामीण	भैरूलाल मीणा	का (इ)
	सलुम्बर	नाथसिंह	„
	सराडा	देवेन्द्र कुमार	„
	खैरवाडा	रूपलाल परमार	„
	फलासिया	अलखाराम	„
	कुम्भलगढ	हीरालाल देवपुरा	„
	भीम	श्रीमती लक्ष्मी कुमारी चूडावत	„
	गोगुन्दा	मेघराज तावड	भाकपा
भीलवाडा जिला	माण्डल	बिहारीलाल पारीक	का (इ)
	माडलगढ	शिवचरण माथुर	„
	बनेडा	देवेन्द्रसिंह	„
	शाहपुरा	देवीलाल	„
	सहाडा	रामपाल उपाध्याय	„
	श्रासीन्द	नानूराम कुमावत	„
	भीलवाडा	बंसीलाल पटवा	भाजपा
	जहाजपुर	रतनलाल ताम्बी	का (इ)
पाली	पाली	माणकमल मेहता	„
	बाली	असलम खान	„
	रायपुर	सुखलाल सेणचा	„
	जैतारण	शिवदानसिंह	„
	देसूरी	दिनेशराय डागी	„
	खारची	भैरोंसिंह	„

	मोजत	माधोसिंह दीवान	,,
	सुमेरपुर	गोकुलचन्द शर्मा	,,
सिरोही	सिरोही	देवीसहाय	,,
	पिंडवाड़ा	सूरमाराम	,,
	रेंवदर	छोगाराम बाकोलिया	,,
जालोर	सांचोर	कनकराज मेहता	,,
	ग्राहोर	श्रीमती समन्दर कंवर	,,
	रानीवाडा	रतनाराम	,,
	जालोर	मागीलाल ग्रार्य	,,
	भीनमाल	सूरजपाल सिंह	,,
बाड़मेर	शिव	ग्रमीन खां	कां. इ.
	बाड़मेर	देवीदत्त तिवाडी	,,
	चौहटन	भगवानदास	,,
	सिवाना	धाराराम	,,
	पचपदरा	ग्रमरा राम	,,
	गुढामालानी	हेमाराम चौधरी	,,
जैसलमेर	जैसलमेर	चन्द्रवीरसिंह	भाजपा
जोधपुर	शेरगढ	खेतसिंह राठौड	कां. इ.
	जोधपुर	ग्रहमदबख्श सिंधी	,,
	फलौदी	पूनमचन्द विश्नोई	,,
	सरदारपुरा	मानसिंह देवड़ा	,,
	सूरसागर	नरपतराम	,,
	भोपालगढ	परसराम मदेरणा	,,
	लूनी	रामसिंह विश्नोई	,,
	बिलाडा	रामनारायण	,,
	ग्रोसिया	नरेन्द्रसिंहभाटी	,,
नागौर जिला	नागौर	महाराम चौधरी	लोकदल
	डीडवाना	उम्मेदसिंह	जनता पार्टी
	परबतसर	जेठमल बरबड	कां. इ.
,,	मकराना	ग्रब्दुल रहमान चौधरी	,,
,,	डेगाना	राम रघुनाथ चौधरी	,,
	मेडता	रामलाल	कां. ग्रर्स

लाडनूं	रामधन	कां. इ.
जायल	रामकरण	,,
मूंडवा	हरेन्द्र मिर्धा	,,
नावां	रामेश्वरलाल चौधरी	,,

लोकसभा सदस्य

1. निर्वाचन क्षेत्र	सदस्य का नाम	पार्टी
1. गंगानगर	बीरबलराम	का. इ
2. बीकानेर	मनफूलसिंह चौधरी	,,
3. अलवर	रामसिंह यादव	,,
4. भरतपुर	राजेश पाइलट	,,
5. बयाना	लालाराम केन	,,
6 सवाई माधोपुर	रामकुमार मीणा	,,
7 टोंक	बनवारीलाल बैरवा	,,
8. अजमेर	आचार्य भगवान देव	,,
9. चित्तौड	श्रीमती निर्मला सिंह	,,
10 बांसवाडा	भीखा भाई	,,
11 सलुम्बर	जयनारायण रोत	,,
12. उदयपुर	दीनबंधु वर्मा	,,
13 भीलवाडा	गिरधारीलाल व्यास	,,
14. पाली	मूलचन्दडागा	,,
15 जालौर	बिरदाराम	,,
16. बाडमेर	वृद्धिचन्द जैन	,,
17. जोधपुर	अशोक गहलोत	,,
18. दौसा	नवलकिशोर शर्मा	,,
19. चूरू	दौलतराम सारण	,,
20 सीकर	कुम्भाराम आर्य	लोकदल
21. झुंझुनूं	भीमसिंह मंडावा	जनता पार्टी
22 जयपुर	सतीशचन्द्र अग्रवाल	भाजपा
23 कोटा	कृष्णकुमार गोयल	,,
24 झालावाड	चतुर्भुज पटेल	,,
25. नागौर	नाथूराम मिर्धा	का. अर्स.

राज्य सभा सदस्य

1	श्री भीमराज चौधरी	का इ
2	रामनिवास मिर्धा	,,
3	इसरारउलहक	,,
4	भुवनेश चतुर्वेदी	,,
5	मोहम्मद उस्मान आरिफ	,,
6	धूलेश्वर मीणा	,,
7	जसवन्तसिंह	भाजपा
8	आर आर मुरमूरा	जनता
9	हरिशंकर भाभडा	भाजपा
10	नत्थीसिंह	कां इ

राज्य मन्त्रिमण्डल

मत्री और उनके विभाग—

1 **श्री शिवचरण माथुर (मुख्यमन्त्री)**—गृह, उद्योग, आयोजना, भ्रष्टाचार निरोधक, सामान्य प्रशासन, कार्मिक, प्रशासनिक सुधार, जन अभियोग निराकरण और आर्थिक सांख्यिकी, राजनैतिक, एकीकृत ग्रामीण विकास एव विशिष्ट योजना सगठन विभाग

2. **श्री परसराम मदेरणा**—सिंचाई, जन स्वास्थ्य अभियान्त्रिकी और भूजल विभाग।

3 **श्री चन्दनमल बैद**—राजस्थान नहर परियोजना व उपनिवेशन, सिंचित क्षेत्र विकास।

4. **श्री ब्रज सुन्दर शर्मा**—वित्त, वृक्षारोपण और आबकारी विभाग।

5. **श्री हीरालाल देवपुरा**—राजस्व व भूमि सुधार, खनिज और श्रम विभाग

6. **श्री खेतसिंह राठौड**—चिकित्सा एव स्वास्थ्य परिवार कल्याण और ससदीय मामलात विभाग।

7. **श्रीमती कमला**—प्राथमिक व सैकण्डरी, शिक्षा, भाषा, रोजगार, तकनीकी शिक्षा और ऊर्जा।

8. **श्री दूलाराम**—समाज कल्याण, जनजातीय क्षेत्रीय विकास व आवासन विभाग

9. **श्री अहमद बख्श सिंधी**—विधि एव न्याय, निर्वाचन, राजकीय उपक्रम, वक्फ और भाषाई अल्प सख्यक

राज्यमन्त्री

1 श्री जयकृष्ण शर्मा—यातायात विभाग, देवस्थान विभाग, राजस्व एवं भूमि सुधार, खनिज

2 श्री प्रद्युम्नसिंह—स्वायत्त शासन, नगरीय आयोजना, सामान्य प्रशासन, वित्त एवं आयोजना

3 श्री श्रीराम गोटेवाला—पशुपालन, डेयरी, खादी व ग्रामोद्योग करारोपण, एवं आबकारी विभाग।

4. श्री दिनेशराय डागी—आयुर्वेद एवं राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार कार्यक्रम, सिंचाई।

5 श्री घासीराम यादव—खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति, नागरिक सुरक्षा, राजस्थान नहर परियोजना, उपनिवेशन एवं सिंचित क्षेत्रीय विकास।

6 श्री चेतराम मीणा—सावजनिक निर्माण विभाग बाढ व अकाल राहत

7. श्री गोविन्दसिंह गूजर—वन विभाग पर्यावरण गृह व भ्रष्टाचार निरोधक विभाग।

8 श्री शीशराम ओला—पचायत एवं सामुदायिक विकास, सैनिक कल्याण, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य

9 श्री रामकिशन वर्मा—खेल विभाग, भेड व ऊन तथा मत्स्य।

10 श्री देवेन्द्रसिंह—कृषि (सी ए डी छोडकर) जलदाय और एकीकृत ग्रामीण विकास विभाग।

11 श्री बुलाकीदास कल्ला—पर्यटन, कला संस्कृति व पुरातत्व तथा प्राथमिक शिक्षा।

उपमन्त्री

1 श्री गोविंद आमलिया—आयोजना, आर्थिक व सांख्यिकी, आदिवासी क्षेत्र विकास विभाग।

2 श्रीमती कमला भील—बाढ व अकाल राहत, चिकित्सा व स्वास्थ्य तथा स्टेट मोटर गैरेज।

3 श्री जगतारसिंह—सिंचाई, उपनिवेशन, उद्योग।

4 श्री छोगालाल बाकोलिया—ऊर्जा, समाज कल्याण और भूजल विभाग।

इसके अलावा हाल ही एक केबिनेट मंत्री श्री हनुमान प्रसाद प्रभाकर तथा

एक राज्य मंत्री श्री गुरेन्द्र व्यास से इस्तीफे मांग कर उन्हें हटा दिया गया था तथा एक राज्य मन्त्री श्री नरेन्द्रसिंह भाटी को बर्खास्त कर दिया गया था।

इनमें से हनुमान प्रसाद प्रभाकर के पास बाढ़ व अकाल राहत, सहकारिता व स्टेट मोटर गैरेज विभाग थे तथा राज्य मन्त्री श्री नरेन्द्रसिंह भाटी के पास पुनर्वास जेल और लेखन व मुद्रण सामग्री तथा श्री गुरेन्द्र व्यास जन सम्पर्क मन्त्री, कालेज व विश्वविद्यालय शिक्षा, विधि व राजकीय उपक्रम विभाग थे।

अब ये सभी विभाग मुख्यमन्त्री के पास है पर उन्होंने सहयोग के लिए ये विभाग राज्य-मन्त्रियों में वितरित कर रखे हैं।

अरविन्द
सामान्य ज्ञान दिग्दर्शन

(सम्भावित वस्तुनिष्ठ प्रश्नो सहित)

सिविल सर्विसेज, आई एफ एस, पी सी एस
(यू पी, एम पी, बिहार आदि) आर ए एस,
आर टी एस, असिस्टेंट ग्रेड, बैंक
प्रोबेशनरी आफीसर परीक्षा
आदि के लिए उपयोगी
पुस्तक

लेखक
रामपाल सिह गौड
भू पू प्राध्यापक, राजस्थान विश्व विद्यालय एव
गोरखपुर विश्वविद्यालय

प्रकाशक
अरविन्द बुक हाऊस
प्रेम प्रकाश के सामने, चौडा रास्ता, जयपुर